



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 269।

नई दिल्ली, शुक्रवार, अक्टूबर 8, 2010/आश्विन 16, 1932

No. 269।

NEW DELHI, FRIDAY, OCTOBER 8, 2010/ASVINA 16, 1932

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 8 अक्टूबर, 2010

अंतिम जांच परिणाम

विषय : जापान तथा थार्डलैंड के मूल के अथवा वहां से निर्यातित फेनोल के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच प्रकटन विवरण।

सं. 14/27/2009-डीजीएडी.—1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन और संग्रहण तथा क्षति-निर्धारण) नियम, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियम कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए ;

जांच की शुरुआत

१. निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) को समय-समय पर यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन और संग्रहण तथा क्षति-निर्धारण) नियम, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियम कहा गया है) के व्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग की ओर से मै. हिन्दुस्तान आर्गेनिक्स कैमिकल्स लि. मुंबई से एक लिखित आवेदन प्राप्त हुआ है, जो मै. एस आई गुप्त इंडिया लि. मुंबई (जिसे पहले सेनेकटेडी हरदीलिया लि. के नाम से जाना जाता था) द्वारा रामर्थित है तथा जिसमें जापान और थार्डलैंड (जिन्हें एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित फेनोल (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया है।

3. घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सकारात्मक साक्ष्य के आधार पर संतुष्ट होते हुए प्राधिकारी ने भारत के राजपत्र, असाधारण में दिनांक 11 अगस्त, 2009 को प्रकाशित अधिसूचना सं. 14/27/2009-डी जी ए डी द्वारा जापान और थाइलैंड के मूल के अथवा वहां से निर्यातित फेनोल के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच शुरू की थी ।

प्रक्रिया:

4. निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई हैः

- i. प्राधिकारी ने संबंधित नियम 5 के उप नियम (5) के अनुसार जांच की शुरूआत करने से पहले याचिकाकर्ता द्वारा पाटन संबंधी आवेदन की पाप्ति के बारे में भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों/प्रतिनिधियों को सूचित किया था;
- ii. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों, आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पतों के अनुसार संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और घरेलू उद्योग को दिनांक 11.8.2009 को जांच संबंधी अधिसूचना की प्रतियां भेजी थीं और उनसे जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना की तारीख से 40 दिनों के भीतर लिखित में उनके विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया गया था ।
- iii. प्राधिकारी ने संबंधित नियम के नियम 6(3) के अनुसार ज्ञात निर्यातकों और संबद्ध देश के दूतावासों को आवेदन के अगोपनीय अंश की एक-एक प्रति उपलब्ध कराई थी ।
- iv. भारत स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को नियम 6(2) के अनुसार जांच की शुरूआत के बारे में सूचित किया गया था और उनसे उनके देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय सीमा के भीतर प्रश्नावली का जवाब देने की सलाह देने का अनुरोध किया गया था । निर्यातकों को भेजे गए पत्र और प्रश्नावली की एक-एक प्रति निर्यातकों के नामों और उनके पतों के साथ दूतावासों को भी भेजी गई थी ।
- v. प्राधिकारी ने नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देशों के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों से संगत सूचना प्राप्त करने के लिए प्रश्नावलियां भेजी थीं :

पीटीटी फेनोल कंपनी लि. (पीपीसीएल) 123, सन टावर बिल्डिंग, बी, 36वां तल, विभावाड़ी, रेंगसिट रोड, चौम्फोन, चाटूचक, बैंकॉक - 10900	चीबा फेनोल कंपनी लि. सिओडोम सिटी सेंटर, 1-5-2, हीगासीसिम्यासी, जापान
---	---

मित्सुबिसी कैमिकल
14-1 टोक्यो 108-0014, जापान सिबा
4-चोम, मिनाटो-कू

vi. उपर्युक्त अधिसूचना के जवाब में निम्नलिखित निर्यातकों/उत्पादकों ने जाच शुरुआत का उत्तर दिया है:

हितबद्ध पक्षकार का नाम	देश
पीटीटी फेनोल कंपनी लि., उत्पादक और निर्यातक	थाईलैंड
मित्सुई एंड कंपनी लि. ("एम बी के") जापान, निर्यातक	जापान
मै. मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पेसिफिक), पीटीई लि., सिंगापुर, निर्यातक	सिंगापुर
मित्सुबिसी कैमिकल कार्पो. ("ए. बी. सी"),	जापान
सुमितोमो कार्पोरेशन, निर्यातक	जापान
सुमितोमो कार्पोरेशन एशिया पी टी ई लि.	सिंगापुर
मित्सुई कैमिकल, आई एन सी, उत्पादक	जापान

vii. नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने के लिए भारत में निम्नलिखित ज्ञात आयातकों और संबद्ध देश के उपभोक्ताओं को प्रश्नावली भेजी गई थी। तथापि, संबद्ध देश के किसी भी आयातक से प्रश्नावली का कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है।

मै. सी.जे.शाह एंड कंपनी, 105, बजाज भवन, 10वीं मंजिल, नरीमन प्लाइंट, मुंबई- 400021	मै. हरेश कुमार एंड कंपनी 1212, मार्कर चेम्बर्स, 5, जमनलाल बजाज रोड, नरीमन प्लाइंट, मुंबई-400021.
मै. पी सी एल इंडस्ट्रीज एम-105, कनॉट प्लेस नई दिल्ली-110001	मै. कांतिलाल मनीलाल एंड कंपनी 16, प्रिन्सेज स्ट्रीट मुंबई-400003.
सोनकमल इंटरप्राइजेज, 10, देव दर्शन अपार्टमेंट, ओल्ड नागरदास रोड, अंधेरी (ईस्ट) मुंबई-400069	मै. खेतान ब्रदर्स, सी-17, दलिया इंडस्ट्रियल एरिया ऑफ न्यू लिंक रोड, लक्ष्मी इंडस्ट्रियल इस्टेट के सामने अंधेरी (वेस्ट) मुंबई-400058
मै. शुभम डाइज एंड कैमिकल्स लि., 2/26, रूपनगर दिल्ली- दिल्ली 110007	एक्रॉन इंटरप्राइजेज, प्लॉट नं. 218-219/3, जी.आई.डी.सी., नरोदा, अहमदाबाद, पिन कोड- 382330, गुजरात
मै. नाइकनेवेयर कैमिकल्स लि. 1, विद्या भवन, 121, केलस्कर रोड, शिवाजी पार्क, दादर (वेस्ट) मुंबई (महाराष्ट्र)	मै. पारस डाइज एंड कैमिकल्स, 12वीं मंजिल, विद्या बिल्डिंग, 17 बाराखंभा रोड, नई दिल्ली-110001
मै. टोरेंट फार्माच्युटीकल्स लि. आश्रम रोड, अहमदाबाद रोड- 380009	मै. यूनाइटेड फॉस्फोरस लि., ऐडीमनी ट्रेस, 167, डॉ. एनी बेसेंट रोड, वर्ली,

गुजरात	मुंबई -400 018
मै. रेजिन एंड प्लास्टिक लि. क्रॉस रोड बी, मुंबई- 400093	मै. कैलाश पॉलीमर्स, 60 कृष्णा मार्केट, कालकाजी, नई दिल्ली
मै. सेंचुरियन मैटलिज प्रा.लि., 6/221, देवधर रोड, मतंगा- 400019-मुंबई	मै. वंडर लेमिनेटीज प्रा.लि., 14, भाषा डॉयमंड हार्बर रोड, कोलकाता
मै. मेघदेव इंटरप्राइजेज, पी.के. हाऊस, एच/एच एम.जे. लाइब्रेरी, एलिसब्रिज अहमदाबाद	मै. सतगुरु इंटरनेशनल 204-डी, पॉकेट-12, जसोला विहार, अपोलो हॉस्पिटल, नई दिल्ली
मै. हाई पॉलीमर लेब्स लि., 803, विशाल भवन, 95, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली	मै. रेनबो कलर्स एंड कैमिकल्स 14/ए, भाविक कॉम्प्लैक्स, घोड डोड रोड, सूरत, गुजरात
मै. ब्लेच मार्किटिंग प्रा.लि., 120, ब्लेच चेम कंपाउंड नियर चंदोला, अहमदाबाद	मै. करमेन इंटरनेशनल (प्रा.) लि. 31ए/20, एनपी, सिडको इंटरनेशनल इस्टेट, चेन्नई
मै. कृष्ण एंटीऑक्सीडेंट्स प्रा.लि., लॉप्स मेनर, आई सी कॉलोनी, चंद्रा हाउस के नजदीक, मुंबई	मै. एन जी पी इंडस्ट्रीज लि. एम-13, पुंज हाऊस, नई दिल्ली
मै. फॉर्मसन फार्मास्यूटीकल गुजरात लि. 5वीं मंलिज, कॉर्मस सेंटर, सायाजी गंज, बड़ौदा	मै. इंडिया ग्लाइकल्स लि., सी-124, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस- । , नई दिल्ली
मै. सिंह प्लास्टिसीसर्स एंड रेजिन्स (आई) प्रा. बी- 316, तीसरी मंजिल, सोमदत्त चेम्बर्स-1, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली	मै. नेशनल प्लाइवुड इंडस्ट्रीज लि., 5 फेन्सी लेन, 700001 कोलकाता
कुंदन राइस मिल लि., डी-17, सेंचुरी मार्केट, प्रशान्त विहार, दिल्ली-110085	

viii. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्षों के अगोपनीय अंश को हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु एक सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया;

ix. वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय, (डीसीआईएंडएस) से पिछले तीन वर्षों और जांच अवधि के लिए संबद्ध वस्तु के आयात संबंधी ब्यौरों की व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया था ।

x. आवेदक द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के आधार पर सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों (जीएएपी) के अनुसार भारत में संबद्ध वस्तु की इष्टतम उत्पादन लागत और उसे बनाने और बेचने की लागत ज्ञात की गई थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।

xii. यह जांच 1 अक्टूबर, 2008 से 30 जून, 2009 (9 महीने) (जांच अवधि) तक की अवधि के दौरान की गई थी। क्षति संबंधी विश्लेषण के संबंध में प्रवृत्तियों की जांच में अप्रैल, 2006-मार्च, 2007, अप्रैल, 2007-मार्च, 2008 और अप्रैल, 2008-मार्च, 2009 तथा जांच अवधि शामिल है।

xiii. प्राधिकारी ने उक्त अधिनियम और उक्त पाटनरोधी नियमावली को ध्यान में रखते हुए दिनांक 3 फरवरी, 2010 की अधिसूचना सं. 14/27/2009-डीजीएडी द्वारा संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की थी और हितबद्ध पक्षकारों से इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर लिखित में प्राधिकारी को उनके विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया था। तत्पश्चात 8 जून को एक शुद्धिपत्र जारी किया गया था।

xiv. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(6) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों को दिनांक 18 मार्च, 2010 को हुई सार्वजनिक सुनवाई में अपने विचारों को मौखिक रूप से प्रस्तुत करने का अवसर भी प्रदान किया था। उन पक्षकारों, जिन्होंने सार्वजनिक सुनवाई में अपने विचार प्रस्तुत किए, से मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों से लिखित अनुरोध में प्रस्तुत करने का आग्रह किया गया था। हितबद्ध पक्षकारों को विपक्षी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत विचारों के संबंध में प्रत्युत्तर अनुरोध प्रस्तुत करने का अवसर दिया गया था।

xv. हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित अनुरोधों/प्रत्युत्तरों में दिए गए तर्कों पर इस अंतिम जांच परिणाम में जहां संगत पाया गया, विचार किया गया है।

xvi. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क दिनांक 19 अप्रैल, 2010 की सी.शु. अधिसूचना सं. 53/2010-सी.शु. द्वारा लगाया गया था।

xvii. पाटनरोधी नियमावली के नियम 16 के अनुसार प्राधिकारी द्वारा विचार किए गए अनिवार्य तथ्यों को ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट किया जा रहा है और उन पर प्राप्त टिप्पणियों के संबंध में अतिम जांच परिणामों में विधिवत ढंग से विचार किय जाएगा।

xviii. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना की गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में जांच की गई थी। इस संबंध में संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने गोपनीयता के दावे को जहां आवश्यक हो, स्वीकार किया है और ऐसी सूचना को गोपनीय माना गया है और इसका प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया गया है। जहां भी संभव हो, गोपनीय आधार पर सूचना देने वाले पक्षकारों को गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का पर्याप्त अगोपनीय अंश प्रस्तुत करने का निर्देश दिया गया था।

xix. जहां कहीं भी किसी हितबद्ध पक्षकार ने सूचना देने से मना किया या अन्यथा वर्तमान जांच की प्रक्रिया के दौरान आवश्यक सूचना उपलब्ध नहीं कराई है, या जांच में भारी बाधा डाली है, वहां प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर इस जांच परिणाम को दर्ज किया है।

xix. इस अधिसूचना में *** चिन्ह आवेदकों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई और नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा गोपनीय मानी गई सूचना को दर्शाता है ।

विचाराधीन उत्पाद और घरेलू समान वस्तु

5. विचाराधीन उत्पाद फेनोल एक कार्बनिक रसायन है जिसे कार्बोलिक अम्ल के रूप में भी जाना जाता है और इसका उपयोग फेनोल फॉमेलिहाइड रेजिन्स, लेमिनेट्रस, प्लाईवुड, पार्टीकल बोर्डस, बिसफेनोल-ए, अल्काइल फेनोल्स, भेषजों, डी फिनाइल ऑक्साइड और निम्नवर्ती रसायनों के विनिर्माण में किया जाता है । फेनोल को सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय-29 और 27 के अंतर्गत क्रमशः उप-शीर्ष 29071110, 27079900 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है । तथापि, यह सीमाशुल्क वर्गीकरण मात्र सांकेतिक है और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है ।

6. यह एक आधारभूत कार्बनिक रसायन है, जिसका विपणन दो ग्रेडों अर्थात क्रिस्टलाइन और हाइड्रेटेड रूप में किया जाता है । इन दोनों ग्रेडों को फेनोल की प्रवाह संबंधी विशेषताओं के आधार पर भिन्न-भिन्न किया जाता है । इसका विपणन दो रूपों-खुले/बल्क या पैकड में किया जाता है ।

आयातकों, उपभोक्ताओं, निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

7. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के बारे में किसी भी आयातक, उपभोक्ता, निर्यातक और अन्य हितबद्ध पक्षकार ने कोई टिप्पणी या अनुरोध नहीं किया है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

8. समान वस्तु के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) में निम्नानुसार उल्लेख है :-

"समान वस्तु" का अर्थ एक ऐसी वस्तु है जो भारत में पाटन के लिए जांच के अधीन वस्तु के समान हो या प्रत्येक दृष्टि से उसके जैसी हो अथवा ऐसी वस्तु के अभाव में कोई अन्य ऐसी वस्तु जो यद्यपि प्रत्येक दृष्टि से समान न हो तब भी उसमें जांचाधीन वस्तु से अत्यधिक मिलती-जुलती विशेषताएं हो;

9. निर्यातकों द्वारा भारतीय बाजार में बेचे जा रहे उत्पाद और घरेलू उद्योग द्वारा बेचे गए उत्पाद के बीच किसी संभावित अंतर के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातकों द्वारा इस संबंध में कोई प्रश्न नहीं उठाया गया है कि इन दोनों उत्पादों में कोई अंतर है । रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना पर विचार करने के बाद प्राधिकारी यह मानने का प्रस्ताव करते हैं कि संबद्ध देशों से निर्यातित विचाराधीन उत्पाद और भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद के बीच कोई ज्ञात अंतर नहीं है । घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद भौतिक और रासायनिक

विशेषताओं, कार्य और प्रणालों, उत्पाद विर्निदेशनों, वितरण और विपणन तथा वस्तुओं के ट्रैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं की दृष्टि से आयातित संबद्ध उत्पाद से तुलनीय है। ये दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ता इनका एक-दूसरे के स्थान पर उपयोग करते हैं।

10. इस प्रकार प्राधिकारी मानते हैं कि आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद पाटनरोधी नियमावली के अनुसार संबद्ध विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तु है।

घरेलू उद्योग का कार्यक्षेत्र और स्थिति

11. यह याचिका मै. हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक कैमिकल्स लि., मुंबई द्वारा मै. एस आई ग्रुप इंडिया लि., मुंबई (पूर्ववर्ती सेनेकटेडी हरदेलिया लि.) के समर्थन के साथ प्रस्तुत की गई है।

घरेलू उद्योग के विचार

12. घरेलू उद्योग की स्थिति के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं :-

- i. यह याचिका मै. हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक कैमिकल लि., मुंबई द्वारा सातवीं शताब्दी की आई भी और मै. एस आई द्वारा इंडिया लि., मुंबई (जिन्हें पहले सेनेकटेडी हरदेलिया लि. के नाम से जाना जाता था) ने इसका समर्थन किया है। देश में इस उत्पाद के कोई अन्य द्वारा उत्पादक नहीं हैं, अतः नियमावली 1995 के नियम 2(ख) के अन्तर्गत मै. हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक कैमिकल लि., घरेलू उद्योग है।
- ii. यांत्रिक विकासों का उत्पादन आरतीय उत्पादन का एक बड़ा विकास है और इसके विकास के अर्थ के भीतर याचिकार्ता को "घरेलू उद्योग" का एक अवृत्ति दिया जाए।

आयातक, उपभोक्ता, निर्यातक और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

13. घरेलू उद्योग की स्थिति के संबंध में किसी भी आयातक, उपभोक्ता, निर्यातक और अन्य हितबद्ध पक्षकार ने कोई टिप्पणी या अनुरोध नहीं किया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

14. घरेलू उद्योग की स्थिति के संबंध में नियम 2(ख) में निम्नानुसार उल्लेख है :-

"घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा उन उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, परंतु जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं या वे स्वयं

उसके आयातक होते हैं तो ऐसे मामले में ऐसे उत्पादकों को धरेलू उद्योग का भाग नहीं माना जाएगा ।

15. यह याचिका मै. हिन्दुस्तान आर्गेनिक कैमिकल्स लिमिटेड (एच ओ सी एल) द्वारा दायर की गई है और मै. एस.आई. ग्रुप - इंडिया लिमिटेड, मुंबई (पूर्ववर्ती सेनेकटेडी हरदेलिया लिमिटेड) द्वारा समर्थन किया गया है । देश में इस उत्पादन के अन्य कोई ज्ञात उत्पादक नहीं हैं । प्राधिकारी ने समर्थनकर्ता से सूचना मांगी, जो यद्यपि आंकड़े प्रस्तुत करने में असफल रहा । मै. हिन्दुस्तान आर्गेनिक कैमिकल्स लिमिटेड, जो भारत में संबद्ध वस्तु का प्रमुख उत्पादक है, भारतीय उत्पादन के 50% से अधिक का उत्पादन करता है और इसलिए पाटनरोधी नियमों के अंतर्गत धरेलू उद्योग है । प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के प्रतिनिधिक रूप में मान लिया है ।

अन्य मुद्दे

धरेलू उद्योग के विचार

16. मौखिक सुनवाई के बाद धरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं :-

- i. निर्दिष्ट प्राधिकारी को श्रृंखला पर ध्यान नहीं देते हुए भारत को निर्यात के लिए उत्पादक द्वारा बेची गई सभी वस्तुओं हेतु समग्र रूप से पाटन और क्षति मार्जिन निर्धारित करना चाहिए । एक देश से अधिक के मूल से आपूर्ति की गई वस्तुओं के लिए व्यापारियों के संबंध में शुल्क की मात्रा उत्पादकों पर विचार नहीं करते हुए भारत को की गई भारित औसत बिक्री के आधार पर होनी चाहिए ।
- ii. निर्दिष्ट प्राधिकारी को उत्पादक और उसकी समस्त बिक्री श्रृंखला के लिए एक भारित औसत शुल्क देना चाहिए ।
- iii. जांच अवधि के दौरान बाजार काफी अस्थिर रहा था और उत्पादक भारतीय बाजार में काफी कम कीमतों पर उत्पाद का निर्यात कर रहे थे जिससे धरेलू उद्योग को काफी अधिक क्षति हुई है ।
- iv. उत्पादकों द्वारा आबद्ध रूप से या संबंधित पक्षकारों से ली गई कच्ची सामग्री के मूल्यांकन के लिए अपनाई जाने वाली पद्धति के संबंध में प्रश्नावली के अगोपनीय अंश में कोई सूचना नहीं दी गई है । इस प्रकार पाटनरोधी नियमावली के अनुसार उत्पादन लागत निर्धारित नहीं की जा सकती है ।
- v. निर्यातक के सामान्य मूल्य के निर्धारणार्थ निर्यातक द्वारा की गई संविदा बिक्रियों को बाहर नहीं रखा जा सकता है क्योंकि यह एक सामान्य व्यापारिक प्रक्रिया है और एक विशेष बाजार स्थिति नहीं है ।
- vi. चीन ने जापान, कोरिया, अमरीका और ताइवान पर निर्णायक समीक्षा के बाद शुल्क लगाया है । इससे स्पष्ट रूप से भारतीय उत्पादकों को और अधिक क्षति की संभावना साबित होती है ।

vii. अगोपनीय अंश में परिशिष्टों का सूचीबद्ध अंश नहीं है और इस प्रकार यह प्रक्रियात्मक अपेक्षा से असंगत हैं ।

निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

17. मै. मित्सुई कैमिकल्स अई एन सी, जापान ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :-

- घरेलू उद्योग द्वारा दायर याचिका का अगोपनीय अंश बिल्कुल अधूरा है ।
- घरेलू उद्योग भिन्न-भिन्न स्रोतों से संबद्ध वस्तु के आयात आंकड़ों का उपभोग करता है और उन्हें हितबद्ध पक्षकारों से गोपनीय रखा गया है ।
- प्राधिकारी द्वारा चुनी गई 9 महीने की अवधि क्षति और पाटित आयातों के प्रभाव का विश्लेषण करने के अपेक्षाकृत काफी अल्प अवधि है । इसे कम से कम एक वर्ष होना चाहिए । प्राधिकारी ने 9 महीने की अवधि चुनने के लिए जांच शुरूआत अधिसूचना और प्रारंभिक जांच परिणाम अधिसूचना में कोई तर्क या कारण नहीं बताया है ।
- निर्यात कीमत, पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन मासिक आधार पर निर्धारित किया जाना चाहिए क्योंकि जांच अवधि के दौरान पैट्रोकैमिकल उत्पाद की कीमतों में काफी उत्तर-चढ़ाव हुआ है ।
- निर्यातक का सामान्य मूल्य मौके पर कीमतों पर और न कि संविदा कीमतों के आधार पर निर्धारित किया जाना चाहिए ।
- अनंतिम शुल्कों के लिए प्राधिकारी द्वारा कोई औचित्य नहीं बताया गया है ।

18. पी टी पी फेनोल कंपनी लि., थाइलैंड और मै. मित्सुई एंड कंपनी जापान और मै. मित्सुई एंड कंपनी पी टी ई लि., सिंगापुर ने निम्नानुसार अनुरोध किया है :-

- पाटन मार्जिन प्रत्येक निर्यातक/निर्यात श्रृंखला के लिए निर्धारित किया जाना चाहिए ।
- प्राधिकारी द्वारा मात्रात्मक विश्लेषण के लिए प्रयुक्त डी जी सी आई एंड एस के सौदावार आयात आंकड़ों में अग्रिम लाइसेंस के अंतर्गत एस आई ग्रुप द्वारा किए गए आयात शामिल हो सकते हैं इसलिए उन्हें कुल आयातों से बाहर रखा जाना चाहिए ।
- संबद्ध देशों से आयातों में वृद्धि का कारण पहले से पाटनरोधी शुल्क लागू करने वाले देशों से निर्यातों का दबाव रहा है ।
- भारत में आयात अनिवार्य हैं क्योंकि यहां मांग और आपूर्ति के बीच अंतर है । भारतीय उत्पादक देश की मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं हैं ।

19. मै. सुमितोमो कार्पो., जापान और मै. सुमितोमो कार्पो. एशिया पी टी ई लि., सिंगापुर ने निम्नानुसार अनुरोध किया है :-

1. बाद के आंकड़ों की उपलब्धता के बिना जांच अवधि को बढ़ाया जाना पाटनरोधी नियमावली के नियम (5) के उल्लंघन को दर्शाता है ।
2. सुमित्रोमो को असहयोगी निर्यातिक नहीं माना जा सकता है क्योंकि श्रृंखला में शामिल अन्य पक्षकारों ने उत्तर नहीं दिया है । निर्यात कीमत इस कंपनी द्वारा भारत को किए गए निर्यातों से निर्धारित की जा सकती है ।

मे. पी टी टी फेनोल कंपनी लि.

20. उन्होंने 2008-09 की आर्थित मंदी और जांच अवधि के दौरान उत्पाद की बिक्रियों के संबंध में कंपनी के सामने आ रही विभिन्न समस्याओं के प्रभाव पर जोर दिया है । उन्होंने इस तथ्य को प्रदर्शित करने के लिए कीमत निर्धारण संबंधी साक्ष्य भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है कि फेनोल के स्तप्तादकों ने वैश्यिक रूप से हाल की आर्थिक मंदी का प्रभाव महसूस किया है । यह दावा किया गया कि कोरियाई, ताइवानी, जापानी कंपनियों वेल कम मांग के कारण विशिष्ट इकाइयों को बंद करना पड़ा था और यूरोप और उत्तरी अमरीका, दोनों की कंपनियों को मालसूली संबंधी भारी घाटा उठाना पड़ा था । इसके अलावा, कंपनी ने आपूर्ति के दौरान उनके सामने आई विभिन्न समस्याओं का भी हवाला दिया है, जिनके परिणामस्वरूप अंततः वे इस उत्पाद को आर्थिक कीमत पर बेचने में अक्षम हो गए थे ।

प्राधिकारी हांसा जांच

21. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए विभिन्न अनुरोधों को नोट किया है और एकटन विकल्प में इन पर उचित ढंग से ध्यान दिया है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि 9 माह की अवधि के काफी कम होने के बारे में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा कोई न्यायसंगत कारण प्रस्तुत नहीं किया गया है । प्राधिकारी कम से कम 6 माह और अधिक से अधिक 18 माह के बीच की जांच अवधि चुनने की परिपाटी को लगातार अपना रहे हैं और वर्तमान जांच में भी इसी अद्वाल का शालन किया गया है । प्राधिकारी ने प्राधिकारी के पास उपलब्ध वास्तविक आंकड़ों के आधार पर सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत निर्धारित की है, जिन्हें विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों के माध्यम से विधिवत ढंग से सत्यापित करके अपनाया गया है । जहां तक मात्रात्मक विश्लेषण के अग्रिम लाइसेंस के अंतर्गत आयातों को बाहर रखने का संबंध है, प्राधिकारी ने ऐसे सभी मामलों में पहले अपनाई गई प्रक्रिया का पालन किया है । मांग और आपूर्ति में अंतर के संबंध में पाटनरोधी उपायों में आयातों को प्रतिबंधित करने की व्यवस्था नहीं है बल्कि इनमें घरेलू उत्पादकों और संबद्ध देशों के निर्यातकों सहित सभी हितबद्ध पक्षकारों के लिए एक समान अवसर वाली प्रतिस्पर्धा की स्थिति स्थापित करने की व्यवस्था है । प्राधिकारी सामान्य मूल्य और एन ई पी की मासिक गणना के बारे में दिए गए सुझाव, को भी दो आधारभूत कच्ची सामग्रियों की कीमतों में उत्तर-चढ़ाव पर विचार करते हुए नोट करते हैं ।

सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

जापान के लिए सामान्य मूल्य

ऐसे उत्पादक/निर्यातक, जिन्होंने जांच शुरूआत के संबंध में आर्शिक या पूर्ण अनुसूचि प्रस्तुत किए थे

मित्सुबिसी कैमिकल कार्पोरेशन

22. जापान ने संबद्ध वस्तु की एक उत्पादक मै. मित्सुबिसी कैमिकल कार्पो. को प्राधिकारी ने अनंतिम निर्धारण/प्रारंभिक जांच परिणाम दस्तावेज में दर्ज व्यौरों के अनुसार अनंतिम निर्धारण हेतु असहयोगी माना था। यह स्थिति प्रारंभिक जांच परिणाम के बाद बदली नहीं है और उनकी समान स्थिति जारी है। संबद्ध उत्पादक संगत सूचना उपलब्ध कराने में विफल रहा है और इसलिए प्राधिकारी अंतिम निर्धारण के लिए भी संबद्ध निर्यातक को असहयोगी मानते हैं।

मित्सुई कैमिकल आई एन सी, जापान

23. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध उत्पादक द्वारा घरेलू बाजार में घरेलू बिक्रियों के संबंध में प्रदत्त सूचना जांचकर्ता दल द्वारा मौके पर सत्यापन के दौरान सत्यापित की गई थी। दावा किए गए विभिन्न समायोजनों को भी सत्यापित किया गया था और क्रमबद्ध पाया गया था। उन्होंने बिक्री के बाद के ऋणों के संबंध में भी समायोजन का दावा किया था। जिन्हे प्रत्येक सौदे के लिए उचित ढंग से आवंटित किया गया है और सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु एक समायोजन (सकारात्मक और नकारात्मक) के रूप में स्वीकार किया गया है।

24. व्यवसाय जांच की सामान्य अवधि के निर्धारण के लिए संबंधित उत्पाद की उत्पादन लागत स्वीकार की गई है। इसके अलावा, यह निर्धारित करने के लिए कि क्या घरेलू बिक्रियां सामान्य व्यवसाय अवधि में थीं, संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की लागत के संदर्भ में सभी घरेलू बिक्री सौदों की जांच की गई। प्राधिकारी ने यह नोट किया कि प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा अपने घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं की घरेलू बिक्री, घरेलू बिक्री की कीमतों के आधार पर सामान्य मूल्य निर्धारण की अनुमति के लिए प्रतिनिधि के और प्रतिवादी द्वारा प्रदत्त आंकड़ों के तहत सामान्य व्यवसाय जांच संतोषजनक थी।

25. व्यापार की सामान्य प्रक्रिया संबंधी परीक्षण के निर्धारण के लिए संबंधित उत्पाद की उत्पादन लागत को सवीकार किया गया है। इसके अलावा, सभी घरेलू बिक्री सौदों की जांच यह निर्धारित करने के लिए संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत के संदर्भ में की गई थी। क्या घरेलू बिक्रियां व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में रही थीं। इस बात पर विचार करते हुए कि उत्पादन लागत और बिक्री कीमत में माह दर माह भारी परिवर्तन हुए हैं, सामान्य मूल्य की गणना प्रत्येक माह के लिए अलग-अलग की गई है। सत्यापन की प्रक्रिया के दौरान यह नोट किया

गया है कि घरेलू बाजार में 80% से कम बिक्रियां लाभप्रद बिक्रियां हैं और इसलिए सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए केवल लाभप्रदत बिक्रियों पर विचार किया गया है। तथापि, मित्सुई कैमिकल आई एन सी सीधे निर्यात नहीं करती हैं बल्कि असंबद्ध व्यापारियों के माध्यम से निर्यात करती हैं। इसके अलावा, महीनावार आधार पर निविष्टियों की कीमतों में भारी उत्तरचढ़ाव को देखते हुए पाटन मार्जिन के निर्धारणार्थ सामान्य मूल्य उस माह के दौरान निर्धारित किया गया है जब निर्यात जांच अवधि के दौरान बताए गए हैं और तत्पश्चात उसे सत्यापित करके विचार किया गया है। ऐसे शाह जिसके दौरान प्रतिवादी निर्यातक, अर्थात् मित्सुई कार्पो. जापान तथा मित्सुई सिंगापुर द्वारा निर्यात किया गया था, के अनुसार इस प्रकार से निर्धारित सामान्य मूल्य पाटनरोधी सारणी में दिया गया है।

असहयोगी निर्यातक

26. प्रतिवादक, अर्थात् मित्सुई कैमिकल्स इंक के लिए निर्धारित किया गया भारित औसत सामान्य मूल्य, जापान के सभी अन्य निर्यातकों के लिए अपनाया गया है। इस प्रकार से निर्धारित सामान्य मूल्य *** अम.डॉ. प्रति मी.ट. है।

थाइलैंड के लिए सामान्य मूल्य

सहयोगी निर्यातक

पी टी टी फेनोल कंपनी लि., उत्पादक और निर्यातक और पी टी टी पब्लिक कंपनी लि. (निर्यातक)

27. प्रतिवादी निर्यातक ने थाइलैंड में घरेलू बाजार में उनकी बिक्रियों तथा उत्पादन लागत दोनों के संबंध में आंकड़े उपलब्ध कराए हैं। उक्त प्रतिवादी उत्पादक/निर्यातक ने इन आंकड़ों के संबंध में प्राधिकारी को पहुंच भी प्रदान की है जिनका प्राधिकारी द्वारा इस प्रयोजनार्थ प्रतिनियुक्त जांचकर्ता दल द्वारा विधिवत ढंग से सत्यापन किया गया था। प्राधिकारी ने सत्यापित आंकड़ों की पुष्टि की है और उक्त प्रतिवादी उत्पादक/निर्यातक की टिप्पणियां मांगते हुए एक सत्यापन रिपोर्ट जारी की है। इसके प्रत्युत्तर में उन्होंने प्रकटन विवरण में स्पष्ट और विस्तृत रूप से बताई गई आरंभिक लागत के संबंध में समायोजन की मांग की है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

28. प्रतिवादी उत्पादक/निर्यातक द्वारा किए गए दावे की विस्तृत रूप से जांच की गई थी। यह नोट किया गया है कि उन्होंने कच्ची सामग्री, प्रयोज्य भंडार और कलपुर्जे, सुविधाएं और मूल्यहास की लागत के संबंध में आरंभिक लागत पर समायोजनों की मांग की है। जहां तक कच्ची सामग्रियों को लेने का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि प्रमुख आधारभूत कच्ची सामग्री, अर्थात् बेंजीन और प्रोपीलीन उनकी संबंधित कंपनी से ली गई थी और इसलिए कच्ची सामग्री की लागत के संबंध में समायोजन करने के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। प्रयोज्य भंडार और कलपुर्जे, सुविधाएं और मूल्यहास के संबंध में दावा किए गए समायोजनों के बारे में

इन पर आरंभिक लागत की गणना करने की पद्धति उनके सत्यापन में नहीं दर्शायी गई थी । अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि सत्यापन के बाद इस संबंध में दावे की कोई जरूरत नहीं है और इस दावे की अनुमति नहीं है ।

29. कथित प्रतिवादी निर्यातक द्वारा प्रदत्त सूचना पर विचार करते हुए जांच अवधि के दौरान प्रतिवादी निर्यातक द्वारा अपने घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं की की गई घरेलू बिक्री हानि वाली बिक्रियां पाई गई । अतः उनकी उत्पादन लागत को ध्यान में रखतर तथा इसमें व्यावहारिक लाभ मार्जिन शामिल करके सामान्य मूल्य पर विचार किया गया है । इसके अलावा हर माह की निविष्टि कीमतों में भारी उतार-चढ़ाव को देखते हुए पाटन मार्जिन निर्धारित करने के लिए उस माह का सामान्य मूल्य, जिसके दौरान जांच अवधि के समय निर्यात सूचित किया गया व बाद में सत्यापित किया गया, निर्धारित करने पर विचार किया गया है । इस प्रकार से निर्धारित सामान्य मूल्य पाटनरोधी मार्जिन सारणी में दिया गया है ।

असहयोगी निर्यातक

30. प्रतिवादी उत्पादक के संबंध में निर्धारित सामान्य मूल्य थाइलैंड के सभी अन्य निर्यातकों के लिए स्वीकार किया गया है । इस प्रकार वर्तमान मामले में निर्धारित सामान्य मूल्य पाटन मार्जिन सारणी में दिया गया है ।

निर्यात कीमत

जापान से प्रतिवादी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

मित्सुई कैमिकल्स आई एन सी, जापान

31. मै. मित्सुई कैमिकल्स आई एन सी आई द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु को मित्सुई एंड कंपनी लि. जापान (एम बी के) और सुमितोमो कार्पो. (एस सी) के जरिए जांच अवधि के दौरान भारत को निर्यात किया गया है ।

32. एम सी आई *** पर अपनी संबद्ध कंपनियों के जरिए एम बी के और एस सी को अपने उत्पादों की बिक्री करती है । मित्सुई कैमिकल्स इंक, जापान *** आधार पर मित्सुई एंड कंपनी लि. जापान (एम बी के) को बिक्री करती है जो *** आधार पर मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पैसिफिक) प्रा. लि., सिंगापुर (एम ए पी) को *** की व्यवस्था करके बिक्री करते हैं । तत्पश्चात एम ए पी इसे भारतीय उपभोक्ताओं को बेचता है ।

33. प्राधिकारी को प्रस्तुत और तत्पश्चात भौके पर सत्यापन के दौरान सत्यापित उत्तर के अनुसार जापानी व्यापारी मै. मित्सुई एंड कंपनी लि., जापान ने मित्सुई कैमिकल इंक. से खरीदे गए जापान के मूल के विचाराधीन उत्पाद का नौवहन किया था, यह विचाराधीन उत्पाद *** बीजक से *** भारत में भिन्न-भिन्न उपभोक्ताओं के रूप में था । इस प्रकार नौवहन की गई फेनोल की कुल मात्रा *** मी.ट. थी । भारत में निवल निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए समुद्री भाड़ा, निकासी और प्रहस्तन प्रभार, बैंक प्रभार, ऋण लागत और मित्सुई एंड कंपनी

(एशिया पैसिफिक) पी टी ई लि., सिंगापुर और मै. मित्सुई एंड कंपनी इंडिया को दिए गए कमीशन के संबंध में यथासत्यापित समायोजन किए गए हैं। इसके अलावा, व्यापारिक कंपनी द्वारा वहन किए गए एस जी ए व्ययों को भी एन ई पी के निर्धारण हेतु समायोजित किया गया है। इस प्रकार निर्धारित निवल निर्यात कीमत *** अम.डॉ. प्रति मी.ट. बनती है। इस संवितरण में बिक्री की श्रृंखला इस प्रकार है :-

34. प्राधिकारी को प्रस्तुत उत्तर के अनुसार जापानी व्यापारी मै. मित्सुई एंड कंपनी लि., जापान ने मित्सुई कैमिकल्स आई एन सी से खरीदे गए जापानी मूल के विचाराधीन उत्पाद का नौवहन किया था और भारत में उपभोक्ताओं को उनकी एक अन्य संबंधित व्यापारिक कंपनी मै. मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पैसिफिक) पी टी ई लि., सिंगापुर के माध्यम से *** बीजक के रूप में विचाराधीन उत्पाद का नौवहन किया गया था। इस प्रकार नौवहन किए गए बल्क फेनोल की कुल मात्रा उत्तर में किए गए दावे के अनुसार *** मी.ट. बनती है। जापान तथा सिंगापुर स्थित मित्सुई की कंपनी के रिकॉर्डों के सत्यापन के दौरान यह बात सामने आई कि बल्क फेनोल की कम से कम एक पोतलदान (मात्रा *** मी.ट.) जो पोतलदान का आधा हिस्सा थी, के आधार पर अलग-अलग पाटन मार्जिन का दावा किया गया था और उनके दावे के आधार पर जिससे अनन्तिम रूप से निर्धारण की अनुमति दी गई थी, को वास्तव में सिंगापुर की कंपनी द्वारा एक अन्य व्यापारी मै. *** को बेचा गया था, जो एक अमरीका आधारित कंपनी है, जिसने बाद में उसे भारतीय उपभोक्ताओं को बेचा था और न कि मित्सुई एंड कंपनी एशिया पैसिफिक पी टी ई लि. के द्वारा। इस सीमा तक प्राधिकारी नोट करते हैं कि या तो इरादतन अथवा गैर इरादतन सिंगापुर के संबद्ध व्यापारी ने प्रारंभिक जांच परिणामों में एक अन्य व्यापारी (ऐसे निर्यातक/व्यापारी मै. *** ने वास्तव में इस जांच में हिस्सा नहीं लिया था) द्वारा किए गए निर्यातों को घोषित करके गलती से अलग-अलग पाटन मार्जिन का दावा किया था और उस गलती को तब तक घोषित नहीं किया जब तक मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पैसिफिक) पी टी ई लि. के रिकॉर्डों के सत्यापन के दौरानन प्राधिकारी प्रतिनियुक्त जांच दल द्वारा इसका पता नहीं लगा लिया गया। प्रकटीकरण विवरण का उत्तर देते हुए, यद्यपि उन्होंने अपनी चूक स्वीकार नहीं की है, लेकिन यह दावा किया है कि यह बिक्री पहुंच मूल्य के निर्धारण के लिए स्वीकार की जाए। प्राधिकारी ने मामले का पुनर्विचार करने के बाद यह निर्णय लिया कि इस दावे के लिए पूरे मार्जिन को अनुमत करने की बजाए अलग पाटन मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजन से प्रत्यक्ष बिक्री पर विचार किया जाए। अतः एन ई पी के निर्धारण के लिए मै. मित्सुई एंड कं. लि. जापान तथा मित्सुई एंड कं. (एशिया पैसिफिक) प्रा. लि. सिंगापुर की सभी पात्र बिक्रियों के आधार पर एक ही भारित औसत एन आई पी निर्धारित कर गई है। अतः इस बिक्री माध्यम के संबंध में निर्धारित एन आई पी सत्यापित समायोजनों की कटौतियों के बाद *** प्रति मी.ट. है।

35. मै. सुमितोमो कार्पोरेशन, जापान, मै. मित्सुई कैमिकल कार्पो. जापान से सामग्रियों की खरीद करती है और मै. सुमितोमो कार्पोरेशन एशिया पी टी ई लि. सिंगापुर को उनकी बिक्री करती है। इसके बाद मै. सुमितोमो एशिया पी टी ई लि. सीधे या सिंगापुर और संयुक्त अरब अमीरात में आधारित असंबंधित कंपनियों के माध्यम से भारत को इन उत्पादों की बिक्री करता है। सुमितोमो कार्पोरेशन एशिया पी टी ई लि. ने अपने उत्तर में यह कहा है कि उसने मै. नोबल रिसोर्सेज

पी टी ई लि., सिंगापुर के जरिए भारत को मै. मित्सुई कैमिकल्स आई एन सी जापान द्वारा उत्पादित *** मी.ट. फेनोल की बिक्री की है । मै. नोबल रिसोर्सेज ने भारत को उनके द्वारा निर्यातित वस्तुओं के लिए कोई पृथक उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है । वह अंतिम निर्यात कीमत जिस पर मै.नोबल रिसोर्सेज पी टी ई लि., सिंगापुर द्वारा भारत को वस्तुओं का निर्यात किया गया है, प्राधिकारी को नहीं बताई गई हैं । सुमितोमो के इस दावे के होते हुए भी कि उन्हें असहयोगी निर्यातक नहीं माना जा सकता है क्योंकि श्रृंखला में शामिल अन्य पक्षकारों ने उत्तर नहीं दिया है, मामले का तथ्य यही बना रहता है कि अपूर्ण श्रृंखला के मद्देनजर प्राधिकारी के लिए निवल निर्यात कीमत निर्धारित करना संभव नहीं है और इसलिए प्राधिकारी मानते हैं कि इस निर्यातक के लिए अलग मार्जिन निर्धारित किया जाना संभव नहीं है ।

36. इसी प्रकार जैसा कि उपर्युक्त स्पष्ट किया गया है, मै. मित्सुबिसी कैमिकल्स कार्पो., जापान के संबंध में सामान्य मूल्य उपलब्ध नहीं होने के मद्देनजर मै. सुमितोमो कार्पोरेशन एशिया पी टी ई लि. द्वारा भारत को किए गए मै. मित्सुई कैमिकल्स कार्पो., जापान द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद के निर्यातों के संबंध में अलग-अलग पाटन मार्जिन निर्धारित नहीं किया जा सकता है ।

जापान के असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

37. इस श्रेणी के निर्यातकों के लिए कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत की गणना करने के लिए जापान के प्रतिवादी उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा बताई गई न्यूनतम निर्यात कीमत पर भरोसा किया गया है । कारखाना द्वार निर्यात कीमत ज्ञात करने के लिए सहयोगी निर्यातकों के संबंध में अनुमत समायोजनों के समतुल्य समुद्री भाड़ा, निकासी और प्रहस्तन प्रभार, बैंक/ऋण प्रभार और कमीशन के संबंध में समायोजन किए गए हैं । उपर्युक्त पद्धति को अपनाकर कारखाना द्वार निर्यात कीमत को *** अम.डॉ. पी एम टी के रूप में परिकलित किया गया है ।

थाईलैंड के प्रतिवादी निर्यातकों हेतु निर्यात कीमत

पीटीटी फेनोल कंपनी लि. और पी टी टी पब्लिक कंपनी लि., थाईलैंड

38. मै. पीटीटी फेनोल कं. लि. थाईलैंड ने अपना उत्तर प्रस्तुत करते समय भारत को संबद्ध वस्तुओं का सीधे और अपनी संबद्ध कंपनी मै. पी टी टी पब्लिक कंपनी लि., थाईलैंड के जरिए निर्यात करने का दावा किया है । इस उत्तर के अनुसार इस कंपनी ने *** सौदों के रूप में भारत को बल्क फेनोल की बिक्री की थी, जिसमें *** सौदे व्यापारी कंपनी मै. पी टी टी पब्लिक कं. लि. के माध्यम से, *** से **, *** मै. मित्सुई एंड कंपनी लि., जापान (व्यापारी)/मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पैसिफिक) पी टी ई लि., सिंगापुर के माध्यम से की गई थी और शेष बिक्रियां, **, *** भारतीय आयातक *** को सीधे की गई थी और एक सौदा

भारतीय आयातक *** से सीधे किया गया था ।

मै. पी टी टी फेनोल कंपनी लि. द्वारा सीधे बिक्रियां और उसके संबंधित व्यापारी पी टी टी पब्लिक कंपनी लि. के जरिए की गई बिक्रियां

39. इस कंपनी के रिकॉर्डों के सत्यापन से पता चलता है कि जांच अवधि के दौरान इन्होंने भारत को *** सौदों के रूप में फेनोल की भारी मात्रा का निर्यात किया था, जैसा कि उपर्युक्त पैरा 40 में दर्शाया गया है। प्राधिकारी इसके अलावा, पीके आइटर मार्क दुबई के उन्हीं निर्यातों के लिए अलग-अलग पाटन मार्जिन निर्धारित करने के दावे की अनुमति नहीं देते हैं जैसाकि प्रकटन विवरण में विस्तार से वर्णन किया गया है। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि संबद्ध निर्यातकों ने अपनी संबंधित कंपनी मै. पी टी टी पब्लिक के जरिए *** सौदों के रूप में भारत को भारी मात्रा में फेनोल की बिक्री की है। इन बिक्रियों की कुल मात्रा *** मी.ट. है। प्राधिकारी अलग-अलग पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु इन बिक्रियों को भी पात्र मानते हैं।

40. प्राधिकारी नोट करते हैं कि अनंतिम निर्धारण हेतु पाटन मार्जिन निर्धारण करते समय प्राधिकारी ने उत्पादक द्वारा सीधे किए गए निर्यातों और उनकी संबंधित व्यापारिक कंपनी के जरिए किए गए निर्यातों के लिए एकल मार्जिन की अनुमति दी थी। प्राधिकारी ने इस आधार पर इसका विचार किया कि निर्यातक आसानी से सीधे निर्यातों और अपनी संबद्ध कंपनी के निर्यातों में अदला-बदली कर सकता है और इसलिए प्राधिकारी ने मै. पी टी टी फेनोल कंपनी लि., थाइलैंड द्वारा सीधे अथवा उनके संबद्ध मै. पी टी टी पब्लिक कंपनी लि., थाइलैंड के जरिए किए गए निर्यातों के लिए एक निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन निर्धारित किया था।

41. सत्यापन रिकॉर्ड के उत्तर में प्राधिकारी से यह अनुरोध किया गया था कि चूंकि उत्पादक एक आरंभिक कंपनी है, इसलिए काफी कम अवधि के लिए संबंधित व्यापारिक कंपनी के शुरुआती विपणन प्रयासों का प्रयोग भारत समेत अन्य निर्यात बिक्रियों के लिए किया गया था। उन्होंने प्राधिकारी द्वारा संबंधित कंपनियों के जरिए किए गए निर्यातों के लिए केवल एक पाटन मार्जिन दिए जाने के प्राधिकारी के निर्णय पर भी विवाद उठाया है। उन्होंने सी.शु. टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9 की उपधारा 6 का हवाला दिया है, जिसमें निमानुसार उल्लेख है :-

"(6) उप धारा 6 के अंतर्गत जांच के अधीन किसी निर्यातक या उत्पादक द्वारा निर्यातित किसी वस्तु के संबंध में पाटन का मार्जिन अनुरक्षित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत तथा उस निर्यातक या उत्पादक द्वारा प्रदत्त सूचना से संबंधित रिकॉर्डों पर आधारित होगा।"

बशर्ते कि जहां कोई निर्यातक या उत्पादक ऐसे रिकॉर्ड या सूचना उपलब्ध नहीं करता है, वहां ऐसे निर्यातक या उत्पादक के लिए पाटन का मार्जिन उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया जाएगा।"

42. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यथोक्त उपधारा 6 प्राधिकारी को संबंधित उत्पादक और निर्यातक के लिए विशेष रूप से तब जबकि यह संबंधित संयोजन निर्यात के लिए एक कंपनी से दूसरी कंपनी में अदला-बदली कर सकता है, एक पाटन मार्जिन पर विचार करने से प्रतिबंधित नहीं करता है और किसी कंपनी के जरिए अनिश्चित नियमों, जिसका पाटन मार्जिन कम हो, के संबंध में भी यही लागू होता है, यदि पृथक पाटन मार्जिन निर्धारित किया जाता है और इस प्रकार अन्य कंपनी के लिए एक पृथक उच्चतर मार्जिन अनावश्यक हो जाता है। प्राधिकारी मानते हैं कि इस पद्धति, विशेष रूप से तर्कसंगत औचित्य के साथ, को अपनाकर उपधारा 6 के ग्रावधानों का उल्लंघन नहीं किया गया है।

43. अतः प्राधिकारी ने उत्पादक मै. पी टी टी फेनोल और संबंधित व्यापारी मै. पी टी टी पब्लिक द्वारा की गई बिक्रियों के संबंध में आवश्यक समायोजन करने के पश्चात एक निर्यात कीमत निर्धारित की है। पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु एन ई पी *** अम.डॉ. प्रति मी.ट. बनता है।

पी टी टी फेनोल कंपनी लि., थाइलैंड द्वारा उत्पादित फेनोल के संबंध में मै मित्सुइ एंड कंपनी लि., जापान (व्यापारी)/ मित्सुइ एंड कंपनी (एशिया पैसिफिक) पी टी ई लि., सिंगापुर द्वारा की गई बिक्रियां

44. उत्तर प्रस्तुत करते समय मै मित्सुइ एंड कंपनी लि., जापान (व्यापारी)/ मित्सुइ एंड कंपनी (एशिया पैसिफिक) पी टी ई लि., सिंगापुर ने मै. पी टी टी फेनोल कंपनी लि. द्वारा विनिर्मित संबद्ध वस्तु का निर्यात करने का दावा भी किया है।

45. अपने जांच दल के जरिए प्राधिकारी द्वारा रिकॉर्डों के सत्यापन से यह पता चलता है कि उत्पादक पी टी टी फेनोल ने *** अम.डॉ. के बीजक मूल्य के लिए मित्सुइ एंड कंपनी (एशिया पैसिफिक) पी टी ई लि., सिंगापुर को *** मी.ट. फेनोल बीजकीकृत किए थे जिसने बाद में उसे भारतीय आयातक मै. हरेश पैट्रोकेम प्रा.लि. को *** अम.डॉ. के बीजक मूल्य के लिए बीजकीकृत किया था। यह *** सौदा था, जिसमें निर्यात की श्रृंखला निम्नानुसार थी।

पी टी टी फेनोल कं.लि. थाइलैंड >>> मित्सुइ एंड कंपनी. (एशिया पैसिफिक) पी टी ई लि. सिंगापुर>>>भारतीय आयातक.

46. इसके अलावा, यह भी देखा गया था कि प्राधिकारी को प्रस्तुत उत्तर और तत्पश्चात किए गए सत्यापन के अनुसार *** मी.ट. फेनोल (बल्क) का भारत को जांच अवधि के दौरान निम्नलिखित श्रृंखला के जरिए पोतलदान किया गया था।

पी टी टी फेनोल कंपनी लि. थाइलैंड>>> मै मित्सुइ एंड कंपनी लि. जापान>>>> मित्सुइ एंड कंपनी. (एशिया पैसिफिक) पी टी ई लि. सिंगापुर>>>भारतीय आयातक.

47. थाइलैंड में उत्पादक ने मैं. मित्सुई एंड कंपनी लि., जापान पर *** बीजक उठाए थे, जिसने बाद में मित्सुई एंड कंपनी. (एशिया पैसिफिक) पी टी ई लि. सिंगापुर पर *** बीजक भी उठाए थे । तथापि, मित्सुई एंड कंपनी. (एशिया पैसिफिक) पी टी ई लि. सिंगापुर ने भिन्न-भिन्न उपभोक्ताओं पर *** बीजक उठाए थे लेकिन कुल मात्रा समान रही थी । सत्यापित आंकड़ों के अनुसार समायोजन किए गए थे, जिसमें समुद्री भाड़ा, बीमा (जहां लागू हो), मित्सुबिसी एंड कंपनी थाइलैंड और मित्सुई एंड कंपनी, भारत को दिए गए कमीशन की राशि, ऋण लागत, बैंक प्रभार और एस जी ए आदि शामिल थे । मौ. मित्सुई एंड कंपनी लि., जापान या मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पैसिफिक) पी टी ई लि. सिंगापुर द्वारा निर्यातित थाइलैंड मूल के फेनोल के निर्यातों के लिए एन ई पी *** अम.डा. प्रति मी.ट. बनती है ।

थाईलैंड के असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

48. थाईलैंड के प्रतिवादी उत्पादक/निर्यातक द्वारा सामान्य मूल्य के संबंध में बताई गई न्यूनतम निर्यात कीमत पर कारखाना द्वार निर्यात कीमत की गणना हेतु भरोसा किया गया है । कारखाना द्वार निर्यात कीमत ज्ञात करने के लिए समुद्री भाड़ा, निकासी और प्रहस्तन प्रभार, बैंक/ऋण प्रभार, और कमीशन के संबंध में समायोजन किए गए हैं । उपर्युक्त पद्धति को अपना कर कारखाना द्वार निर्यात कीमत *** अम.डॉ. पी एम टी के रूप में परिकलित की गई है ।

पाटन मार्जिन

49. ऊपर यथानिर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमतों के आधार पर संबद्ध देशों से निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन निम्नांकित तालिका के अनुसार निर्धारित किया जाता है:

अम.डॉ./मी.ट.

उत्पादक	निर्यातक	सामान्य मूल्य	निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन (%)
मै. मित्सुई कैमिकल इंक, जापान	मित्सुई एंड क., लि., जापान/ मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पेसिफिक) प्रा. लि., सिंगापुर	***	***	***	95-105%
जापान से अन्य सभी निर्यातक	जापान से अन्य सभी निर्यातक	***	***	***	130-140%
मै. पी टी टी फेनोल कंपनी लि. थाईलैंड	मै. पीटीटी फेनोल कंपनी लि. थाईलैंड / मै. पीटीटी पब्लिक कंपनी लि., थाईलैंड	***	***	***	40-45%
मै. पीटीटी फेनोल कंपनी लि. थाईलैंड	मित्सुई एंड क. लि., जापान (एमबीके) तथा मित्सुई एंड क. (एशिया पेसिफिक) प्रा. लि., सिंगापुर	***	***	***	20-25%
थाईलैंड से अन्य सभी निर्यातक	थाईलैंड से अन्य सभी निर्यातक	***	***	***	75-80%

50. इस प्रकार अनंतिम रूप से निर्धारित पाटन मार्जिन काफी अधिक और निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है ।

क्षति निर्धारण और कारणात्मक संबंध की जांच

घरेलू उद्योग के विचार

51. घरेलू उद्योग के विचार निम्नानुसार हैं: -

- जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से निर्यात कीमत पाटित स्तर पर रही है । इसके अलावा, ये कीमतें निविष्टियों की कीमतों से भी अधिक घट गई हैं ।
- घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री मात्राओं और क्षमता उपयोग में 2007-08 तक सुधार प्रदर्शित होने के बाद गिरावट आई है ।
- घरेलू उद्योग के लाभ/हानि (पी बी टी, पी बी आई टी और पी बी डी आई टी) इन सभी में 2007-08 में हुए सुधार के बाद गिरावट आई है, यहां तक कि ये क्रत्तिमात्मक हो गए हैं ।
- घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में मामूली गिरावट आई है । ऐसा इस तथ्य के कारण हुआ है कि पाटित आयातों ने भारत में मांग के काफी बड़े बाजार हिस्से पर कब्जा कर लिया है ।
- प्रत्येक संबद्ध देश से आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में भारी कीमत कटौती हो रही है ।

च) संबद्ध देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग को जांच अवधि के दौरान अपनी कीमतों को तेजी से घटाने के लिए बाध्य होना पड़ा है। इस प्रकार, आयातों से इस अवधि के दौरान कीमतों में कमी आई है।

छ) घरेलू उद्योग के रोजगार स्तर में मामूली गिरावट के अलावा कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ है।

ज) वेतन और मजदूरी :- घरेलू उद्योग के वेतन और मजदूरी स्तर में उत्पादन के निम्न स्तर के कारण कमी आई है।

झ) मांग और बाजार हिस्सा:- यद्यपि, आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है, तथापि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है।

झ.) वृद्धि:- अनेक मापदंडों की दृष्टि से घरेलू उद्योग की वृद्धि में ऋणात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है।

ट) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति उठानी पड़ी है और वह मात्रात्मक प्रभाव और कीमत प्रभाव के दुष्प्रक्रम में फंस गया है। विदेशी उत्पादकों की अधिक क्षमता के परिणाम स्वरूप भारतीय बाजार में संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा में वृद्धि के साथ घरेलू उद्योग को बिक्री में घाटा और बाजार हिस्से में नुकसान उठाना पड़ा है। इससे प्रतिकूल मात्रात्मक प्रभाव पड़ा है। बिक्रियों को गंवाए जाने से घरेलू उद्योग को घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री करने के लिए घरेलू बिक्री कीमत को घटाना पड़ा है। इस प्रकार, इसके परिणामस्वरूप कीमत पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। फलस्वरूप घरेलू उद्योग को निर्यातक देशों की अनुचित व्यापार प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप प्रतिकूल मात्रात्मक प्रभाव और प्रतिकूल कीमत प्रभाव का सामना करना पड़ा है।

ठ) संबद्ध देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग द्वारा पहले से उठाई जा रही वास्तविक क्षति में और वृद्धि हो गई है।

ड) आयात मात्राओं में समग्र रूप से भारी वृद्धि हुई है। आयातों में यह वृद्धि घरेलू उद्योग द्वारा अपने उत्पाद को उप-ईष्टतम कीमतों पर बेचे जाने के सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद हुई है। यदि घरेलू उद्योग ने कम कीमतों पर अपने उत्पाद को बेचने के प्रयास नहीं किए होते, तो आयातों में हुई वृद्धि और अधिक होती।

ढ) कीमत कटौती काफी अधिक है। समतुल्य कीमतों पर बिक्री के बावजूद घरेलू उत्पाद और आयातित उत्पाद के बीच कीमत अंतर सकारात्मक है। संबद्ध उत्पाद की प्रकृति को देखते हुए घरेलू उत्पाद और आयातित उत्पाद के बीच कोई भी कीमत अंतर उपभोक्ताओं को स्वीकार्य नहीं है और घरेलू उद्योग निरंतर कीमत घटाने के दबाव में है। घरेलू उद्योग आयातित कीमतों से काफी अधिक कीमतों पर बिक्री नहीं कर सकता है। घरेलू उद्योग के पास एकमात्र विकल्प इसके बराबर कीमतों पर बिक्री करने का है। थोड़ा सा कीमत अंतर भी इस प्रकार के उत्पाद के लिए काफी महत्वपूर्ण होता है।

प्रतिवादी उत्पादकों/निर्यातकों के विचार

52. मे. मित्सुई कैमिकल्स जापान ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :-

(क) उत्पादन, क्षमता उपयोग के संबंध में घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है। बिक्री लागतों में वृद्धि स्थिर लागत में वृद्धि और कम उत्पादन के कारण हुई है। क्षति का प्रमुख कारण वैश्विक मंदी रहा है।

(ख) ऐसे देशों, जिन पर पहले से पाटनरोधीशुल्क लागू है, से आयात जांच अवधि में लगभग 52% रहा है जो संबद्ध देशों से आयातों से अधिक है। कारणात्मक संबंध की जांच करते समय इसका विश्लेषण किया जाना चाहिए।

(ग) क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के सीमाशुल्क में भारी गिरावट आई है जो संभवतः घरेलू उद्योग की क्षति का कारण हो सकता है।

53. पी टी टी फेनोल कंपनी लि., थाइलैंड और मै. मितसुई एंड कंपनी, जापान और मै. मितसुई एंड कंपनी पी टी ई लि., सिंगापुर ने निम्नानुसार अनुरोध किया है:-

(क) प्राधिकारी को घरेलू उद्योग को हुई क्षति की जांच करते समय पाटन से इतर कारकों की जांच करनी चाहिए क्योंकि अधिकांश देशों पर पहले से पाटनरोधी शुल्क लागू है।

(ख) प्रारंभिक जांच परिणाम में भारतीय उत्पादन के संबंध में आयात समर्थक कंपनी के उत्पादन को अलग रखकर ज्ञात किए गए थे।

(ग) भारतीय उद्योग का क्षमता उपयोग समग्र रूप से केवल आवेदक से बेहतर है।

(घ) अधिकांश क्षति संबंधी मापदंड घरेलू उद्योग को क्षति न होने या कम क्षति होने की ओर संकेत करते हैं।

(ङ) प्रारंभिक जांच परिणामों में काफी विसंगतियां हैं और याचिकाकर्ता द्वारा अतिरिक्त आंकड़े उपब्य कराए गए हैं।

(च) प्राधिकारी को शुल्क लगाने से पहले निम्नर्ती उपभोक्ता उद्योग के संकट पर विचार करना चाहिए क्योंकि वह बिसफेनोल-ए, भेषज और विलायक जैसे अनेक उत्पादों हेतु आपूर्ति करता है। देश में मांग को पूरा करने के लिए भारतीय उत्पादकों के पास पर्याप्त क्षमता नहीं है।

(छ) क्षति संबंधी विश्लेषण मूल याचिका में प्रदत्त आंकड़ों के आधार पर किया जा सकता है, जिनके आधार पर यह मामला शुरू किया गया था और न कि संशोधित जांच अवधि के आंकड़ों के आधार पर

(ज) याचिका में दिए गए क्षति संबंधी आंकड़े केवल याचिकाकर्ताओं के लिए दिए गए हैं और

न कि याचिका के समर्थक के लिए ।

(अ) वर्ष 2008-09 के दौरान याचिकाकर्ता का क्षमता उपयोग लाइसेंस प्राप्त स्थापित क्षमता से अधिक रहा है ।

(अ.) वित्त वर्ष 2008-09 में बिक्री मात्रा में 6.4% की मामूली गिरावट आई है और उसे क्षति का कारण नहीं माना जा सकता है ।

(ट) बिक्री मूल्य में गिरावट बेंजीन की कीमतों में आई गिरावट के कारण हुई है और इस प्रकार यह उत्पादन लागत में गिरावट से सीधे संबंधित है ।

(ठ) वित्त वर्ष 2008-09 के दौरान औसत माल सूचियों में सर्वकालिक न्यूनतम स्तर की गिरावट आई है ।

(ड) वित्त वर्ष 2007-08 की तुलना में वित्त वर्ष 2008-09 के दौरान लाभप्रदता में गिरावट के लिए पाटन को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है ।

(द) रोजगार स्तरों में गिरावट किसी संगठन की एक सामान्य विशेषता होती है ।

(ण) इन वर्षों के दौरान मजदूरी में वृद्धि हुई है; और वित्त वर्ष 2008-09 में यह सर्वाधिक रही है ।

(त) 2008-09 के दौरान घटी हुई मांग के; बावजूद घरेलू उद्योग के उत्पादन में वृद्धि हुई है ।

54. मै. सुमितोमो कार्पो, जापान और मै. सुमितोमो कार्पो. एशिया पी टी ई लि., सिंगापुर ने निमानुसार अनुरोध किया है :

(क) कोई वास्तविक खतरा या क्षति सिद्ध नहीं हुई है :

(i) आयात मात्रा : प्रारंभिक जांच परिणाम दर्शाते हैं कि जापान से निर्यातों में कमी आई है ।

(ii) कीमत प्रभाव नहीं है : उत्पाद की क्षति रहित कीमत और वास्तविक प्राप्ति कीमत कमोवेश समान हैं ।

(ख) कारणात्मक संबंध सिद्ध नहीं होता है : प्राधिकारी के लिए क्षति का आकलन करने हेतु अन्य ज्ञात कारकों की जांच करना अपेक्षित होता है । घरेलू उद्योग की वार्षिक रिपोर्ट दर्शाती है कि कंपनी का कार्य निष्पादन वैश्विक मंडी के कारण बिगड़ा है ।

55. मित्सुबिसी कैमिकल कार्पोरेशन जापान का प्रतिनिधित्व करने वाले मै. जे सागर एंड एसोसिएट्स, ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

क. घरेलू उद्योग की बिक्रियों में केवल मामूली गिरावट आई है और शायद थाईलैंड से हुए आयातों और न कि जापान से हुए आयातों के कारण ऐसा हुआ है और जापान से निर्यातों का कोई मात्रात्मक प्रभाव नहीं पड़ा है।

ख. घरेलू उद्योग के उत्पादन में कोई भारी परिवर्तन नहीं हुआ है। वे पूर्ण अथवा क्षमता से अधिक स्तर पर प्रचालन कर रहे हैं।

ग. लाभ/हानि की प्रवृत्ति पाटित आयातों से संबंधित प्रतीत नहीं होती है क्योंकि इस अवधि के दौरान जापान से आयातों में वृद्धि के बावजूद वर्ष 2007-08 के दौरान लाभों में भारी वृद्धि हुई थी।

घ. घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में वर्ष 2008-09 के दौरान 8.9% तक मांग में हुई कमी के अनुक्रम में कमी आई थी और न कि पाटित आयातों के कारण।

ड. याचिकाकर्ता और समर्थक के बाजार हिस्से में जांच अवधि के दौरान कोई वास्तविक परिवर्तन दिखाई नहीं देता है। यद्यपि, जापान से हुए आयातों के बाजार हिस्से में मामूली वृद्धि हुई है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

56. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों के विभिन्न अनुरोधों को नोट किया है और रिकॉर्ड में उपलब्ध और लागू कानून के अनुसार उपलब्ध तथ्यों पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग की क्षति का विश्लेषण किया है। तथापि, प्राधिकारी ने क्षति संबंधी विश्लेषण करने से पहले समर्थक से आंकड़े मिलाए थे, जिसने अब तक उन्हें प्रस्तुत नहीं किया है। जहां तक क्षति संबंधी विश्लेषण का प्रश्न है, प्राधिकारी द्वारा जांच अवधि निर्धारित की गई है और इसलिए क्षति संबंधी विश्लेषण परिपाठी के अनुसार और नियमों में यथाअधिदेशित ढंग से क्षति अवधि और जांच अवधि के दौरान किया गया है।

क्षति का संचयी आकलन

57. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध ॥ पैरा (iii) में यह उपबंध है कि जब एक से अधिक देश से हुए किसी उत्पाद के आयात की एक साथ पाटनरोधी जांच की जा रही है तो प्राधिकारी के लिए केवल उस स्थिति में ऐसे आयातों के संचयी प्रभाव का निर्धारण अपेक्षित होगा जब वह यह निर्धारित करे कि :-

(क) प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में निर्धारित पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त 2% से अधिक है और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों की 3% है अथवा जहां अलग-अलग देशों का निर्यात 3% से कम है वहां आयातों का संचयी हिस्सा समान वस्तु के आयातों के 7% से अधिक है, और

(ख) आयातित वस्तु तथा समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों को देखते हुए आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण उचित है ।

58. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि:

- प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन का मार्जिन ऊपर निर्धारित सीमाओं से अधिक है ;
- आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करना सही है क्योंकि संबद्ध देशों से हुए निर्यात भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्ति की गई समान वस्तु से सीधे प्रतिस्पर्धा करते हैं । यह बात निम्नलिखित से स्पष्ट होती है :
 - क. संबद्ध देशों के उत्पादकों द्वारा विनिर्मित संबद्ध वस्तु परस्पर और घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित उत्पाद की तुलना में तुलनीय विशेषताएं रखती है । दूसरे शब्दों में विभिन्न संबद्ध देशों से आपूर्ति की गई संबद्ध वस्तु और घरेलू उद्योग की वस्तु परस्पर समान वस्तुएं हैं ।
 - ख. प्राधिकारी को प्रस्तुत की गई सूचना से तर्कसंगत ढंग से यह संकेत मिलता है कि ऐसे सांझे पक्षकार हैं जो विभिन्न देशों से आयातित सामग्री और घरेलू सामग्री का उपयोग कर रहे हैं । आयातित और घरेलू सामग्रियां इस प्रकार एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग की जा रही हैं और घरेलू उत्पाद तथा आयातित उत्पाद और परस्पर आयातित उत्पाद के बीच प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा होती है ।
 - ग. संबद्ध देशों में से प्रत्येक से आयात की मात्रा काफी अधिक है ।
 - घ. उपभोक्ता विभिन्न आपूर्तिकर्ताओं द्वारा पेशकश की गई कीमतों के आधार पर खरीद संबंधी निर्णय लेते हैं ।

59. उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी नोट करते हैं कि आयातित उत्पाद और समान घरेलू उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों के आलोक में थाईलैंड और जापान से संबद्ध वस्तु के आयातों के घरेलू रूप से उत्पादित समान वस्तु पर पड़ने वाले प्रभाव का संचयी आकलन करना सही है ।

60. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में इन दोनों की वस्तुनिष्ठ जांच की व्यवस्था है, (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव; और (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का परिणामी प्रभाव । पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच

करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन या खपत की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है । पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पादों की कीमतों की तुलना में भारी कीमत कटौती की गई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में महत्वपूर्ण स्तर तक कमी करना है या ऐसी कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी मात्रा में बढ़ गई होती ।

61. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (iv) में निम्नानुसार उल्लेख है:

“संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले समस्त संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों; घरेलू कीमत, पाटन मार्जिन की मात्रा को प्रभावित करने वाले कारकों; नकद प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूँजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित ऋणात्मक प्रभावों का मूल्यांकन शामिल होगा ।”

पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

62. प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस तथा वर्ल्ड ट्रेड एटलस से संबद्ध वस्तु के आयातों के सौदावार आंकड़े एकत्र किए थे । प्राधिकारी ने इस अवधि के दौरान आयातों की मात्रा के साथ प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा बताए गए निर्यातों की मात्रा को भी मिलाया है । थाईलैंड और जापान के प्रतिवादी निर्यातकों ने डी जी सी आई एंड एस और डब्ल्यू टी ओ तथा याचिकाकर्ता द्वारा अपनाए गए आई बी आई एस आंकड़ों की तुलना में जांच अवधि के दौरान आयातों की अपेक्षाकृत कम मात्रा दर्शायी है । इसके अलावा डी जी सी आई एंड एस, आंकड़ा स्रोत और वर्ल्ड ट्रेड एटलस में दर्शाए गए आयात आई बी आई एस आंकड़ा स्रोत में बताए गए आयातों से अधिक है । अतः मात्रा संबंधी विश्लेषण डी जी सी आई एंड एस द्वारा बताए गए आंकड़ों के आधार पर निम्नानुसार किया गया है :-

आयात मात्रा तथा संबद्ध देश का हिस्सा

	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि (9माह)	जांच अवधि वार्षिकीकृत
जापान	मी.ट.	532	6,244	18,226	12,920	17,226
थाईलैंड	मी.ट.	0	0	20,498	28,285	37,713
संबद्ध देश	मी.ट.	532	6,244	38,724	41,205	54,939
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	1,175	7,284	10,334	10,334
अन्य देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू है	मी.ट.	63,337	88,447	51,894	35,301	47,068
अन्य देश	मी.ट.	2,687	8,180	2,299	1,617	2,155

कुल आयात	मी.ट.	102,556	102,871	92,918	78,122	104,163
प्रति	सूचीबद्ध	100	155	140	157	157

आयातों का बाजार हिस्सा

आयातों में बाजार हिस्सा	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि (9एम)	जांच अवधि वार्षिकीकृत
संबद्ध	%	0.80	6.07	19.62	16.54	16.54
उत्पादन	%	0.00	0.00	22.06	36.21	36.21
संबद्ध देश	%	0.80	6.07	41.68	52.74	52.74
भारत देश पर पाटनरोधी शुल्क	%	95.16	85.98	55.85	45.19	45.19
देश	%	4.04	7.95	2.47	2.07	2.07
कुल आयात	%	100.00	100.00	100.00	100.00	100.00
भारतीय उत्पादन	मी.ट.	40,733	41,908	42,641	24,719	32,959
संबद्ध देश उत्पादन	मी.ट.	30,550	33,027	33,149	24,538	32,718
कुल भारतीय उत्पादन	मी.ट.	71,283	74,935	75,790	49,258	65,677
संबद्ध देश से आयात	मी.ट.	532	6,244	38,724	41,205	54,939
भारतीय उत्पादन के प्रतिशत रूप में	%	0.75	8.33	51.09	83.65	83.65
संबद्ध देश से हुए आयात						

उपर्युक्त तालिका में दर्शाए गए आंकड़ों के अनुसार :

अ. संबद्ध देशों से संचयी आयातों में समग्र रूप से और भारत में आयातों की दृष्टि से भारी परिवर्ती हुई है।

अ. संबद्ध देश से आयातों में भारत में उत्पादन और खपत की दृष्टि से आधार वर्ष की तुलना में वृद्धि हुई है। संबद्ध देश से हुए आयातों में घरेलू उद्योग के उत्पादन की दृष्टि से वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। संबद्ध देशों से हुए आयात आधार वर्ष में भारतीय उत्पादन के संबंध में 0.75% थे जो जांच अवधि में काफी अधिक बढ़कर 83% हो गए।

भाग, उत्पादन तथा बाजार हिस्सा

भाग, उत्पादन तथा बाजार हिस्सा	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि (9एम)	जांच अवधि वार्षिकीकृत
घरेलू उद्योग	मी.ट.	***	***	***	***	***
प्रयुक्ति	सूचीबद्ध	100	107	100	87	87
सहयोगी	मी.ट.	***	***	***	***	***

प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	109	117	113	113
आयात-संबद्ध देश	मी.ट.	532	6,244	38,724	41,205	54,935
आयात-अन्य देश	मी.ट.	66,024	96,627	54,194	36,918	49,213
कुल मांग	मी.ट.	134,483	175,84	165,292	127,634	170,178
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	131	123	127	137
मांग में बाजार हिस्सा						
घरेलू उद्योग	%	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	82	81	69	69
सहयोगी	%	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	83	95	89	89
संबद्ध देश	%	0.40	3.55	23.43	32.28	32.28
अन्य देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू है	%	47.10	50.30	31.40	27.66	27.66
अन्य देश	%	2.00	4.65	1.39	1.27	1.27

64. प्राधिकारी नोट करते हैं कि:

क. संबद्ध वस्तु की मांग घरेलू बिक्रियों तथा सभी देशों से हुए समस्त आयातों को जोड़कर निर्धारित की गई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु की मांग में आजार वर्ष से जांच अवधि तक वृद्धि होती रही है। मांग में आधार वर्ष अर्थात् 2006-07 की तुलना में जांच अवधि के दौरान 27% तक की वृद्धि हुई थी। संबद्ध देशों से हुए आयातों के बाजार हिस्से में भारी वृद्धि हुई है जबकि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से पर गिरावट आई है। घरेलू उद्योग का हिस्सा जो 2006-07 में 100 (सूचीबद्ध) के स्तर पर था, जांच अवधि के दौरान घटकर 69 (सूचीबद्ध) रह गया, जांच अवधि के दौरान 31% की गिरावट। इसी अवधि के दौरान संबद्ध देश से हुए आयातों का हिस्सा जो 2006-07 में 0.40% था, जांच अवधि के दौरान बढ़कर 32.28% हो गया। यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से हुए आयातों ने मांग में हुई वृद्धि के काफी हिस्से पर कब्जा कर लिया है।

घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन तथा क्षमता उपयोग

	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि (9 माह)	जांच अवधि वार्षिकीकृत
स्थापित क्षमता	मी.ट.	40,000	40,000	40,000	30000	40,000
उत्पादन	मी.ट.	40,733	41,908	42,641	24713	32,933
क्षमता उपयोग	%	101.83	104.77	106.60	82.40	82.40

65. घरेलू उद्योग के क्षमता, उत्पादन और क्षमता उपयोग संबंधी आंकड़े दर्शाते हैं कि क्षमता अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की क्षमता 40,000 मी.ट. के स्तर पर अपरिवर्तित रही है।

संबद्ध वस्तु का उत्पादन जो 2008-09 तक बढ़ रहा था, में जांच अवधि के दौरान 32959 मी.ट. तक भारी गिरावट आई थी। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग जो 2006-07 के दौरान 101.83% था और 2008-09 में बढ़कर 106.60% हो गया था, वह तत्पश्चात तेजी से घटकर 82.40% रह गया।

घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा

	इकाई	2006- मी.ट.	2007-08 ***	2008-09 ***	जांच अवधि (9 माह) ***	जांच अवधि
बिक्री	%	100	107	100	87	87

66. घरेलू उद्योग के बिक्री संबंधी उपर्युक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि जांच अवधि के दौरान बिक्रियों में आधार वर्ष और पूर्ववर्ती वर्ष 2008-09 की तुलना में भी 13% तक की गिरावट आई थी।

घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

67. नियम 18 के उप नियम (2) में यथा संदर्भित कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में भारी कीमत कटौती की गई है या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में महत्वपूर्ण स्तर तक कमी करना है या ऐसी कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा महत्वपूर्ण स्तर तक बढ़ गई होती।

68. संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर पड़े प्रभाव की कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण यदि कोई हो, के संदर्भ में जांच की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत, निवल बिक्री प्राप्ति (एन एस आर) और क्षति रहित कीमत की तुलना संबद्ध देशों से आयातों की पहुंच लागत के साथ की गई है।

पाटित आयातों का कीमत ह्रास तथा न्यूनीकरण प्रभाव:

69. पाटित आयातों के कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण संबंधी प्रभाव की भी उत्पादन लागत, निवल बिक्री प्राप्ति और संबद्ध देश से पहुंच कीमत के संबंध में जांच की गई है।

बिक्री की लागत	इकाई	2006-07 रु./मी.ट.	2007-08 ***	2008-09 ***	जांच अवधि (9 माह) ***	जांच अवधि वार्षिकता ***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	84	88	77	77

बिक्री कीमत(एनएसआर)	रु./मी.ट.	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	102	94	73	73

70. उपर्युक्त तालिका से यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में आई गिरावट आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान बिक्री लागतों में हुई गिरावट से अधिक है। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि बिक्रियों की लागत में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 23% की कमी आई थी जबकि जांच अवधि के दौरान बिक्री कीमत में 27% तक की भारी कमी आई थी जिससे यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग बिक्री लागत के अनुरूप बिक्री कीमत प्राप्त नहीं कर सका था और इस प्रकार कीमत में भारी कमी हुई थी। यह स्थिति बिल्कुल उलट हो जाती है जब आधार वर्ष 2006-07 की तुलना 2007-08 और 2008-09 की प्रवृत्तियों के साथ की जाती है। जब घरेलू उद्योग बिक्री लागतों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक वसूली कर रहा है, परंतु जांच अवधि में यह प्रवृत्ति बिल्कुल उलट हो गई और बिक्री प्राप्तियां बिक्री लागतों से भी कम हो गई।

कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री प्रभाव

कीमत कटौती

उत्पादक	नियांतक	घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति (अम.डॉ./मी.ट.)	पहुंच मूल्य (अम.डॉ./मी.ट.)	कीमत कटौती (अम.डॉ./मी.ट.)	कीमत कटौती (%)
मै. मित्सुई कैमिकल आई एन सी, जापान	मित्सुई एंड कं., लि., जापान (एमबीके) तथा मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पेसिफिक) पीटीई. लि., सिंगापुर	***	***	***	15-10%
जापान से अन्य सभी उत्पादक	जापान से अन्य सभी नियांतक	***	***	***	20-25%
मै. पी टी टी फेनोल कंपनी लि. थाईलैंड	मै. पीटीटी फेनोल कंपनी लि. थाईलैंड / पीटीटी पब्लिक कंपनी लि., थाईलैंड	***	***	***	20-25%
मै. पीटीटी फेनोल कंपनी लि. थाईलैंड	मित्सुई एंड कं. लि., जापान (एमबीके) और मित्सुई एंड क. (एशिया पेसिफिक) पीटीई. लि., सिंगापुर	***	***	***	10-15%

थाईलैंड से अन्य सभी निर्यातक	थाईलैंड से अन्य सभी निर्यातक	***	***	***	30-35%
------------------------------	------------------------------	-----	-----	-----	--------

71. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति ज्ञात करते समय घरेलू उद्योग द्वारा दी गई रिबेटों, छूटों और कमीशनों तथा प्रदत्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्क को घटाया गया है। आयातों के पहुंच मूल्य की गणना 1% पहुंच प्रभार और प्रत्येक प्रतिवादी निर्यातक द्वारा यथा उल्लिखित संबद्ध देशों से निर्यात/सीआईएफ कीमतों में लागू मूल सीमा शुल्क को जोड़कर की गई है। अन्य श्रेणी के लिए पहुंच मूल्य के निर्धारण हेतु अवशिष्ट श्रेणी के लिए पाठन मार्जिन के निर्धारण के लिए विचार किए गए निर्यात सौदों को ध्यान में रखा गया है।

72. यह देखा जाता है कि संबद्ध वस्तु के आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है जिसके परिणामस्वरूप भारी कीमत कटौती हुई है।

क्षति मार्जिन

उत्पादक	निर्यातक	घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत (रु./मी.ट.)	पहुंच मूल्य (रु./मी.ट.)	क्षति मार्जिन (रु./मी.ट.)	क्षति मार्जिन (%)
मै. मित्सुई कैमिकल आई एन सी, जापान	मित्सुई एंड कं. लि., जापान (एमबीके) और मित्सुई एंड क. (एशिया पेसिफिक) पीटीई. लि., सिंगापुर	***	***	***	50-60%
जापान से अन्य सभी निर्यातक	जापान से अन्य सभी निर्यातक	***	***	***	70-80%
मै. पी टी टी फेनोल कंपनी लि. थाईलैंड	मै. पीटीटी फेनोल कंपनी लि. थाईलैंड / मै. पीटीटी पब्लिक कंपनी लि., थाईलैंड	***	***	***	1-15%
मै. पीटीटी फेनोल कंपनी लि. थाईलैंड	मित्सुई एंड कं. लि., जापान (एमबीके) और मित्सुई एंड क. (एशिया पेसिफिक) पीटीई. लि., सिंगापुर	***	***	***	नकारात्मक
थाईलैंड से अन्य सभी निर्यातक	थाईलैंड से अन्य सभी निर्यातक	***	***	***	25-30

73. जांच अवधि के दौरान निविष्टि कीमतों, विशेष रूप से बेंजीन और प्रोपीलीन में भारी उत्तार-चढ़ाव पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत का निर्धारण जांच अवधि के प्रत्येक

नाह के लिए मासिक आधार पर किया गया है। क्षति मार्जिन संबंधी गणनाओं के प्रयोजनार्थ यथोक्त संबद्ध देशों से आयातों की पहुंच कीमतों की तुलना भारत में निर्यात किए जाने के दौरान के महीने के संबंध में क्षति रहित कीमत के साथ की गई है।

घरेलू उद्योग के अन्य आर्थिक मापदंडों की जांच

74. घरेलू उद्योग की मात्रा और कीमत तथा प्रमुख क्षति संबंधी संकेतकों जैसे आयातों की मात्रा और मूल्य, घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्रियों पर पाटित आयातों के प्रभाव तथा विभिन्न खंडों के बाजार हिस्सों के साथ मांग की प्रवृत्ति की पूर्ववर्ती भाग में जांच करने के पश्चात अन्य आर्थिक मापदंडों जिनसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति की मौजूदगी का संकेत मिल सकता है, का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है:

लाभ तथा नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित प्रभाव

	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि (9 माह)	जांच अवधि वार्षिकृत
बिक्री की लागत	रु./मी.ट.	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	84	88	77	77
बिक्री कीमत (एनएसआर)	रु./मी.ट.	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	102	94	73	73
लाभ/हानि	रु./मी.ट.	(***)	***	***	(***)	(***)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	1,233	335	(425)	(425)
करपूर्व लाभ/हानि	लाख रुपए	(***)	***	***	(***)	(***)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	1,315	335	(369)	(369)
पीबीआईटी	लाख रुपए	(***)	***	***	(***)	(***)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	8,056	2,396	(1,727)	(1,727)
नकद लाभ	लाख रुपए	(***)	***	***	(***)	(***)

75. प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में काफी गिरावट आई है। घरेलू उद्योग वर्ष 2006-07 से वित्तीय घाटे उठा रहा है। वर्ष 2007-08 में लाभप्रदता में पर्याप्त सुधार हुआ और कंपनी को उस अवधि में संबद्ध वस्तु की बिक्री पर लाभ हुआ। कंपनी की वित्तीय स्थिति इसके बाद से खराब हो गई और 2008-09

के दौरान लाभ में भारी गिरावट आई और तत्पश्चात जांच अवधि के दौरान उसे वित्तीय घाटे उठाने पड़े। जांच अवधि में उठाए गए वित्तीय घाटे आधार वर्ष के घाटों से अधिक रहे थे। घरेलू उद्योग के ब्याज और कर से पहले घरेलू बिक्रियों पर होने वाले लाभ (पी बी आई टी) और नकद लाभों में इसी तरह की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई।

निवेश पर आय और पूंजी जुटाने की क्षमता

	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि (9 माह)	जांच अवधि वार्षिकृत
पीबीआईटी	लाख रुपए	(***)	***	***	(***)	(***)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	8,056	2,396	(1,727)	(1,727)
निवल स्थिर परिसंपत्तियां	लाख रुपए	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	88	79	79	79
कार्यशील पूंजी	लाख रुपए	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	103	103	80	80
कार्यशील पूंजी	लाख रुपए	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	98	80	80
लगाई गई पूंजी पर आय (एन एफ ए आधार)	%	(***)	***	***	(***)	(***)

76. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा नियोजित पूंजी पर अर्जित आय में भी लाभप्रदता जैसी ही प्रवृत्ति दिखाई दी थी।

उत्पादकता

	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि (9 माह)	जांच अवधि वार्षिकृत
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी.ट.	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	108	83	83

77. प्रति कर्मचारी उत्पादकता संबंधी आंकड़े दर्शाते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में उनमें 17% तक की गिरावट आई ।

रोजगार तथा मजदूरी

	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि (9 माह)	जांच अवधि वार्षिकृत
रोजगार (मानव शक्ति)	सं.	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	103	97	97	97
मजदूरी	लाख रुपए	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	101	104	87	87

78. रोजगार के स्तर में कोई खास परिवर्तन प्रदर्शित नहीं हुआ है । सूचीबद्ध रूप में इसमें आधार वर्ष से जांच अवधि के दौरान 3% तक की गिरावट आई । मजदूरी जिसमें आधार वर्ष की तुलना में 2008-09 में 4% की वृद्धि हुई थी, जांच अवधि के दौरान उसमें गिरावट आई ।

माल सूची

	इकाई	2006-07	2007-08	2008-09	जांच अवधि (9 माह)	जांच अवधि वार्षिकृत
आरंभिक स्टॉक	मी.ट.	***	***	***	***	***
अंतिम स्टॉक	मी.ट.	***	***	***	***	***
औसत स्टॉक	मी.ट.	***	***	***	***	***
बिक्री दिवसों की स. की दृष्टि से औसत स्टॉक	सं.	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	53	55	68	68

79. संबद्ध वस्तु की मालसूची के स्तरों के बारे में सूचना उपर्युक्त तालिका में दी गई है । यह देखा जाता है कि संबद्ध वस्तु की माल सूची के स्तर में आधार वर्ष की तुलना में गिरावट आई है परंतु 2008-09 की तुलना में जांच अवधि में इसमें मामूली वृद्धि हुई है ।

वृद्धि

80. उत्पादन एवं क्षमता उपयोग में वृद्धि वर्ष 2008-09 तक सकारात्मक रही तथा वर्ष 2007-08 तक घरेलू बिक्री में स्थिति सकारात्मक रही । तथापि, जांच अवधि के दौरान इसमें भारी गिरावट आई और यह आधार वर्ष के स्तर से भी कम हो गई । आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि तक मांग में सकारात्मक वृद्धि होने के बावजूद उत्पादन एवं घरेलू बिक्री में घरेलू उद्योग की ऋणात्मक वृद्धि प्रदर्शित हुई है । जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में भारी गिरावट आई है । निवेश पर आय एवं नकद लाभ के संबंध में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन में भी गिरावट आई है । यह भी देखा गया है कि घरेलू उद्योग जांच अवधि के दौरान बिक्री लागत में हुई वृद्धि के अनुरूप अपनी बिक्री कीमत नहीं बढ़ा सका, जिससे कीमत पर अत्यंत हासकारी प्रभाव पड़ा । इसके अलावा, संबद्ध वस्तु के आयातों से घरेलू उद्योग की कीमत में भारी कटौती हो रही है । कम कीमत पर बिक्री भी काफी अधिक रही है ।

निवेश करने की क्षमता

81. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने आधार वर्ष से जांच अवधि तक संबद्ध वस्तु की क्षमता में कोई परिवर्तन नहीं किया था । जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा कोई नया निवेश नहीं किया गया है । आगे निवेश करने की किसी योजना का कोई साक्ष्य प्राधिकारी की जानकारी में नहीं आया है ।

पाटन की मात्रा

82. उस मात्रा जहां तक आयात घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा सकते हैं, के एक संकेतक के रूप में पाटन की मात्रा यह दर्शाती है कि संबद्ध देशों के विरुद्ध निर्धारित पाटन मार्जिन जांच अवधि के दौरान काफी अधिक रहा है ।

कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

83. पूर्ववर्ती पैराग्राफों में पहले ही यह देखा गया है कि आयातों से घरेलू कीमतों में कटौती हो रही है । घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत और बिक्री कीमत की तुलना यह दर्शाती है कि आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में भी कमी आ रही है । यह पाया गया था कि जांच अवधि में प्रति भी.ट. पहुंच मूल्य फेनोल निवल बिक्री कीमत और क्षति रहित कीमत दोनों से अधिक कम रहा था जिसके कारण भारतीय बाजार में कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री हुई थी । आयातित उत्पाद की कीमत और घरेलू उद्योग की कीमत के बीच कीमत अंतर के परिणामस्वरूप आयातों ने संबद्ध वस्तु की भारतीय मांग में हुई वृद्धि के अधिकांश हिस्से पर कब्जा जमा लिया ।

क्षति का विश्लेषण

84. उपर्युक्त क्षति संबंधी मापदंडों की जांच यह दर्शाती है कि मांग में समग्र वृद्धि के बावजूद आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्री दोनों में गिरावट आई है और जांच अवधि में घरेलू उद्योग के वित्तीय निष्पादन में भारी गिरावट आई है । तथापि, इस पहलू पर अंतिम जांच परिणाम में विस्तार से निष्कर्ष निकाला जाएगा ।

85. इस उत्पाद के आयातों और घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन की जांच से स्पष्ट रूप से यह पता चलता है कि विचाराधीन उत्पाद के आयातों में समग्र रूप से और भारत में उत्पादन तथा खपत की दृष्टि से भी वृद्धि हुई है । आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में भारी कटौती की जा रही है और पाटित कीमतों का प्रभाव बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों को कम करना रहा था । घरेलू बिक्री कीमतें बिक्री लागतों में हुई कमी से अधिक कम हुई हैं । इसके अलावा, भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा भारी कीमत कटौती की गई है और ऐसे आयातों के परिणामस्वरूप ऐसी कीमत वृद्धि नहीं हो पाई है जो अन्यथा महत्वपूर्ण स्तर तक बढ़ गई होती । घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव के संबंध में घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में बिक्री, उत्पादन, क्षमता उपयोग, बाजार हिस्सा, लाभ, नकद लाभ और निवेश पर आय की दृष्टि से आधार वर्ष की तुलना में गिरावट आई है । आयातों से घरेलू कीमतें प्रभावित हो रही हैं । यह भी नोट किया जाता है कि उत्पादन, बिक्रियों, लाभ और नियोजित पूँजी पर आय में मांग में वृद्धि के परिणामस्वरूप सुधार होना चाहिए था तथापि बजाए इसके इन सभी में भारी कमी आई है जिससे यह संकेत मिलता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति उठानी पड़ी है जैसा कि आधार वर्ष से आगे की प्रवृत्तियों में देखा जा सकता है । उपर्युक्त के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि घरेलू उद्योग को पाटनरोधी नियमावली के दायरे में काफी क्षति उठानी पड़ी है ।

कारणात्मक संबंध और अन्य कारक

86. वास्तविक क्षति की मौजूदगी और घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों द्वारा उनकी कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री और कीमत ह्रास तथा कीमत न्यूनीकरण प्रभावों तथा भारतीय नियमों और पाटनरोधी करार के अंतर्गत सूचीबद्ध अन्य सांकेतिक मापदंडों की दृष्टि से पड़ने वाले मात्रात्मक और कीमत प्रभावों की जांच यह देखने के लिए की गई है कि क्या पाटित आयातों से इतर किसी अन्य कारक से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है । इस संबंध में संगत कारकों में अन्य के साथ-साथ पाटित कीमतों पर नहीं बेचे गए आयातों की मात्रा और कीमतें मांग में संकुचन या खपत की प्रवृत्ति में परिवर्तन, व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं और विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी में विकास और घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन और उत्पादकता शामिल हैं । इस बात की जांच की गई थी कि क्या पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत सूचीबद्ध इन अन्य कारकों से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है । यह नोट किया गया था कि :

उन आयातों की मात्रा की कीमतें जिन्हें पाटित कीमतों पर नहीं बेचा गया था

87. आयात आंकड़ों से यह नोट किया जाता है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से लगभग 53% आयात हुए हैं और अन्य देशों, जिन पर पहले से पाटनरोधी शुल्क लागू है से 45% आयात हुए हैं । अन्य देशों, जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू नहीं है से हुए आयात केवल 2% रहे हैं अतः अन्य देशों से हुए आयातों से घरेलू बाजार की कीमतें प्रभावित नहीं हुई हैं ।

मांग में संकुचन और/या खपत की प्रवृत्ति में परिवर्तन

88. संबद्ध वस्तु की मांग में संपूर्ण क्षति जांच अवधि के दौरान एक रवस्थ वृद्धि देखी गई है और इसलिए घरेलू उद्योग को हुई क्षति का देश में मांग में कमी से कोई लेना-देना नहीं है । खपत और मांग संबंधी आंकड़े उत्पाद की खपत की प्रवृत्ति में कोई परिवर्तन नहीं दर्शाते हैं और यह घरेलू उद्योग को क्षति का कारक नहीं रहे हैं ।

व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं तथा विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच विवर

89. ये वस्तुएं मुक्त रूप से आयात योग्य हैं । आवेदक संबद्ध वस्तु के प्रतुद उत्पादक हैं और घरेलू उत्पादन और बिक्रियों में उनका पर्याप्त हिस्सा है । प्राधिकारी की जानकारी में प्रतिस्पर्धा की स्थिति या व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाओं का कोई साक्ष्य नहीं आया है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु का एकमात्र बाजार है, जहां संबद्ध देशों से हुए पाटित आयात घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु के साथ सीधे प्रतिस्पर्धा करते हैं । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि आयातित संबद्ध वस्तु और घरेलू रूप से उत्पादित वस्तु समान वस्तुएं हैं और आयातित उत्पाद की बिक्री घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तु के समान अनुप्रयोगों/अंतिम उपयोगों को पूरा करने के लिए की जाती है ।

प्रौद्योगिकी में विकास

90. याचिकाकर्ता के रिकॉर्डों की जांच के आधार पर प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचने का प्रस्ताव करते हैं कि प्रौद्योगिकी में विकास घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संगत कारण नहीं है ।

निर्यात निष्पादन

91. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग ने कोई निर्यात नहीं किया है । अतः विभिन्न आर्थिक संकेतकों के संबंध में कार्य निष्पादन को केवल घरेलू बिक्रियों की दृष्टि से निर्धारित किया गया है । इस प्रकार प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन के परिणामस्वरूप नहीं हो सकती है ।

घरेलू उद्योग की उत्पादकता

92. प्रति कर्मचारी उत्पादन के रूप में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान गिरावट प्रदर्शित हुई है जिसका कारण इस अवधि के दौरान कुल मांग में आई गिरावट है ।

93. ऐसा कोई अन्य कारक जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो, प्राधिकारी की जानकारी में नहीं लाया गया है ।

कारणात्मक संबंध से संबंधित निष्कर्ष

94. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि सूचीबद्ध ज्ञात अन्य कारकों से घरेलू उद्योग को हुई क्षति प्रदर्शित नहीं होती है, तथापि, निम्नलिखित मापदंड यह दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति पाटित आयातों के कारण हुई है:

- क. आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम रही थी । इसके परिणामस्वरूप कीमत कटौती हुई । उपभोक्ताओं ने आयातों की अधिक मात्रा का सहारा लिया । इस प्रकार घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई ।
- ख. बाजार हिस्से में गिरावट के कारण घरेलू उद्योग अपने उत्पादन और क्षमता उपयोग में वृद्धि नहीं कर पाया है ।
- ग. आयातों की पहुंच कीमत से घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हुई है । संबद्ध देशों से हुए आयातों के कारण भारतीय बाजार में कम कीमत पर बिक्री की गई है । परिणामस्वरूप अपेक्षाकृत कम आयात कीमतों के कारण घरेलू उद्योग अपनी कीमतों में वृद्धि नहीं कर सका है ।
- घ. आयातों के कीमत न्यूनीकरण प्रभाव के प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई है और परिणामस्वरूप निवेश पर आय और नकद प्रवाह में गिरावट आई । इस प्रकार लाभ, निवेश पर आय और नकद लाभों में गिरावट स्पष्ट रूप से बाजार में पाटित आयात में मौजूदगी के कारण आई है ।
- ड. जांच अवधि में घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में जबरदस्त गिरावट स्पष्ट रूप से बाजार में पाटित आयातों की मौजूदगी के कारण आई है ।

प्रकटन विवरण के संबंध में टिप्पणियां

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

95. घरेलू उद्योग ने प्रकटन विवरण के संबंध में निम्नलिखित टिप्पणियां की है :-

(क) क्षति रहित कीमत के निर्धारण और पहुंच मूल्य के साथ उसकी तुलना के संबंध में विस्तृत अनुरोधों पर विचार नहीं किया गया है ।

(ख) प्राधिकारी द्वारा निर्धारित क्षति रहित कीमत पर पुनर्विचार करने की जरूरत है क्योंकि इसके निर्धारण के लिए विचार किए गए विभिन्न व्यय का ठीक ढंग से आकलन नहीं किया गया है।

(ग) विचार की गई क्यूमिन कीमत में वे सभी व्यय शामिल किए गए प्रतीत नहीं होते हैं जिनके याचिकाकर्ता ने सामग्री की खरीद से संबंधित होने का दावा किया है। न ही याचिकाकर्ता के दावे को अस्वीकार करने का कोई कारण बताया गया है। उन्होंने दावा किया है कि ये सभी व्यय वस्तुतः सामग्री की खरीद से संबद्ध हैं और इनकी अवश्य अनुमति दी जानी चाहिए।

(घ) बट्टे को क्षति रहित कीमत की गणनाओं से घटाया नहीं जाना चाहिए क्योंकि बट्टे को निवल बिक्री कीमत और क्षति रहित कीमत से केवल इस कारण से घटाया जाता है कि बट्टा हटाकर निवल कीमत वह कीमत होती है, जिस पर कंपनी द्वारा वस्तु बेची गई है और यह उस कीमत को दर्शाती है जिसकी तुलना आयातित उत्पाद से की जानी चाहिए।

(ङ) कमीशन को पहुंच कीमत से बाहर रखा जाना चाहिए या विकल्पतः घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त कमीशन को क्षति रहित कीमत में जोड़ा जाना चाहिए।

(च) प्राधिकारी को प्रत्येक बिक्री शृंखला के लिए अलग-अलग पाटनरोधी शुल्क का उल्लेख किया है। निर्दिष्ट प्राधिकारी को पूरी बिक्री शृंखला बताई नहीं जा सकती है। फिर भी पूरी बिक्री शृंखला को शुल्क तालिका में नहीं दिया गया है।

(छ) उन्होंने शृंखला पर विचार किए बिना भारत को निर्यात के लिए उत्पादक द्वारा बेची गई सभी वस्तुओं के लिए संग्रहित या समग्र रूप से पाटन और क्षति मार्जिन के निर्धारण की मांग की है।

(ज) लागू किए जाने वाले शुल्क को अमरीकी डॉलर में व्यक्त शुल्क की स्थिर राशि के रूप में दर्शाया जाए।

प्राधिकारी द्वारा जांच

96. प्राधिकारी ने प्रकटन के उत्तर में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोधों की जांच करने के बाद उनका निम्नानुसार समाधान करने का प्रयास किया है।

(क) से (घ) प्राधिकारी इन अनुरोधों को नोट करते हैं और इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि क्षति रहित कीमत की गणना सही ढंग से सभी पाटनरोधी मामलों में प्राधिकारी द्वारा अपनाई जा रही संगत प्रथा के अनुक्रम में की गई है।

(ङ) इस पहलू पर पहले ही विचार किया गया है और एन ई पी आदि की गणना करते समय इसका समाधान किया गया है।

(च) और (छ) प्राधिकारी सभी पाटनरोधी जांचों में संगत रूप से संयोजित शुल्क लागू करने को अपनाते हैं और उन्होंने इस जांच में भी इसी सिद्धांत का पालन किया है ।

(ज) इसे प्राधिकारी द्वारा निर्णय लिए जाने के लिए छोड़ दिया जाना चाहिए ।

मित्सुई एंड कंपनी लि., जापान (एम बी के), मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पैसिफिक) पी टी ई लि., सिंगापुर, पी टी टी फेनोल कंपनी लि., थाइलैंड

97. इन्होंने प्रकटन विवरण के संबंध में निम्नलिखित टिप्पणियां की हैं:

क. इन्होंने यह आरोप लगाए हैं कि डी जी ए डी ने मित्सुई के डी जी ए डी को प्रस्तुत किए गए क्षति संबंधी अनुरोध और प्रारंभिक जांच परिणाम संबंधी टिप्पणियों तथा सार्वजनिक सुनवाई के बाद लिखित अनुरोधों, प्रत्युत्तरों और सत्यापन रिपोर्ट संबंधी टिप्पणियों की उपेक्षा की है । इसके अलावा, यह बताया गया है कि इन अनुरोधों में मित्सुई ने त्रुटिपूर्ण प्रक्रिया के संबंध में अनेक तर्क दिए थे और पाटन, क्षति तथा कारणात्मकता के संबंध में डी जी ए डी के विश्लेषण के लिए महत्वपूर्ण सूचना प्रदान की थी । मित्सुई प्राधिकारी से यह अनुरोध करना चाहती है कि वे वर्तमान जांच में अंतिम जांच परिणाम से पहले इन अनुरोधों का कृपया संदर्भ लें ।

ख. क्षति मार्जिन की गणना करने का आधार इस मामले में संवेदनशील है । तथापि, प्रकटन विवरण में निर्यातक के लिए ऐसा कोई अवसर नहीं दिया गया है और यह पर्याप्त सूचना निर्यातक द्वारा स्वयं का पक्ष रखे जाने से उसे वंचित कर देती है ।

ग. डी जी सी आई एंड एस से प्राप्त आंकड़ों की जानकारी मित्सुई को नहीं दी गई है ।

घ. यह आरोप लगाया गया है कि जांच की शुरूआत स्वयं ही त्रुटिपूर्ण है क्योंकि प्राधिकारी ने 6 महीने की जांच अवधि के आधार पर 11.8.2009 को यह जांच शुरू की थी और इस अवधि को कानूनी नियम का पालन किए बिना मनमाने ढंग से बढ़ाकर 9 माह कर दिया गया । जांच शुरूआत की त्रुटिपूर्ण प्रक्रिया इस संबंध में अनेक अन्य आरोप भी हैं ।

ङ प्रकटन विवरण के पैरा 37 में यह उल्लेख है कि अलग-अलग पाटन मार्जिन के लिए "मित्सुई कैमिकल आई एन सी >, मित्सुई एंड कंपनी लि. >, मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पैसिफिक) पी टी ई लि. > *** व्यापारी, अमरीका" संबंध पर विचार नहीं किया जा सकता है क्योंकि डेनमार्क एक अमरीकी कंपनी है और भारत में अंतिम आयातक नहीं है । तथापि, वर्तमान सौदों की प्रकृति में मित्सुई ने भारत से आयातक के रूप में *** पर विचार किया है । *** के पास भारत में स्वयं की वितरण सुविधाएं हैं । इसके अलावा, *** ने केवल अपने *** कार्यालय के जरिए *** खोला था । यह अनुरोध किया गया है कि इस बिक्री को वैध सौदे के रूप में शामिल किया जाना चाहिए और पाटन मार्जिन की विधिवत ढंग से पुनर्गणना की जानी चाहिए । मामले के तथ्यों में हितबद्ध पक्षकारों ने प्रश्नावली का उत्तर देते समय *** के जरिए

भारत को वास्तविक रूप से की गई पोतलदानों का प्रकटन किया है जबकि इन वस्तुओं को भारत में पोतलदान किया गया है और इस सौदे को *** के जरिए किया गया है । किसी भी प्रकार से माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी के पास डी जी सी आई एंड एस के आंकड़े हैं जिनसे वह भारत में की गई पोतलदानों का भारत में उनके पहुंचने की अंतिम कीमत पर सत्यापन कर सकते हैं । इस सूचना के आधार पर माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी को पहुंच मूल्य के प्रयोजनार्थ इस पर विचार करना चाहिए ।

(च) पैरा 53 में यह उल्लेख है कि "एन ई पी के निर्धारण के प्रयोजनार्थ बीजक सं. *** दिनांक *** और *** दिनांक *** को वसूल हुआ नहीं माना जाएगा क्योंकि सत्यापन के दौरान वे अलग-अलग वसूली प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने में विफल रहे हैं । इन दो पोतलदानों के संबंध में वसूली प्रमाण पत्र का दाता किए जाने वाले दस्तावेजों की प्रतियां सत्यापन के पश्चात प्रस्तुत की गई थीं तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि ये असत्यापित रिकॉर्ड का हिस्सा हैं और इसलिए इन पर विचार नहीं किया जा सकता है" । डी जी ए डी के अनुरोधों के अनुसार मित्सुई ने मौके पर सत्यापन के समय प्रस्तुत सत्यापन दस्तावेजों के साथ इन रिकार्ड (बैंक विवरण) को प्रस्तुत किया है जो सत्यापन दस्तावेजों का हिस्सा है और ये दस्तावेज स्पष्ट रूप से पक्षकार और निकासी की तारीख को दर्शाते हैं तथा सत्यापन प्रक्रिया के दौरान उनके द्वारा समीक्षा किए गए सभी शेष रिकॉर्डों के समान हैं । हम माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी के कार्यालय में प्रस्तुत की गई सत्यापन रिपोर्ट के संबंध में की गई टिप्पणियों के संबंध में अपने अनुरोधों को दोहराते हैं ।

(छ) डी जी ए डी द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के सत्यापन और मौके पर सत्यापन के बावजूद डी जी ए डी ने पाटन मार्जिन की स्वयं गणना की है जो बिल्कुल गलत और काफी अधिक है । मित्सुई स्पष्ट रूप से यह अनुरोध करता है कि वे भारत को इस उत्पाद का पाटन नहीं कर रहे हैं । मित्सुई आरंभिक लागत समायोजन पर पी टी टी फेनोल कंपनी लि. द्वारा किए गए अनुरोधों का समर्थन करता है और प्राधिकारी से पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 2.2.1.1 के उपबंधों के अनुरूप आरंभिक लागत समायोजन को लागू करते हुए सामान्य मूल्य की गणना करने का अनुरोध करता है । यदि प्राधिकारी कानून के अनुसार लागत संबंधी आरंभिक समायोजन की अनुमति देते हैं तो यह पर्याप्ततः स्पष्ट हो जाएगा कि मित्सुई न तो उत्पाद का पाटन कर रहा है और न ही आवेदक को क्षति पहुंचा रहा है ।

(ज) यह बिल्कुल गलत और अस्पष्ट है कि किस प्रकार से "मित्सुई कैमिकल आई एन सी >, मित्सुई एंड कंपनी लि. >, मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पैसिफिक) पी टी ई लि. > भारतीय उपभोक्ता" के संबंध में पाटन मार्जिन में जबर्दस्त वृद्धि दर्शायी गई है । प्राधिकारी का यह दायित्व है कि वे गणनाओं का तर्कसंगत आधार उपलब्ध कराएं ।

(झ) माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी ने नियोजित पूँजी पर आय की गणना करते समय नियोजित पूँजी पर 22% की आय उपलब्ध कराने पर विचार किया है । इस संबंध में माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी को 2004 (170) ई एल टी 144 में उल्लिखित भारतीय स्पिनर्स एसोसिएशन बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी मामले में सेस्टेट द्वारा दिए गए निर्णय पर विचार करना

चाहिए और इस पर ऐतिहासिक लाभप्रदता के आधार पर विचार करना चाहिए और उसे स्वीकार करना चाहिए। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी 2006 (202) ई एल टी 23 (एस सी) में यह माना था कि क्षति की गणना "समग्र रूप से घरेलू उद्योग" के लिए करनी होगी। घरेलू उद्योग का चुनिन्दा रूप से भाग लेना और गठन स्पष्ट रूप से याचिकाकर्ता अर्थात् एच ओ सी एल के इरादे को दर्शाता है जो समग्र रूप से प्रभावित उद्योग की वास्तविक स्थिति का खुलासा करने की पारदर्शिता से उभरा है। अन्य उत्पादक अर्थात् सेनेकटेडी हरदेलिया लि. की अनुपस्थिति प्रभावशाली प्रचालनों के मद्देनजर माननीय प्राधिकारी को अपने आंकड़े उपलब्ध कराए बिना याचिकाकर्ता का समर्थन करने तक सीमित है जिससे समग्र रूप से घरेलू उद्योग की स्थिति का स्पष्टतः पता लगता है।

(ट) यह भी अनुरोध किया जाता है कि माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी को क्षति मार्जिन की गणना का पुनः सत्यापन किया जाना चाहिए। बाजार आसूचना के आधार पर हितबद्ध पक्षकारों की पहुंच लागत थाइलैंड के अन्य सहयोगी निर्यातकों की तुलना में काफी अधिक है। इसके मद्देनजर क्षति मार्जिन यदि कोई हो, हितबद्ध पक्षकार के लिए नयूनतम होना चाहिए और तदनुसार पाटनरोधी शुल्क यदि काई हो, की सिफारिश की जानी चाहिए।

(ठ) यह अनुरोध किया जाता है कि प्राधिकारी से प्राप्त गणनाओं के अनुसार मित्सुई कैमिकल आई एन सी की ओर से किए गए आयातों की पहुंच कीमत काफी अधिक है। वस्तुतः मित्सुई कैमिकल आई एन सी की ओर से किए गए निर्यातों का पहुंच मूल्य पी टीटी फेनोल कंपनी लि. की ओर से किए गए निर्यातों के पहुंच मूल्य से अधिक है। यह बिल्कुल अस्पष्ट है कि क्यों क्षति मार्जिन, जो पहुंच मूल्य और याचिकाकर्ता की क्षति रहित कीमत की तुलना होता है, "मित्सुई कैमिकल आई एन सी >, मित्सुई एंड कंपनी लि. >, मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पैसिफिक) पी टी ई लि. > भारतीय उपभोक्ता, संबंध इस संपर्क के जरिए उच्चतर पहुंच मूल्य के बावजूद काफी अधिक है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

98. प्राधिकारी ने यथोक्त टिप्पणियों की जांच की है और वह प्रत्येक उठाए गए मुद्दे का निम्नानुसार समाधान करने का प्रयास करते हैं :

क. यह एक व्यापक विवरण है जिसका कोई आधार नहीं है। प्राधिकारी ने जांच की प्रक्रिया के दौरान सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए सभी अनुरोधों पर विचार किया है और प्रकटन विवरण जारी करने से पहले उन सभी का पर्याप्त ढंग से समाधान किया है। यदि कोई विशिष्ट मुद्दा उपेक्षित रह गया है तो यह हितबद्ध पक्षकार का दायित्व है कि वह उस पर ध्यान दिलाए। तथापि, उन्होंने ऐसे किसी मुद्दे पर ध्यान नहीं दिलाया है जिस पर प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण जारी करने से पहले ध्यान न दिया हो।

ख. क्षति मार्जिन की गणना घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत और निर्यातक की पहुंच कीमत के बीच अंतर के रूप में की गई है। पहुंच कीमत ज्ञात करने की गणना पुनः उपलब्ध

कराई गई है । इसके अलावा, क्षति रहित कीमत निर्धारित करने की पद्धति का ब्यौरा स्पष्ट किया गया है । वे प्राधिकारी से क्षति रहित कीमत के निर्धारण में विचार किए गए घरेलू उद्योग के गोपनीय आंकड़ों को उपलब्ध कराने की आशा नहीं कर सकते हैं । प्रकटन विवरण में यह भी स्पष्ट किया गया है कि क्षति रहित कीमत उचित तुलना के लिए पहुंच कीमत एन ई पी और सामान्य मूल्य के समतुल्य आधार पर मासिक रूप से ज्ञात की गई है । अतः यह टिप्पणियां अनावश्यक हैं ।

ग. इस तथ्य पर विचार करते हुए प्राधिकारी की यह प्रथा नहीं है कि वे डी जी सी आई एंड एस के आंकड़े सार्वजनिक क्षेत्र में रखें कि प्राधिकारी के पास उपलब्ध सौदावार आंकड़ों में आयातकों और निर्यातकों के संबंध में गोपनीय सूचना होती है । तथापि, प्राधिकारी इस सूचना के केवल गोपनीय अंश को अपने पास रखकर मांग किए जाने पर इन आंकड़ों को उपलब्ध कराते हैं । उनके द्वारा इन आंकड़ों को उपलब्ध कराए जाने की कोई मांग कभी नहीं की गई है । इसके अलावा, मात्रात्मक विश्लेषण में यह ब्यौरे पहले ही उपलब्ध कराए गए हैं ।

घ. इस संदर्भ में प्राधिकारी उन पाटनरोधी नियमों, जिनका वर्तमान मामले में उल्लंघन किया गया था, के संगत प्रावधानों को उद्धरित किए जाने के लिए कहने के समय प्रतिवादी निर्यातकों के विधिक प्रतिनिधि के साथ हुए ई-मेल के आदान-प्रदान का हवाला देते हैं । उक्त कानूनी सलाहकार ने ई-मेल उत्तर में पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 का संदर्भ दिया था । अपने तर्कों का निष्कर्ष देते समय विधिक प्रतिनिधि ने निम्नानुसार बताया था :

पूर्वोक्त नियम के अनुसार शब्द "पर्याप्त सूचना" पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध के संबंध में आंकड़ों से संबंधित हैं जिन्हें पर्याप्त और सही समझा गया है तथा जिनके आधार पर जांच अवधि के लिए जांच की शुरुआत की गई है । जांच अवधि अक्टूबर, 08 से जून, 09 तक है अतः इस सीमा तक पर्याप्त सूचना नियम 6(2) के अंतर्गत यथाउल्लिखित हितबद्ध पक्षकार को प्रस्तुत नहीं की गई है जिसे ऊपर पुनः प्रस्तुत किया गया है ।

इसके आलोक में माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी को को समस्त अगोपनीय सूचना हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध करानी चाहिए जो जांच शुरुआत का आधार बनी हो और उसमें जांच की बढ़ाई गई अवधि अर्थात् अप्रैल से जून, 2009 के लिए अतिरिक्त सूचना शामिल होनी चाहिए ।

दूसरे शब्दों में (क) जांच शुरुआत का आधार बनने वाली सूचना हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध नहीं कराई गई है; (ख) जांच अवधि के बढ़े हुए हिस्से के आंकड़ों को गोपनीय नहीं रखा जा सकता है इसलिए पाटन और क्षति दोनों को विश्लेषण अधूरा है । (ग) माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी हितबद्ध पक्षकारों से जांच अवधि के लिए आंकड़े प्रस्तुत करने का अनुरोध नहीं कर सकते हैं जबकि याचिकाकर्ताओं ने स्वयं इन आंकड़ों को उपलब्ध नहीं कराया है जिन पर नई जांच अवधि में सही और पर्याप्त रूप से विचार किया गया है ।

अपेक्षित सूचना सभी हितबद्ध पक्षकारों को बाद में उपलब्ध कराई गई थी अतः यह मामला यहां समाप्त हो जाता है । तथापि, स्पष्टता और पारदर्शिता के लिए प्राधिकारी सभी

संबंधित लोगों की जानकारी में इस बात को लाना चाहते हैं कि याचिका प्रस्तुत करते समय घरेलू उद्योग ने 6 माह की जांच अवधि के आधार पर जांच की शुरूआत की मांग की थी । प्राधिकारी ने इसकी जांच की थी और वह इस बात से सहमत थे कि प्रथम दृष्टया पाटन साबित होता है और घरेलू उद्योग को क्षति तथा इन दोनों के बीच कारणात्मक संबंध भी साबित होता है । तथापि, प्राधिकारी का यह विचार था कि अंतिम निर्धारण हेतु 6 महीने की अवधि काफी कम होगी और उन्होंने संशोधित जांच अवधि को विनिर्दिष्ट कर कर उसे तीन और महीनों के लिए बढ़ाकर 9 माह की अवधि विनिर्दिष्ट की है । संशोधित जांच अवधि का विश्लेषण प्रारंभिक जांच परिणाम, में किया गया है, प्रकटन विवरण और अंतिम जांच परिणाम दस्तावेज अब जारी किए जा रहे हैं । प्राधिकारी दोहराते हैं कि नियम 6 का कोई उल्लंघन नहीं हुआ है जैसा कि हितबद्ध पक्षकार ने ऊपर तर्क दिया है ।

(ङ) इन ब्यौरों पर सत्यापन रिपोर्ट और प्रकटन विवरण में पर्याप्त रूप से ध्यान दिया गया है और इन्हें आगे और स्पष्ट करने की जरूरत नहीं है ।

(च) इसके आधार पर इन अंतिम जांच निष्कर्षों में उनके अनुरोधों को समुचित रूप से स्वीकार करके शामिल किया गया है ।

(छ) आरंभिक लागत पर किसी समायोजन की अनुमति नहीं देने के ब्यौरे पर प्रकटन विवरण में विस्तृत रूप से ध्यान दिया गया है और इसे आगे और स्पष्ट करने की जरूरत नहीं है ।

(ज) एन ई पी की गणना सीटों को पहले ही उन्हें उपलब्ध करा दिया गया है और इसलिए यह आरोप अस्पष्ट और अनावश्यक है । वे एन ई पी के धारक हैं और तत्संबंधी गणनाएं उन्हें उपलब्ध कराई गई हैं ।

(झ) निवेश पर आय की अनुमति सभी मामलों में प्राधिकारी द्वारा पालन की जाने वाली संगत प्रक्रिया के अनुसार दी गई है । कोई चुनिन्दा भागीदारी नहीं हुई है । प्राधिकारी ने समर्थक जिसने आंकड़े उपलब्ध कराए बिना केवल याचिका का समर्थन करना चाहा है, से ब्यौरे लेने के अपने दायित्व को पूरा किया है । इसके अलावा, प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के कार्यक्षेत्र के भीतर घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त आंकड़ों के आधार पर जांच की है ।

(ट) इसमें किसी टिप्पणी की जरूरत नहीं है क्योंकि प्राधिकारी के लिए तब बाजार आसूचना पर भरोसा करने की जरूरत नहीं है जब प्रतिवादी निर्यातक द्वारा प्रस्तुत सत्यापित आंकड़े उपलब्ध हों ।

(ठ) वे माह-वार पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन के निर्धारण का संदर्भ ले सकते हैं जैसा कि उनके द्वारा अनुरोध किया गया और प्राधिकारी द्वारा स्वीकार किया गया है क्योंकि जांच अवधि के दौरान महीनावार आधार पर निविष्टियों की कीमत में काफी उतार चढ़ाव हो रहा था और प्रकटन विवरण में इसे पर्याप्त रूप से स्पष्ट किया गया है ।

मित्सुई कैमिकल आईएन सी जापान की टिप्पणियां

99. इस उत्पादक, जिसने जापान में उत्पादन लागत और घरेलू बिक्री के संबंध में आंकड़े उपलब्ध कराकर जांच में हिस्सा लिया था और भारत को कोई सीधी निर्यात बिक्रियां नहीं की थीं, ने प्रकटन विवरण के संबंध में निम्नलिखित टिप्पणियां प्रस्तुत की हैं :

(क) यह दोहराया जाता है कि उत्पादक के लिए सामान्य मूल्य भौके पर कीमतों के आधार पर निर्धारित किया जाना चाहिए और न कि संविदा कीमतों के आधार पर ।

(ख) प्रकटन विवरण में यह उल्लेख किया गया है कि चूंकि व्यापारी मै. हरेश पैट्रोकैम सिंगापुर पी टी ई लि. द्वारा कोई उत्तर प्रस्तुत नहीं किया गया है, इसलिए मै. मित्सुई कैमिकल आई एन सी (एम सी आई) मित्सुई एंड कंपनी लि., जापान, एम बी के, मित्सुई एंड कंपनी (एशिया पैसिफिक) पी टी ई लि. सिंगापुर वाली शृंखला के लिए अलग-अलग पाटन मार्जिन का निर्धारण नहीं किया गया था । यह अनुरोध किया गया है कि इस मामले में अपनाई गई पद्धति इंडोनेशिया, कोरिया, मलेशिया और ताइवान से एफ डी वाई मामले और अंडोन दृढ़ी अरब और सिंगापुर मामले में प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया के विपरीत है जिसमें समान परिस्थितियों में सहयोगी उत्पादक-निर्यातक शृंखला के लिए अलग-अलग मार्जिन तब भी निर्धारित किया गया था जबकि इनमें से एक व्यापारी ने उत्तर प्रस्तुत नहीं किया था । उत्पादक को इस बात का भी कोई कारण नहीं पता चला है कि सहयोगी उत्पादक-निर्यातक शृंखला को अलग-अलग पाटन मार्जिन के निर्धारण से वर्तमान मामले में क्यों वंचित रखा गया है । अतः उत्पादक निर्दिष्ट प्राधिकारी से ऊपर यथाउल्लिखित सहयोगी उत्पादक निर्यातक शृंखला के लिए अलग-अलग पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए अनुरोध करता है ।

(ग) यह अनुरोध किया गया है कि स्थिर लागत में वृद्धि और कम उत्पादन के कारण बिक्री लागत में वृद्धि के संबंध में प्रकटन विवरण में कोई विश्लेषण नहीं किया गया है । घरेलू उद्योग को क्षति के एक कारण के रूप में वैश्विक मंदी के तथ्य के विश्लेषण के लिए भी कोई विश्लेषण नहीं हुआ है । हम प्राधिकारी से अंतिम जांच परिणाम में इन कारकों का विश्लेषण करने का अनुरोध करते हैं । इस तथ्य का भी कोई विश्लेषण नहीं किया गया है कि पहले से पाटनरोधी शुल्क लागू देशों से जांच अवधि में लगभग 75 प्रतिशत का आयात किया गया है जो संबद्ध देशों से आयात से अधिक है । हम प्राधिकारी से अंतिम जांच परिणामों में इन कारक का विश्लेषण करने का अनुरोध करते हैं ।

(घ) अन्य घरेलू उत्पादक के बाजार हिस्से का कोई विश्लेषण नहीं किया गया है जबकि क्षति जांच अवधि के दौरान इसमें वृद्धि हुई है । इससे स्पष्टतः संकेत मिलता है कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट इस तथ्य के कारण आई है कि उस पर अन्य घरेलू उत्पादकों द्वारा कब्जा कर लिया गया है और पाटित आयातों के कारण ऐसा नहीं हुआ है ।

(ङ) यह अनुरोध किया गया है कि घरेलू उद्योग और समर्थक उत्पादक के मात्रा संबंधी आंकड़े गोपनीय रखे गए हैं जबकि विभिन्न अन्य जांचों में उनका अनन्य रूप से प्रकटन किया गया है ।

(च) प्रकटन विवरण में यह उल्लेख किया गया है कि संबद्ध वस्तु का पहुंच मूल्य आधारभूत सीमाशुल्क के निर्धारण हेतु 1% पहुंच प्रभार जोड़कर और तत्पश्चात् संबद्ध देशों से निर्यात/सीआईएफ कीमत में इस आधारभूत सीमाशुल्क को जोड़कर निर्धारित किया गया है । यह अनुरोध किया जाता है कि पहुंच मूल्य की गणना करने समय सीमाशुल्क शिक्षा उपकर (सी ई सी) पर विचार नहीं किया गया है जबकि सी ई सी भी मूल सीमाशुल्क का एक हिस्सा होता है और इसलिए इसे पहुंच मूल्य में शामिल किया जाना चाहिए ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

100. प्राधिकारी ने यथोक्त टिप्पणियों की जांच की है और अलग-अलग उठाए गए प्रत्येक मुद्दे का निम्नानुसार समाधान किया है :-

(क) सामान्य मूल्य का निर्धारण उत्तर में यथाइंगित वास्तविक बिक्री कीमत को लेकर किया गया है जो प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया के अनुरूप है । इसके अलावा, सभी समायोजनों की उनके दावों के अनुसार अनुमति दी गई है ।

(ख) इसके आधार पर इन अंतिम जांच निष्कर्षों में उनके अनुरोध को समुचित रूप से स्वीकार करके शामिल किया गया है ।

(ग) और (घ) पाटनरोधी नियमावली में यथानिर्धारित अपेक्षित मापदंडों के भीतर क्षति संबंधी विश्लेषण किया गया है ।

(ङ) उत्पादन, क्षमता और क्षमता उपयोग संबंधी सूचना का प्रकटन पहले ही कर दिया गया है । बिक्री मात्राओं की घोषणा उचित सूचीबद्ध प्रपत्र में की गई है ।

(च) इस बात की पुष्टि की जाती है कि शिक्षा उपकर को पहुंच मूल्य को गणनाओं में शामिल किया गया है ।

सुमितोमो कार्पोरेशन की टिप्पणियां

101. उन्होंने यह दावा किया है कि उन्हें प्रकटन विवरण के लिए टिप्पणियां प्रस्तुत करने हेतु उपयुक्त समय नहीं दिया गया है । इसके अलावा, उन्होंने अलग-अलग पाटन मार्जिन की मांग की है और प्रकटन विवरण संबंधी उनकी टिप्पणियों का उनका सारांश निम्नानुसार दिया जा सकता है :

- (i) नियम 17(3) में डी जी ए डी के लिए प्रत्येक ज्ञात "निर्यातक" के लिए अलग-अलग पाटन मार्जिन निर्धारित करना अपेक्षित है ।
- (ii) निर्यात कीमत भारत को बिक्री की कीमत या भारत को निर्यात की बिक्री की कीमत हो सकती है ।
- (iii) जापान के लिए निर्धारित सामान्य मूल्य अवैध है क्योंकि सुमितोमो द्वारा बताई गई घरेलू बिक्रियों की उपेक्षा की गई है ।
- (iv) सुमितोमो जिसने डी जी ए डी के साथ पूरा सहयोग किया है, को अन्य "असहयोगी" निर्यातकों के साथ शामिल नहीं किया जाना चाहिए ।
- (v) डी जी ए डी की कार्रवाई डी जी ए डी की पूर्ववर्ती प्रक्रिया से संगत नहीं है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

102. प्राधिकारी उपर्युक्त टिप्पणियों को नोट करते हैं और उनका यह निष्कर्ष है कि किसी सहयोगी निर्यातक की निर्यात कीमत पर विचार करना प्राधिकारी की सामान्य प्रक्रिया है बशर्ते कि इस कीमत की पूरी श्रृंखला उपलब्ध हो और सभी निर्यातक/व्यापारी या तो उत्तर दें या आंकड़े उपलब्ध कराएं ताकि भारत में वस्तुओं के पहुंचने का अंतिम मूल्य निर्धारित किया जा सके । प्राधिकारी निर्यातकों को एजेंटों या व्यापारियों के जरिए व्यापार करने के लिए बाध्य नहीं करते हैं । यह प्रत्येक कंपनी का व्यावसायिक निर्णय होता है जैसा कि प्रकटन विवरण में पहले ही ब्यौरा दिया गया है । सुमितोमो भारत को सीधे निर्यात नहीं करते बल्कि एक व्यापारी के जरिए निर्यात करते हैं । उस व्यापारी ने उत्तर नहीं दिया था और न ही सुमितोमो ने इस संबंध में ब्यौर उपलब्ध कराए थे कि भारत में विचाराधीन उत्पाद को अंतिम व्यापारी ने किस कीमत पर बेचा था । वस्तुतः सुमितोमो भी एक व्यापारी की तरह कार्य कर रहे हैं और न कि एक विनिर्माता की तरह । ऐसे मामले में जहां पूरी श्रृंखला उपलब्ध नहीं है वहां यह दायित्व प्रतिवादी हितबद्ध पक्षकार का होता है कि वह ब्यौरे उपलब्ध कराए ताकि प्राधिकारी अलग-अलग निर्धारण हेतु उन पर विचार कर सके । अतः सुमितोमो का अनुरोध निराधार है । उद्धरित नियम ऐसे ज्ञात निर्यातक के संदर्भ में है जिसने उत्तर दिया हो और आपूर्ति की पूरी श्रृंखला बताई हो परंतु यहां मामला ऐसा नहीं है । एक ज्ञात निर्यातक ही असहयोगी हो सकता है और संदर्भित नियम में ऐसे असहयोगी निर्यातक के लिए अलग पाटन मार्जिन उपलब्ध कराने का प्रावधान नहीं है । वस्तुतः अलग-अलग पाटन मार्जिन के प्रयोजनार्थ ज्ञात निर्यातक शब्दों को सही ढंग से उद्धरित नहीं किया गया है । जहां तक अवैध सामान्य मूल्य का संबंध है, संबद्ध हितबद्ध पक्षकार ने इस बात का आभास किए बिना कि सामान्य मूल्य निर्यातक विशिष्ट होता है और न कि देश विशिष्ट, इस शब्दावली का प्रयोग किया है । इसके अलावा, सुमितोमो ने उत्पादकों से खरीदने के बाद घरेलू बाजार में बिक्री की है और प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए उत्पादक के पास जाने के आधार को संगत रूप से अपनाया है और न कि निर्यातक के पास जाने को, क्योंकि वह एकल नहीं होता है और वर्तमान मामले में भी इसी तर्कधार को लाया गया है । इस तर्कधार के पीछे व्यक्ति यह सुनिश्चित करना है कि उत्पादन लागत के साथ उचित तुलना की जाए और नियमों में प्राधिकारी के लिए यह सुनिश्चित करने के बाद इस पर विचार करना अधिदेशित है कि ये बिक्रियां व्यापार की सामान्य प्रक्रिया संबंधी परीक्षण पर खरी उतरें । चीनी टाइपेई आदि से एसीटोन के आयात के

सुमित्रोमो के पूर्ववर्ती मामले में प्राधिकारी के लिए रिलायंस संबंधी निर्णय के अनुक्रम में देशवार सामान्य मूल्य निर्धारित करना अपेक्षित था। सभी निर्यातकों के लिए अलग सामान्य मूल्य निर्धारित करने संबंधी अधिनियम में संशोधन के आलोक में सभी निर्यातकों के लिए अलग-अलग सामान्य मूल्य निर्धारित किया गया है, इसकी गणना उत्पादक आधार पर करनी होती है जैसा कि पहले ही स्पष्ट किया गया है तथा यह वर्तमान मामले में नहीं किया जा सकता है क्योंकि मित्सुबिसी आंकड़े उपब्य कराने में विफल रहे हैं। पहुंच कीमत के संबंध में इसकी गणना शिक्षा उपकर को जोड़े जाने के बाद की गई है।

सिफारिशें

103. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरुआत की गई थी और उसकी सूचना सभी हितबद्ध पक्षकारों को दी गई थी तथा निर्यातकों, आयातकों एवं अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के पहलुओं के बारे में सकारात्मक सूचना प्रदान करने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। निर्धारित नियमावली के अनुसार पाटन, क्षति एवं घरेलू उद्योग को पाटन तथा क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की जांच शुरू करने और करने के बाद तथा संबद्ध देशों के विरुद्ध सकारात्मक पाटन मार्जिन और ऐसे पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति का निर्धारण करने के बाद प्राधिकारी का यह विचार है कि जांच के पूरा होने तक पाटन और क्षति की क्षतिपूर्ति करने के लिए अंतिम शुल्क लगाया जाना अपेक्षित है। अतः प्राधिकारी यह आवश्यक समझते हैं और संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों पर नीचे उल्लिखित प्रक्रिया और तरीके से अंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं।

104. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन जो भी कम हो, के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके। तदनुसार संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से निम्नलिखित तालिका के कालम 9 में उल्लिखित राशि के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है।

शुल्क तालिका

क्र.सं.	टैरिफ मद का उप शीर्ष	वस्तु का विवरण	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क तालिका	माप की इकाई	मुद्रा
1.	2.	3	4	5.	6.	7.	8	9.	10.
1.	2907.1110 तथा 2707.9900	फेनोल	थाइलैंड	थाइलैंड	मै. पी टी टी फेनोल कंपनी लिमिटेड थाइलैंड/मै. पी टी टी पब्लिक कंपनी लिमिटेड	मै. पी टी टी फेनोल कंपनी लिमिटेड थाइलैंड/मै. पी टी टी पब्लिक कंपनी लिमिटेड	10.03	मी.ट.	अम.डा.

2.	वही	वही	थाइलैंड	थाइलैंड	मे. पी टी टी फेनोल कंपनी लिमिटेड थाइलैंड	मित्सुई एंड कंपनी लि., जापान (एम बी के) तथा मित्सुई एंड कं. (एशिया पेसिफिक) पीटीई.लि., सिंगापुर	NIL	मी.ट.	अम.डा.
3.	वही	वही	थाइलैंड	थाइलैंड	उपरोक्त क्र. सं. 1 तथा 2 से इतर कोई अन्य संयोजन	172.53	मी.ट.	अम.डा.	
4.	वही	वही	थाइलैंड	सिंगापुर, अमरीका, द. अफ्रीका, ई यू., कोरिया गण., जापान से इतर कोई	कोई	कोई	172.53	मी.ट.	अम.डा.
5.	वही	वही	सिंगापुर, अमरीका, द. अफ्रीका, ई यू., कोरिया गण., जापान से इतर कोई	थाइलैंड	कोई	कोई	172.53	मी.ट.	अम.डा.
6.	वही	वही	जापान	जापान	मे. मित्सुई कैमिकल इंक., जापान (एम सी आई)	मित्सुई एंड कंपनी लि., जापान (एम बी के) तथा मित्सुई एंड कं. (एशिया पेसिफिक) पीटीई.लि., सिंगापुर	468.17	मी.ट.	अम.डा.
7.	वही	वही	जापान	जापान	उपरोक्त क्र.सं 6 से इतर अन्य कोई संयोजन	547.03	मी.ट.	अम.डा.	
8.	वही	वही	जापान	सिंगापुर, अमरीका, द. अफ्रीका, ई यू., कोरिया गण., थाइलैंड से इतर कोई	कोई	कोई	547.03	मी.ट.	अम.डा.
9.	वही	वही	सिंगापुर, अमरीका, द. अफ्रीका, ई यू., कोरिया गण., थाइलैंड से इतर कोई	जापान	कोई	कोई	547.03	मी.ट.	अम.डा.

105. उपर्युक्त के अधीन दिनांक 3 फरवरी, 2010 की अधिसूचना द्वारा अधिसूचित अनंतिम जांच परिणामों की एतद्वारा पुष्टि की जाती है ।

आगे की प्रक्रिया

106. इस सिफारिश से उत्पन्न होने वाले केन्द्र सरकार के आदेशों के विरुद्ध कोई अपील अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क तथा सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

107. प्राधिकारी यहां यथाअनुशंसित निश्चयात्मक उपाय को जारी रखने, उनमें संशोधन करने या उन्हें समाप्त करने की आवश्यकता की इस अधिनियम के संगत प्रावधानों और इस संबंध में समय-समय पर जारी सार्वजनिक सूचनाओं के अनुसार समय-समय पर समीक्षा कर सकते हैं। प्राधिकारी द्वारा ऐसी किसी समीक्षा हेतु किसी अनुरोध पर विचार नहीं किया जाएगा यदि वह किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा इस प्रयोजनार्थ निर्धारित समयावधि के अनुसार प्रस्तुत नहीं किया जाता है।

पी. के. चौधरी, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 8th October, 2010

Final Findings

Subject : Anti-Dumping Investigations Concerning imports of Phenol originating in or exported from Japan and Thailand—Disclosure Statement.

No. 14/27/2009-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti- Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, (hereinafter referred as Rules) 1995 thereof;

Initiation

2. The Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time, (hereinafter referred to as 'the Act') and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Duty or Additional Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, as amended from time to time, (hereinafter referred to as 'the AD Rules'), received a written application from M/s Hindustan Organic Chemicals Ltd., Mumbai, supported by M/s SI Group-India Ltd., Mumbai (formerly known as Schenectady Herdillia Limited) on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Phenol (hereinafter referred to as subject goods); originating in or exported from Japan and Thailand (hereinafter also referred to as the subject countries).

3. Having been satisfied on the basis of positive evidence submitted by the domestic industry, the Authority vide Notification No.14/27/2009-DGAD dated 11th August 2009 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiated Anti-dumping Investigation of concerning imports of Phenol, originating in or exported from Japan and Thailand.

Procedure

4. The procedure described herein below has been followed:

- i. The Authority notified the Embassies/Representatives of the subject countries in India about the receipt of dumping application made by the petitioner before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;
- ii. The Designated Authority sent copies of initiation notification dated 11.08.2009 to the Embassies of the subject countries in India, known exporters from the subject countries, importers, consumers and the domestic industry as per the addresses made available by the applicant and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.
- iii. The Authority provided copies of the non-confidential version of the application to the known exporters and to the Embassies of subject countries in accordance with Rule 6(3) supra.
- iv. The Embassies of the subject countries in India were informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter and questionnaire sent to the exporters were also sent to them, along with the names and addresses of the exporters.
- v. The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information to the following known exporters in subject countries in accordance with Rule 6(4).

PTT Phenol Co., Ltd. (PPCL) 123 Suntowers Building B, 36th Floor, Vibhavadi Rangsit Road Chomphon Chatuchak, Bangkok 10900	Chiba Phenol Co. Ltd. Shiodome City Center, 1-5-2, Higashishimbashi, Japan
Mitsubishi Chemical 14-1 Tokyo 108-0014, Japan Shiba 4-chome, Minato-ku,	

vi. In response to the above notification, following exporters/ producers/ have responded to the initiation:

Name of Interested party	Country
PTT Phenol Company Limited, Producer & Exporter	Thailand
Mitsui & Co., Ltd. ("MBK"), Japan, Exporter	Japan
M/s. Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Limited, Singapore, Exporter	Singapore
Mitsubishi Chemical Corporation ("MCC")	Japan
Sumitomo Corporation, Exporter	Japan
Sumitomo Corporation Asia Pte Ltd	Singapore
Mitsui Chemicals, Inc., Producer	Japan

vii. Questionnaire was sent to the following known importers and Consumers of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4). However, no questionnaire response has been received from any importer of the subject goods.

M/s. C.J. Shah and Company 105, Bajaj Bhawan 10th Floor, Nariman Point Mumbai- 400021.	M/s. Haresh Kumar and Company 1212, Maker Chambers 5 Jamnalal Bajaj Road, Nariman Point , Mumbai-400021.
M/s. PCL Industries b M-105, Connaught Place New Delhi-110001	M/s. Kantilal Manilal and Company 16, Princess Street Mumbai-400003.
Sonkamal Enterprises 10, Dev Darshan Apartment Old Nagardas Road Andheri (East) Mumbai-400069	M/s. Khetan Brothers C-17, Dalia Industrial Area Off New Link Road, Opposite Laxmi Industrial Estate Andheri (West) Mumbai-400058

M/s. Shubham Dyes & Chemicals Limited 1/26, Roop Nagar, Delhi 110007	Acron Enterprises Plot No. 218-219/3, G.I.D.C, Naroda, Ahmedabad Pin Code- 382330, Gujarat.
M/s. Naiknavare Chemicals Limited 1, Vidya Bhavan, 121, Keluskar Road, Shivaji Park, Dadar (West) Mumbai (Maharashtra).	M/s. Paras Dyes & Chemicals 12th Floor, Vijaya Building 17 Barakhamba Road, New Delhi-110001
M/s. Torrent Pharmaceuticals Limited Ashram Road, Ahmedabad Road 380009 Gujarat	M/s. United Phosphorus Ltd. Eadymoney Terrace, 167, Dr. Annie Basant Road, Worli, Mumbai-400 018
M/s. Resins & Plastic Ltd. Cross Rd. B, Mumbai 400093	M/S Kailash Polymers, 60 Krishna Market Kalka JI New Delhi
M/S Centurian Metalics Pvt. Ltd 6/221, Deodhar Road, matunga-400019-Mumbai	M/s. Wonder Laminates Pvt. Ltd. 14, Bhasa, Diamond Harbor road, Kolkata.
M/s. Meghdev Enterprises P.K. House, H/H M.J. Library, Ellisbridge, Ahmedabad	M/s. Satguru International 204-D, Pocket-12, Jasola Vihar Opp. Apollo Hospital, New Delhi
M/s. High Polymer Labs Ltd. 803, Vishal Bhavan, 95, Nehru Place, New Delhi	M/s. Rainbow colours & Chemicals 14/A, Bhavik Complex Ghod Dod Rd. Surat, Gujarat
M/s. M/s. Bleach Marketing Pvt. Ltd. 120, Bleach Chem Compound Nr. Chandola, Ahmedabad	M/s. Karmen International (P) Ltd. 31A/20, NP, Sidco Industrial Estate, Chennai
M/s. Krishna Antioxidants Pvt. Ltd. Lopes Maner, I C Colony, Near Chandra Ho, Mumbai	M/s. NGP Industries Ltd. M-13, Punj House, New Delhi
M/s. Farmson Pharmaceutical Gujarat Ltd. 5th Floor, Commerce Centre, Sayajigunj, Baroda	M/s. India Glycols Ltd. C-124, Okhla Industrial Area, Phase-I, New Delhi
M/s. Singh Plasticisers and Resins (I) Pvt. B-316, 3rd Floor, Somdutt Chamber-1, Bhikaji Gama Place, New Delhi	M/s. National Plywood Industries Ltd. 5, Fancy Lane, 700001 Kolkata.
Kundan Rice Mills Ltd., d-17, Century Market, Prashant Vihar, Delhi-110085	

viii. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;

ix. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years and period of investigation.

x. Optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the applicant on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain if Anti-Dumping duty, lower than the dumping margin, would be sufficient to remove injury to Domestic Industry

xi. Investigation was carried out for the period starting from 1st Oct 2008 to 30th June 2009 (nine months) (POI). The examination of trends, in the context of injury analysis, covered the periods April 2006-March 2007, April 2007- March 2008, April 2008-March 2009 and the POI.

xii. The Authority, having regard to the Act and the AD Rules; vide Notification No. 14/27/2009-DGAD dated 3rd February 2010 recommended imposition of provisional Anti Dumping duty on imports of subject goods from the subject countries and requested the interested parties to make their views known to the Authority in writing within forty days from the date of publication of the notification. Subsequently a corrigendum was issued on 8th June.

xiii. In accordance with Rule 6(6) of the AD Rules, the Authority also provided opportunity to all interested parties to present their views orally in a public hearing held on 18th March

2010. The parties, which presented their views in the public hearing, were requested to file written submissions of the views expressed orally. Interested parties were provided opportunity for rejoinder submissions on the views expressed by opposing interested parties.

xiv. The arguments made in the written submissions/ rejoinders received from interested parties have been considered, wherever found relevant, in this final findings;

xv. The provisional Anti Dumping duty on imports of subject goods from the subject countries were imposed vide Customs notification No. 53/2010-Customs dated 19th April 2010.

xvi. In accordance with Rule 16 of the AD Rules, the essential facts considered by the Authority disclosed to the known interested parties and comments received on the same would be duly considered in these final findings.

xvii. Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.

xviii. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded this finding on the basis of the facts available.

xix. *** In this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis, and so considered by the Authority under the AD Rules.

Product Under Consideration And Domestic Like Article

5. The product under consideration is 'Phenol'. It is an organic chemical, also known as Carbolic Acid, and used in the manufacture of Phenol Formaldehyde Resins, Laminates, Plywood, Particle Boards, Bisphenol-A, Alkyl Phenols, Pharmaceuticals, Diphenyl Oxide and downstream chemicals. Phenol is classified under Chapter 29 & 27 of Custom Tariff Act under the sub-heading 29071110, 27079900 respectively. The customs classification is however, indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation.

6. It is a basic organic chemical, marketed in two grades viz. Crystalline and Hydrated. The two grades are differentiated on the basis of flow characteristics of Phenol. It is marketed in two forms – loose / bulk and packed.

Views Of The Importers, Consumers, Exporters And Other Interested Parties

7. None of the importers, consumers, exporters and other interested parties has filed any comment or submissions with regard to product under consideration, and like articles.

Examination By The Authority

8. With regard to like articles, Rule 2(d) of the AD Rules provides as under: -

"like article" means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation;

9. With regard to the possible difference between the product sold by the exporters in the Indian market and the product sold by the domestic industry, the Authority notes that exporters have not disputed that there is any difference in the two products. After considering the information on record, the Authority holds that there is no known difference in product under consideration exported from subject countries and the product produced by the Indian industry. The domestic like article produced by the domestic industry are comparable to the imported subject product in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, functions & uses, product specifications, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably.

10. Thus, the Authority holds that Phenol produced by the applicant domestic industry is like article to the subject goods imported from subject countries in accordance with the AD Rules.

Scope Of Domestic Industry & Standing

11. The application has been filed by M/s Hindustan Organic Chemicals Ltd., Mumbai and supported by M/s SI Group-India Ltd., Mumbai (formerly known as Schenectady Herdillia Limited).

Views Of The Domestic Industry

12. Following submissions have been made by the domestic industry with regard to standing of the domestic industry:

- i. The petition was filed by M/s Hindustan Organic Chemicals Ltd., Mumbai and supported by M/s SI Group-India Ltd., Mumbai (formerly known as Schenectady Herdillia Limited). There are no other known producers of the product in the country. Therefore, M/s Hindustan Organic Chemicals Ltd. constitutes domestic industry under Rule 2(b) of the Rules, 1995.
- ii. Production of petitioner constitutes a major proportion in Indian Production and therefore petitioner should be treated as "domestic industry" within the meaning of the Rules.

Views Of The Importers, Consumers, Exporters And Other Interested Parties

13. None of the importers, consumers, exporters and other interested parties has filed any comment or submissions with regard to domestic industry standing.

Examination By The Authority

14. With regard to standing of the domestic industry, Rule 2(b) states as under:

“Domestic Industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case such producers shall be deemed not to form part of domestic industry;

15. The application has been filed by M/s Hindustan Organic Chemicals Ltd., Mumbai (HOCL) and supported by M/s SI Group-India Ltd., Mumbai (formerly known as Schenectady Herdillia Limited). There are no other known producers of the product in the country. The Authority sought the information from the supporter, who however failed to file the data. In any case HOCL being the major producer of the subject goods in India accounts for more than 50% of Indian Production and thus constitutes domestic industry with the meaning of AD Rules. The Authority has considered M/s Hindustan Organic Chemicals Ltd., Mumbai to represent the domestic industry within the meaning of Rule 2(b) of the AD Rules.

Other Issues**Views of The Domestic Industry**

16. The following submissions have been made by the domestic industry after oral hearing:-

- i. The DA should determine dumping and injury margin collectively for all goods sold by the producer for export to India, regardless of the channel. The quantum of duty in respect of traders which have supplied goods originating in more than one country should be on the basis of weighted average sale made to India regardless of producer.
- ii. The Designated Authority should give one weighted average duty to the producer and all its sales channels.
- iii. The market during POI was highly volatile and producers were exporting the product at very low prices in Indian market which caused severe injury to the domestic industry.
- iv. There is no information in the NCV of the questionnaire regarding methodology followed for valuation of raw material sourced by producers captively or related parties. Thus cost of production cannot be determined as per the ADD rules.
- v. For determining Normal Value of the exporter, contract sales made by exporter cannot be excluded as this is normal business phenomena and does not constitute particular market situation.
- vi. China has extended duty after sunset review on Japan, Korea, USA and Taiwan. This clearly establishes likelihood of intensified injury to the Indian producers.
- vii. The non confidential versions do not have indexed version of appendices and thus are inconsistent with the procedural requirement.

Views Of The Exporter, Importers, Consumers And Other Interested Parties

17. M/s. Mitsui Chemicals Inc. Japan have made following submissions:

- Non-confidential version of the petition filed by domestic industry is wholly deficient.
- The domestic industry uses import data of the subject goods from different sources and same is kept confidential from the interested parties.
- The nine months period chosen by the Authority is relatively a very short period for analyzing the injury and effect of dumped imports. It should be minimum one year. The Authority has not given any logic or reasoning in the initiation and preliminary finding notification for choosing 9 months period.
- The export price, dumping margin and injury margin should be determined monthly due to significant fluctuation in the prices of petrochemical product during period of investigation.
- The normal value of the exporter should be determined based on spot prices not on contract prices.
- There is no justification provided by the Authority for provisional duties.

18. PTT Phenol Co Ltd. Thailand and M/S Mitsui and Company Japan and M/s Mitsui & Co PTE LTD Singapore has submitted as under:

- The dumping margin should be determined for each exporter/export channel.
- The transaction wise imports from DGCI&S used by Authority for volume analysis may contain imports made by S.I. Group under advance license. So, it should be excluded from the total imports.
- The reason of increasing imports from subject countries is due to suppression of exports from the countries already attracting ADD.
- The imports into India are inevitably goods due to demand and supply gap. The Indian Producers are not capable of meeting demand of the country.

19. M/s. Sumitomo Corporation, Japan and M/s. Sumitomo Corporation Asia Pte. Ltd., Singapore has submitted as under:

- The extension of period of investigation without the availability of subsequent data shows violation of Rule (5) of ADD Rules.
- Sumitomo cannot be treated as non-cooperative exporter because of other parties involved in channel has not responded. The export price can be determined from the exports made by company to India.

M/s. PTT Phenol Company Limited

20. They emphasized the effect of the economic downturn of 2008-2009 and the various problems facing the company during commissioning on product sales during the period of investigation. They also tried to present the pricing evidence to illustrate the fact that phenol producers globally felt the effect of the recent economic downturn. It was claimed that Koreans, Taiwanese, Japanese have had to shutdown various units as a response to weak demand and Players in both Europe and North America suffered drastic inventory loss. In addition, the company also reported various problems they faced during commissioning ranging from which

ultimately resulted in its inability to market the products at an economical price.

Examination By The Authority

21. The Authority having taken note of various submissions made by interested parties and has addressed the same appropriately in the disclosure statement and in these final findings. The Authority notes that there is no justifiable reason advanced by the interested parties about 9 months period being too short. The Authority has consistently been following the practice of choosing a Period of Investigation ranging from as small as 6 months to as long as 18 months and this principle have been followed in the present investigation as well. The Authority has further determined the Normal Value and Export Price based upon the actual data available with the Authority as made available through submissions by various interested parties, duly verified. As regards exclusion of imports under advance license for volume analysis, the Authority has followed the practice being followed in all such cases in the past. As regards demand and supply gap, the AD measure does not seek to restrict or ban imports but seeks to set a level playing field for all the interested parties, including domestic producers and exporters from subject countries. The Authority also takes note of the suggestion having been made about monthly computation of NV and NEP, considering fluctuation in prices of the two basic raw materials.

Normal value, Export Price and Dumping Margin

Normal Value for Japan

Producers / Exporters who had made submissions to Initiation, Partial or Complete

Mitsubishi Chemical Corporation

22. M/s. Mitsubishi Chemical Corporation, a producer of subject goods in Japan had been held by the Authority as non-cooperative for provisional determination as per details recorded in Provisional Determination / Preliminary Findings Document. The position has not changed since the Preliminary Findings and continues to be the same. The subject producer failed to provide the relevant information and therefore the Authority holds the subject exporter as non-cooperative for the Final Determination as well.

Mitsui Chemicals Inc., Japan

23. The Authority notes that information provided on domestic sales in the home market by the subject producer was verified during spot verification by the investigating team. Various adjustments claimed were also verified and found to be in order. They had also claimed adjustments on post sale debits/ credits which have suitably been allocated to each transaction and accepted as an adjustment (positive as well as negative) for determination of Normal Value

24. For the determination of the ordinary course of trade test, the costs of production of the product concerned have been accepted. Further, all domestic sales transactions were examined with reference to the costs of production of the subject goods to determine whether the domestic sales were in the ordinary course of trade. The Authority notes that the domestic sales of the subject goods by the responding producer in its home market was representative for permitting determination of Normal

values on the basis of domestic selling prices and the ordinary course of trade test was satisfied as per the data provided by the respondent.

25. Considering that there have been significant changes in the cost of production and selling price from month to month during POI due to fluctuations in input prices, the Normal Value has been worked out separately for each month. During the course of verification it is noted that less than 80% sales in the domestic market are profitable sales and therefore only these profitable sales have been considered for determination of Normal Value. Mitsui Chemical Inc. however did not export directly but through unrelated traders. Further considering huge fluctuation in input prices on month to month basis, for determination of DM, the normal value determined for the month during which the exports during POI are reported and subsequently verified has been considered. The Normal Value so determined corresponding to the months during which exports were made by the responding exporters i.e Mitsui Co Japan and Mitsui Singapore is given in the DM table.

Non-Cooperating Exporters

26. The Normal Value determined for the responding producer / exporter and subsequently verified has been adopted for all other exporters from Japan. The Normal Value so determined is US \$ *** per MT

Normal Value for Thailand

Cooperating Exporters

PTT Phenol Company Limited, Producer & Exporter and PTT Public Company Ltd (Exporter)

27. The Responding exporter has provided data both in respect of their sales in the domestic market in Thailand as well as the Cost of Production. The said responding producer / exporter also provided access to the Authority to this data, which was duly verified by the investigating team deputed by the Authority to do so. The Authority confirms having verified the data and issued a verification report seeking comments of the said responding producer / exporter. In response thereto they sought adjustments on startup cost as explicitly and elaborately explained in the disclosure statement.

Examination by the Authority

28. The claim made by the responding producer / exporter was examined in detail. It is noted that they have sought adjustments on startup cost on account of cost of raw materials, consumable stores and spares, utilities and depreciation. So far as the sourcing of Raw Materials is concerned, it is noted that the basic major RM i.e Benzene and Propylene was sourced from their related Company and therefore there is no scope for allowing adjustments on RM Cost. As regards claimed adjustments on consumable stores and spares, utilities and depreciation, the methodology for working out the startup cost on account of these was not shown during the verification. Therefore the Authority holds that the claim on this account is not called for and disallows the claim.

29. Considering the information provided by the said responding exporter, all the reported domestic sales of the subject goods by the responding exporters in their home markets during POI were found to be loss making sales. Therefore the Normal value has been considered by taking into account their cost of production and adding a reasonable profit margin to the same. Further

considering huge fluctuation in input prices on month to month basis, for determination of DM, the normal value determined for the month during which the exports during POI are reported and subsequently verified has been considered. The Normal Value so determined in the present case is mentioned in the dumping margin table.

Non-Cooperating Exporters

30. The Normal Value determined in respect of responding producer has been adopted for all other exporters from Thailand. The Normal Value so determined in the present case is mentioned in the dumping margin table.

Export Price

Export price for the responding exporters from Japan

Mitsui Chemicals Inc., Japan

31. The subject goods produced by M/s Mitsui Chemical Inc., Japan (MCI) have been exported to India through Mitsui & Co., Ltd., Japan ('MBK') and Sumitomo Corporation ('SC') during POI.

32. MCI sells its products to MBK and SC on a *** while MBK and SC exports to India through their affiliates. Mitsui Chemicals Inc., Japan sells on *** basis to Mitsui & Co. Ltd., Japan (MBK), who arranges logistics and sells to Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd., Singapore (MAP) on *** or ***. MAP in turn sells it to Indian customer.

33. As per the response filed with the Authority and subsequently verified during spot verification, the Japanese Trader M / S **Mitsui & Co. Ltd. Japan** had shipped Japan origin PUC purchased from **Mitsui Chemicals Inc.**, PUC in the form of *** invoices to *** different customers in India. The total quantity of Bulk Phenol so shipped was *** MT. For determination of the Net export price to India, the adjustments as verified have been made on account of ocean freight, clearing and handling charges, bank charges, credit cost, and commission paid to **Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd., Singapore** and **Mitsui and Co. India**. That apart, SGA expenses incurred by the trading company have also been adjusted for determination of NEP.

34. Further the Japanese Trader M / S **Mitsui & Co. Ltd. Japan** had shipped Japan origin PUC purchased from **Mitsui Chemicals Inc.**, PUC in the form of *** invoices through their another related trading Company **Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd Singapore** to customers in India. The total quantity of Bulk Phenol so shipped, claimed as per response was *** MT. During verification of records of the Japan as well as Singapore entity of Mitsui, it came to the fore that at least one of the shipments of Bulk Phenol, (Qty. *** MT), comprising *** of the shipment based upon which Individual DM was claimed and allowed in provisional determination based upon their claim, was actually sold by the Singapore entity to another Trader M/S ***, a USA based Company who had in turn sold it to Indian Customer, and not by **Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd.** To that extent the Authority notes that either intentionally or un-intentionally, the subject trader in Singapore had erroneously claimed an individual DM by declaring exports made by another trader (Such exporter / trader M/S *** has actually not participated in the investigation) in Preliminary Findings and never declared this mistake till the same was detected by the investigating team deputed by the Authority, during verification of records of **Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd.** While responding to the disclosure statement, although they have not admitted their mistake, but have claimed that this sale be

accepted for determination of landed value. The Authority after reconsidering the issue has decided that instead of not allowing margin as a whole for this chain, the direct sale shall be considered for the purpose of determination of individual DM. Thus for determination of NEP one weighted average NEP has been determined based upon all eligible sales of M/S Mitsui & Co. Ltd. Japan and Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd Singapore. The NEP so determined in respect of this channel of sale after deductions on account of verified adjustments is US \$ *** Per MT.

35. **M/s Sumitomo Corporation, Japan** procures the materials from M/s Mitsui Chemicals Inc., Japan and M/s Mitsubishi Chemicals Corporation, Japan, and sells to M/s Sumitomo Corporation Asia Pte Ltd., Singapore. In turn, M/s Sumitomo Corporation Asia Pte Ltd sells the products to India directly or through unrelated companies based at Singapore or UAE. Sumitomo Corp. Asia Pte. Ltd., in their response stated that it has sold *** MT of Phenol produced by M/s Mitsui Chemicals Inc., Japan to India through M/s Noble Resources Pte. Ltd., Singapore. M/s Noble Resources have not filed a separate response for the goods exported by it to India. The ultimate export price at which the goods are exported to India by M/s Noble Resources Pte. Ltd., Singapore has therefore not been shared with the Authority. Notwithstanding the claim of Sumitomo that they cannot be treated as non-cooperative exporter because of other parties involved in channel has not responded, the fact of the matter remains that in view of the incomplete chain it is not possible for the Authority to determine the Net Export Price and hence. The Authority therefore holds that no Individual Margin is possible to be determined for this exporter.

36. *Similarly the Authority notes that individual margin in respect of the exports of PUC produced by M/s Mitsubishi Chemicals Corporation, Japan to India made by Sumitomo Corporation Asia Pte Ltd cannot be determined in view of non-availability of the Normal Value in respect of M/s Mitsubishi Chemicals Corporation, Japan as explained in para 22 above.*

Export price for Non-cooperating Exporters from Japan

37. The lowest export price for the month reported by the responding producer/ exporter from Japan has been relied upon to calculate the ex-factory export price for this category of exporters. Adjustments on account of ocean freight, clearing and handling charges, bank/ credit charges, and commission have been made, at par with the adjustments allowed in respect of Co-operating exporters to arrive at the ex-factory export price. By adopting the above method, the ex-factory export price has been calculated as US\$ *** PMT.

Export price for the responding exporters from Thailand

PTT Phenol Company Limited and PTT Public Company Ltd., Thailand

38. M/s PTT Phenol Company Limited, Thailand while submitting the response had claimed to have exported the subject goods to India directly, as well as through its affiliate M/s PTT Public Company Ltd., Thailand. According to this response, the Company had sold Bulk Phenol to India in the form of *** transactions, which included *** transactions through the trading company M/s PTT Public Company Ltd, *** through ***, *** through M/S Mitsui & Co. Ltd. Japan (Trader) / Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd Singapore and of the remaining ***, *** direct to Indian Importer *** and one transaction direct to Indian Importer ***.

Direct Sales by M/s PTT Phenol Company Limited and sales made through its related trader PTT Public Company Ltd

39. Verification of the records of the Company revealed that during POI they had exported Bulk Phenol to India in the form of *** transactions to India as detailed in Para 38 above. The Authority further holds to disallow the claim of Peekay Intermark Dubai for individual DM on the same exports as has been elaborately explained in the disclosure statement. Authority further notes that M/s PTT Phenol Company Limited has made sales of Bulk Phenol to India in the form of *** transactions through its related entity M/S PTT Public. The total volume of these sales is *** MT. The Authority considers these sales as well, eligible for determination of individual DM.

40. The Authority notes that while determining the DM for provisional determination, the Authority had allowed a single margin for exports made direct by the producer and those made by them through the related trading company. The Authority had considered this on the premise that exporter can easily switchover between direct exports and exports through its affiliate, and therefore the Authority had determined one export price and dumping margin for the exports made by M/s PTT Phenol Company Limited, Thailand either directly or through its affiliate M/s PTT Public Company Ltd., Thailand.

41. In response to the verification report it was submitted to the Authority that since the Producer was a startup company, the initial marketing efforts of the related trading company for a very brief period of time was used to make export sales including to India. They have contested the decision of the Authority to give them only one dumping margin for the exports made through related entities. They have made a reference to subsection 6A of section 9A of the Customs Tariff Act 1975 which states as under.

“(6A) the margin of dumping in relation to an article, exported by an exporter or producer, under enquiry under sub-section (6) shall be determined on the basis of records concerning normal value and export price maintained and information provided by such exporter or producer”

Provided that where an exporter or producer fails to provide such records or information, the margin of dumping for such exporter or producer shall be determined on the basis of facts available”

42. The Authority notes that sub-section 6A, as above does not bar the Authority to consider one margin for related producer and exporter, particularly when this related combination can interchangeably switchover from one entity to another to export, and in no uncertain terms through the entity which has a lower dumping margin, in case a separate DM is determined, and thus, making a separate higher margin for the other entity redundant. The Authority holds that by adopting this methodology, particularly with reasonable justification as above, the provisions of sub-section 6A are not violated.

43. The Authority has therefore determined one export price in respect of sales made directly by the producer M/S PTT Phenol and the related trader M/S PTT Public, after making necessary adjustments. The NEP for determination of DM works out to US \$ *** per MT.

Sales by M/S Mitsui & Co. Ltd. Japan(Trader) / Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd Singapore in respect of Phenol produced by PTT Phenol Company Limited Thailand.

44. While submitting the response, M/S Mitsui & Co. Ltd. Japan (Trader) / Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd Singapore has also claimed to have exported the subject goods manufactured by M/s PTT Phenol Company Limited.

45. Verification of records by the Authority through its investigating team revealed that PTT Phenol, the producer, had invoiced *** MT of Phenol to **Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd Singapore**, for an invoice value of US \$ *** who had in turn invoiced it to the Indian Importer M/S Haresh Petrochem Pvt. Ltd. For an invoice value of US \$ ***. This was the *** transaction where the channel of exports was as follows:

PTT Phenol Company Limited Thailand>>> Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd Singapore>>> Indian Importer.

46. Apart from this it was also seen that as per response filed with the Authority and during subsequent verification, that *** MT of Phenol (Bulk) were shipped to India through following Channel during POI

PTT Phenol Company Limited Thailand>>> M/S Mitsui & Co. Ltd. Japan >>>> Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd Singapore>>>> Indian Importer.

47. The Producer in Thailand had raised *** invoices on M/S Mitsui & Co. Ltd. Japan who in turn had also raised *** invoices on Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd Singapore. Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd Singapore had however raised *** invoices on different customers, the total quantity remaining the same. Adjustments were made on account of verified data which included Ocean Freight, Insurance (Where ever applicable), Commission amount paid to Mitsui & Co Thailand and Mitsui & Co India, Credit Cost, Bank Charges, and SGA etc. The NEP for exports of Thai origin Phenol exported either by M/S Mitsui & Co. Ltd. Japan or Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd Singapore works out to US \$ *** per MT.

Export Price for Non-Cooperating Exporters from Thailand

48. The lowest export price reported by the responding producer/ exporter from Thailand has been relied upon to calculate the ex-factory export price for this category of exporters. Adjustments on account of ocean freight, clearing and handling charges, bank/ credit charges, and commission have been made, at par with the adjustments allowed in respect of Co-operating exporters to arrive at the ex-factory export price. By adopting the above method, the ex-factory export price has been calculated as US\$ *** PMT.

Dumping Margin

49. On the basis of normal values and export prices as determined above, the dumping margins for exporters from subject countries are determined as per table below;

Producer	Exporter	Normal Value	Export Price	Dumping Margin	Dumping Margin (%)
Mitsui Chemicals Inc., Japan	M/S Mitsui& Co. Ltd. Japan / <i>Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd Singapore</i>	***	***	***	95-105%

All other producers from Japan	All other exporters from Japan	***	***	***	130-140%
M/s PTT Phenol Company Limited, Thailand	M/s PTT Phenol Company Limited, Thailand / PTT Public Company Ltd Thailand	***	***	***	40-45%
M/s PTT Phenol Company Limited, Thailand	Mitsui & Co. Ltd., Japan (MBK) & Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd., Singapore	***	***	***	20-25%
All other exporters from Thailand	All other exporters from Thailand	***	***	***	75-80%

50. The dumping margins so determined are significant and above de-minimis level.

INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF CAUSAL LINK

Views of the domestic industry

51. The followings are the views of domestic industry: -

- a) Export price from the subject countries has remained at dumped level during POI. Further, these prices have been declined more than input prices.
- b) Production, sales volumes and capacity utilization of the domestic industry declined in POI after showing improvements up to 2007-08.
- c) Profit/Loss (PBT, PBIT and PBDIT) of the domestic industry have all shown significant decline even become negative after improvement up to 2007-08.
- d) Market share of the domestic industry declined marginally. This is due to the fact that dumped imports have captured significant market share of demand in India.
- e) Import from each of the subject countries has been undercutting the prices of the domestic industry to a significant degree.
- f) Imports from the subject countries have forced the domestic industry to reduce the price steeply during investigation period. Thus, the imports were depressing the prices in this period.
- g) Employment levels with the domestic industry have not undergone any significant change even though there is a marginal decline.
- h) Salary & wages: - Salary and wages level with the domestic industry decreased due to low level of production.
- i) Demand and market share: -Whereas the market shares of the imports have increased, that of the domestic industry has declined.
- j) Growth: - Growth of the domestic industry in a number of parameters shows negative trend.
- k) Domestic industry has suffered material injury and is trapped in a vicious cycle of volume effect and price effect. With increase in volume of imports of the subject good from the subject countries into the Indian market as a result of excess capacity with the Foreign Producers, the domestic industry suffered from loss of sale and loss of market share. This resulted in adverse volume effect. Loss of sale forced the domestic industry to reduce their domestic selling price in order to sell the subject good in the domestic market thus resulting in adverse price effect. Resultantly, domestic Industry faced adverse volume effect and adverse price effect as a result of unfair trade practices of the exporting countries.
- l) Imports from subject countries are adding to the material injury, already being suffered by the domestic industry.

- m) There is significant increase in the import volumes in absolute terms. This increase in imports is in spite of best efforts of the domestic industry to sell their material even at sub-optimal prices. The increase in imports would have been more, had the domestic industry not made efforts to curtail the same by offering lower prices.
- n) Price undercutting is significant. In spite of offering matching prices, there is a positive price difference between the domestic product and imported product. Given nature of the product involved, any price difference between the domestic product and imported product is not acceptable to the consumers and the domestic industry is under constant pressure for price reductions. Domestic industry cannot afford to sell at prices, significantly higher than the imported prices. The only option with the domestic industry is to sell at matching prices. Even a small price difference is in fact huge in this kind of product.

Views of Responding Producers / Exporters

52. M/s. Mitsui Chemicals, Japan have made following submissions:

- a) There is no injury to the domestic industry on account of production, capacity utilization. The increase in cost of sales is due to increase in fixed cost and low production. The major cause of injury is global meltdown.
- b) The imports from countries already attracting ADD are almost 52% in POI which is more than imports from subject countries. This needs to be analyzed while examining causal link.
- c) There is substantial fall in custom duty of the subject goods over the injury period which might be the cause of injury to the domestic industry.

53. PTT Phenol Co Ltd. Thailand and M/S Mitsui and Company Japan and M/s Mitsui & Co Pte Ltd. Singapore has submitted as under:

- a) The Authority should investigate factors other than dumping while examining injury to the domestic industry as anti-dumping duty is already imposed on most of the countries.
- b) In PF, imports in relation to Indian production are found out by excluding the production of supporter.
- c) The Capacity utilization of Indian industry considered as whole is better than the applicant alone.
- d) Most of the injury parameters shows no or lack of injury to the domestic industry.
- e) There are lots of inconsistencies in the preliminary findings and additional data supplied by the petitioner.
- f) The Authority prior to imposing duties must consider the plight of the downstream consuming industry as it caters to a lot of products such as, Bisphenol-A, Pharmaceutical and Solvent. There is no sufficient capacity of Indian producers to meet the demand of the country.
- g) The injury analysis can be done based upon the data provided in the original petition based upon which the case was initiated and not based upon the data of the revised POI.
- h) The Injury data in the petition is provided only for the petitioners and not for the supporter to the petition.
- i) Capacity utilization of the petitioner during 2008-09 is in excess of the licensed installed capacity.
- j) There is a minuscule drop of 6.4% sales volume in FY 2008-09 and the same cannot be attributed to causing injury.

- k) Sale value drop is on account of the drop in the prices of Benzene and thus directly related to reduced cost of production.
- l) Average inventories during FY 2008-09 have dropped to an all time low.
- m) Reduction of profitability during FY 2008-09 compared to FY 2007-08 cannot be attributed to dumping.
- n) Reduction in employment levels is a common feature of any organization.
- o) Wages have increased over the years and are highest in FY 2008-09.
- p) In spite of reduced demand during 2008-09, the production of DI has increased.

54. M/s. Sumitomo Corporation, Japan and M/s. Sumitomo Corporation Asia Pte. Ltd., Singapore has submitted as under:

- a) No material threat or injury is established :
 - (i) Import Volume: The preliminary findings show that exports from Japan has come down.
 - (ii) Price effect is absent: The NIP and the actual realization price of the product are more or less same.
- b) Causal Link is not established: The Authority is required to examine other known factors for assessing injury. The annual report of the domestic industry shows that the company's performance has deteriorated due to global recession.

55. M/s J Sagar and associates, representing Mitsubishi Chemicals Corporation Japan have made following submissions:

- a) The sales of DI have decreased only marginally and perhaps due to imports from Thailand and not from Japan and there is no volume effect for exports from Japan.
- b) Production of DI has not seen any significant change. They have been operating at full or over capacity.
- c) The profit / loss trend does not appear to be connected to dumped imports as there was huge increase in profits during 2007-08 in spite of increase in imports from Japan during this period.
- d) The selling price of DI has decreased in line with the decrease in demand by 8.9% during 2008-09 and not because of dumped imports.
- e) Market share of petitioner and supporter does not show any material change during POI though there is a marginal increase of market share of imports from Japan.

Examination by the Authority

56. The Authority has taken note of various submissions of the interested parties on injury to the domestic industry and has analyzed injury to the domestic industry considering the verified data, facts available on record and the applicable law. However, the Authority, before proceeding with the injury analysis, sought the data from the supporter, who however did not furnish the same till date. As regards Injury analysis, the POI has been prescribed by the Authority and therefore for injury analysis has been carried out during injury period and POI as per practice and as mandated by the Rules.

Cumulative assessment of injury

57. Annexure II para (iii) of the AD Rules provides that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti dumping investigations, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that: -

- a. the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two per cent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three per cent of the import of like article or where the export of individual countries is less than three per cent, the imports collectively accounts for more than seven per cent of the import of like article and
- b. cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

58. The Authority notes that:

- The margins of dumping from each of the subject countries are more than the limits prescribed above;
- Cumulative assessment of the effects of imports is appropriate since the exports from the subject countries directly compete with the like articles offered by the domestic industry in the Indian market. This is evident from the following:
 - a. The subject goods manufactured by the producers from the subject countries inter-se and in comparison to the product manufactured by the domestic industry has comparable properties. In other words, the subject goods supplied from various subject countries and by the domestic industry are inter-se like articles.
 - b. The information furnished to the Authority gives a reasonable indication that there are common parties who are resorting to use of imported material from various sources and domestic material. Imported and domestic materials are, therefore, being used interchangeably and there is direct competition between the domestic product & imported product and inter-se imported product.
 - c. Volume of imports from each of the subject countries is significant.
 - d. Consumers make purchase decision on the basis of prices offered by various suppliers.

59. In view of the above, the Authority holds that it is appropriate to, cumulatively assess the effect of imports of the subject goods from Thailand and Japan on the domestically produced like article, in the light of conditions of competition between the imported products and the like domestic product.

60. Annexure-II of the AD Rules provides for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices, in the domestic market, for the like articles; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such articles. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is

otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.

61. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry Para (iv) of Annexure-II of the Anti Dumping Rules states as follows:

“The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.”

Volume Effect of dumped imports and Impact on domestic Industry

62. The Authority collected transaction wise details of imports of subject goods from DGCI&S as also from World Trade Atlas. The Authority has also collated the volume of exports reported by responding exporters with the volume of imports during the period. The responding exporters from Thailand as well as Japan have reported a lower volume of imports during POI compared to DGCI&S and WTA as well as IBIS data source relied upon by the petitioner. Further the imports reported in DGCI&S data source and WTA are higher than those reported in IBIS data source. Therefore Volume analysis has been done based upon DGCI&S data as under.

Import Volumes and share of subject country

	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI(9M)	POI Annualized
Japan	MT	532	6,244	18,226	12,920	17,226
Thailand	MT	0	0	20,498	28,285	37,713
Subject Countries	MT	532	6,244	38,724	41,205	54,939
Trend	Indexed	100	1,175	7,284	10,334	10,334
Other country attracting ADD	MT	63,337	88,447	51,894	35,301	47,068
Other countries	MT	2,687	8,180	2,299	1,617	2,155
Total Imports	MT	66,556	102,871	92,918	78,122	104,163
Trend	Indexed	100	155	140	157	157

Market Share in Imports	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI (9M)	POI Annualized
Japan	%	0.80	6.07	19.62	16.54	16.54
Thailand	%	0.00	0.00	22.06	36.21	36.21
Subject Country	%	0.80	6.07	41.68	52.74	52.74
Other country attracting ADD	%	95.16	85.98	55.85	45.19	45.19
Other country	%	4.04	7.95	2.47	2.07	2.07
Total Imports	%	100.00	100.00	100.00	100.00	100.00
Production of DI	MT	40,733	41,908	42,641	24,719	32,959
Production of Supporters	MT	30,550	33,027	33,149	24,538	32,718
Total Indian Production	MT	71,283	74,935	75,790	49,258	65,677

Imports from subject countries	MT	532	6,244	38,724	41,205	54,939
Imports from subject countries as a percentage of Indian production	%	0.75	8.33	51.09	83.65	83.65

Market Share in Imports

63. As per the data shown in the above table:

- Cumulative imports from subject countries have increased significantly in absolute terms and in relation to imports in India.
- Imports from subject country have increased in relation to production and consumption in India as compared to the base year. Imports from subject countries show a growing trend in relation to production of the domestic industry. The imports from subject countries was 0.75% in relation to the Indian production in the base year which has gone up significantly in percentage terms to more than 83% in POI.

Demand, Output and Market shares

Demand,Output & Market Share	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI(9M)	POI Annualized
Domestic Industry	MT	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	107	100	87	87
Supporter	MT	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	109	117	113	113
Import – Subject Countries	MT	532	6,244	38,724	41,205	54,939
Import – Other Countries	MT	66,024	96,627	54,194	36,918	49,223
Total Demand	MT	134,483	175,841	165,292	127,634	170,178
Trend	Indexed	100	131	123	127	127
Market share in demand						
Domestic Industry	%	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	82	81	69	69
Supporter	%	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	83	95	89	89
Subject Countries	%	0.40	3.55	23.43	32.28	32.28
Other Countries Attracting ADD	%	47.10	50.30	31.40	27.66	27.66
Other Countries	%	2.00	4.65	1.39	1.27	1.27

64. The Authority notes that:

- Demand of subject goods has been determined by addition of domestic sales and all imports from all countries. The Authority notes that demand for the subject goods had been growing from base year to POI. It grew by 27% during POI as compared to base year. The market share of imports from the subject countries have significantly increased, whereas that of the domestic industry has declined over the injury period. The share of domestic industry, which was at 100 (indexed) in 2006-07, declined to 69 (Indexed), a drop of 31% during POI. During the same period the share of imports from subject countries, which was 0.40% in 2006-07, went up to 32.28% during POI. It is noted that imports from subject countries have captured a significant proportion of the growth in demand.

Capacity, production and capacity utilization of the Domestic Industry

	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI(9M)	POI Annualized
Installed Capacity	MT	40,000	40,000	40,000	30,000	40,000
Production	MT	40,733	41,908	42,641	24,719	32,959
Capacity Utilization	%	101.83	104.77	106.60	82.40	82.40

65. Data of domestic industry on capacity, production and capacity utilization reveals that the capacity of the domestic industry remained unchanged at 40,000 MT during the injury period. The production of subject goods that were increasing until 2008-09 declined significantly to 32,959 MT during POI. As a result, the capacity utilization of domestic industry, which was 101.83% during 2006-07, increased to 106.60% in 2008-09 and then declined significantly to 82.40% during the POI.

Sales volume of Domestic Industry

	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI(9M)	POI Annualized
Sales	MT	***	***	***	***	***
Trend	%	100	107	100	87	87

66. The above data on the sales of domestic industry shows that there was a fall in the sales during POI to the extent of 13% over the base year and also over the previous year 2008-09.

Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

67. With regard to the effect of dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of rule 18, the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of like product in India or whether effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase, which otherwise would have occurred to a significant degree.

68. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from the subject countries have been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the cost of production, Net Sales Realization (NSR), Non-injurious Price (NIP) of the Domestic industry and the landed cost of imports from the subject countries have been examined.

Price suppression and depression effects of the dumped imports:

69. The price suppression and depression effect of the dumped imports has also been examined with reference to the cost of production and net sales realization of the domestic industry.

Particulars	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI(9M)	POI Annualized
Cost of sales	Rs./MT	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	84	88	77	77
Selling Price (NSR)	Rs./MT	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	102	94	73	73

70. It is seen from the above table that the decline in selling prices of domestic industry is more than the decline in its cost of sales during POI compared to the base year. The trend shows that cost of sales decreased by 23% during POI as compared to base year whereas the selling price had decreased significantly by 27% during POI indicating that the domestic industry could not realize the

selling price commensurate with the cost of sales, thereby causing significant price depression. The position is seen to be exactly reversed when the comparison is made from Base year 2006-07 with the trends in 2007-08 and 2008-09 where the DI has been realizing a higher realization compared to the cost of sales. But this trend has reversed in POI when the sales realization has fallen below the cost of sales.

Price undercutting and underselling effects

Price Undercutting

Producer	Exporter	NSR of DI (US \$/MT)	Landed Value (US \$/MT)	Price Undercuttin g US \$/MT)	Price Undercutt ing (%)
Mitsui Chemicals Inc., Japan	Mitsui & Co. Ltd., Japan (MBK) & Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd., Singapore	***	***	***	15-20%
All other producers from Japan	All other exporters from Japan	***	***	***	20-25%
M/s PTT Phenol Company Limited, Thailand	M/s PTT Phenol Company Limited, Thailand / PTT Public Company Ltd Thailand	***	***	***	20-25%
M/s PTT Phenol Company Limited, Thailand	Mitsui & Co. Ltd., Japan (MBK) & Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd., Singapore	***	***	***	10-15%
All other exporters from Thailand	All other exporters from Thailand	***	***	***	30-35%

71. While working out the weighted average net sales realization of the domestic industry, the rebates, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise duty paid have been deducted. The weighted average landed value of imports has been calculated by adding 1% landing charge for determination of Basic Customs Duty and then adding this Basic Customs Duty to the export / CIF prices from the subject countries, as reported by each responding exporter. For others category, the transaction of export considered for determination of DM for the residual category has been taken into account for determination of Landed Value.

72. It is seen that the landed price of imports of the subject goods are significantly below the selling prices of the domestic industry, resulting in significant price undercutting.

Injury Margins

Producer	Exporter	NIP of DI (Rs./MT)	Landed Value (Rs./MT)	Injury Margin (Rs./MT)	Injury Margin (%)
Mitsui Chemicals Inc., Japan	Mitsui & Co. Ltd., Japan (MBK) & Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd., Singapore	***	***	***	50-60%

All other producers from Japan	All other exporters from Japan	***	***	***	70-80%
M/s PTT Phenol Company Limited, Thailand	M/s PTT Phenol Company Limited, Thailand / PTT Public Company Ltd Thailand.	***	***	***	1-5%
M/s PTT Phenol Company Limited, Thailand	Mitsui & Co. Ltd., Japan (MBK) & Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd., Singapore	***	***	***	negative
All other exporters from Thailand	All other exporters from Thailand	***	***	***	25-30%

73. Considering huge variation in input prices, particularly Benzene and Propylene during POI, Non-injurious price of the domestic industry has been determined on a monthly basis for each month of POI. For the purpose of Injury margin calculations, as above, the landed prices of imports from subject countries have been compared with the NIP in respect of the month during which the exports to India have been made.

Examination of other Economic Parameters of Domestic Industry

74. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and major injury indicators like volume and value of imports, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments in the earlier section, other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analyzed hereunder as follows:

Profits and actual and potential effects on the cash flow

	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI(9M)	POI Annualized
Cost of sales	Rs./MT	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	84	88	77	77
Selling Price (NSR)	Rs./MT	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	102	94	73	73
Profit/Loss	Rs./MT	(***)	***	***	(***)	(***)
Trend	Indexed	(100)	1,233	335	(425)	(425)
Profit/Loss before Tax	Rs.Lacs	(***)	***	***	(***)	(***)
Trend	Indexed	(100)	1,315	335	(369)	(369)
PBIT	Rs.Lacs	(***)	***	***	(***)	(***)
Trend	Indexed	(100)	8,056	2,396	(1,727)	(1,727)
Cash Profit	Rs.Lacs	(***)	***	***	(***)	(***)

75. The Authority notes that there has been significant deterioration in the profitability of domestic industry over the injury period. The domestic industry has been suffering financial losses in 2006-07. The profitability improved considerably in 2007-08 and the company earned profit on sale of the subject goods in that period. The financial position of the company deteriorated thereafter and profits declined considerably during 2008-09 and thereafter it suffered financial losses during the POI. The losses suffered in the POI were more than the losses in the base year. The profit of domestic

industry on the domestic sales before interest and tax (PBIT) and cash profits also followed the same trend.

Return on investment and ability to raise capital

	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI(9M)	POI Annualized
PBIT	Rs.Lacs	(***)	***	***	(***)	(***)
Trend	Indexed	(100)	8,056	2,396	(1,727)	(1,727)
Net Fixed Assets	Rs.Lacs	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	88	79	79	79
Working Capital	Rs.Lacs	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	103	103	80	80
Capital Employed	Rs.Lacs	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	100	98	80	80
Return on Capital Employed(NFA basis)	%	(***)	***	***	(***)	(***)

76. The Authority notes that the return on capital employed earned by the domestic industry followed the same trend as that of profitability.

Productivity

	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI(9M)	POI Annualized
Productivity per employee	MT	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	100	108	83	83

77. The data on productivity per employee shows that it decreased by 17% in POI from the base year.

Employment and wages

	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI(9M)	POI Annualized
Employment (Manpower strength)	Nos.	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	103	97	97	97
Wages	Rs./Lacs	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	101	104	87	87

78. The employment level does not show significant change. In indexed form it declined by 3% during POI from base year. The wages that increased by 4% in 2008-09 as compared to base year, declined considerably during POI.

Inventories

	Unit	2006-07	2007-08	2008-09	POI(9M)	POI Annualized
Opening Stock	Mt	***	***	***	***	***
Closing Stock	Mt	***	***	***	***	***
Average Stock	Mt	***	***	***	***	***
Average Stock in terms of No. of Days' sales	Nos.	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	53	55	68	68

79. The information about the inventory levels of subject goods is contained in the above table. It is seen that the inventory levels for the subject goods have declined as compared to the base year but there is a marginal increase seen in POI compared to 2008-09.

Growth

80. The growth in production and capacity utilization was positive till 2008-09 and in domestic sales till 2007-08. However, the same deteriorated significantly during the period of investigation even below the base year levels. The domestic industry has shown a negative growth in production and domestic sales in spite of positive growth in demand from base year to POI. The profitability of domestic industry has significantly declined during the POI. The performance of the domestic industry has also deteriorated during the period of investigation in terms of return on investment and cash profit. It is also seen that the selling price have declined more than the decline in the cost of sales during POI, thereby causing significant price depression. Besides, the imports of subject goods are significantly undercutting the prices of the domestic industry. The price underselling was also significant.

Ability to make Investment

81. The authority notes that the domestic industry had not changed the capacity of subject goods from base year to POI. There has been no fresh investment by the domestic industry during the period of investigation. No evidence of any plans for further investment has come to the notice of the Authority.

Magnitude of Dumping

82. Magnitude of dumping as an indicator of the extent to which the imports can cause injury to the domestic industry shows that the dumping margins determined against the subject countries, for the POI, are significant.

Factors affecting prices

83. It has already been seen in the foregoing paragraphs that imports from subject countries are undercutting the domestic prices. Comparison of cost of production and selling price of the domestic industry shows that the imports are also depressing prices of the domestic industry. It was found that the landed value per MT in POI was lower than both the net selling price and non-injurious price of phenol causing price undercutting and price underselling in the Indian market. As a result of price difference between the imported products' price and domestic industry' price, the imports have taken a major share in the growth in Indian demand for the subject goods.

Analysis and conclusion of Injury

84. The examination of above injury parameters indicates that despite overall growth in demand, both the production and sale of domestic industry declined during POI as compared to the base year and the financial performance of domestic industry declined significantly in POI.

85. The examination of the imports of the product and performance of domestic industry clearly shows that the imports of the product under consideration have increased in absolute terms and as

also in relation to production and consumption in India. The imports are significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market and the effect of the dumped imports was to depress the prices of the domestic industry in the market. The domestic selling prices have declined more than the decline in cost of sales. Further, there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India and the effect of such imports is to prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree. With regard to consequent impact of the dumped imports on the domestic industry, performance of the domestic industry deteriorated from the base year in terms of sales, production, capacity utilization, market share, profits, cash profits & return on investments. Imports are affecting the domestic prices. It is also noted that the production, sales, profits and return on capital employed should have improved as a result of increase in demand. However, the same have instead declined significantly indicating the material injury suffered by the domestic industry as can be seen from the trend from the base year. On the basis of above it is concluded that the DI has suffered material injury within the scope of AD Rules.

Causal Link and other factors

86. Having examined the existence of material injury and volume and price effects of dumped imports on the prices of the domestic industry, in terms of its price undercutting, price underselling and price suppression, and depression effects, other indicative parameters listed under the Indian Rules and Agreement on Anti Dumping have been examined to see whether any other factor, other than the dumped imports could have contributed to injury to the domestic industry. Factors which may be relevant in this respect include, inter alia, the volume and prices of imports not sold at dumped prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry. It was examined whether these other parameters listed under the AD Rules could have contributed to injury to the domestic industry. It was noted that:

Volume and Prices of imports not sold at the dumped prices

87. It is noted from import data that about 53% imports are from subject countries during POI and the 45% from other countries already attracting anti-dumping duties. The imports from other countries, not attracting ADD are just 2%. Therefore, the imports from other countries do not affect the prices in the domestic market;

Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

88. Demand for the subject goods shows a healthy growth during the entire injury investigation period and therefore, the injury to the domestic industry has nothing to do with the lack of demand in the country. The data on consumption and demand does not show any change in the pattern of consumption of the product and has not been a factor causing injury to the domestic industry.

Trade restrictive practice and competition between the foreign and domestic producers

89. The goods are freely importable. The applicants are the major producers of the subject goods and account for significant domestic production and sales. No evidence of conditions of competition or trade restrictive practices has come to the knowledge of the Authority. The Authority notes that

there is a single market for the subject goods where dumped imports from subject countries compete directly with the subject goods produced by domestic industry. The Authority also notes that the imported subject goods and domestically produced goods are like articles and the imported product is sold to meet the similar applications/ end uses as domestically produced subject goods.

Development of technology

90. On the basis of examination of the records of the petitioner, the Authority concludes that development in technology has not been a relevant factor for the injury to domestic industry.

Export performance

91. The Authority notes that there are no exports of the domestic industry during the POI. The performance with respect to various Economic indicators has therefore been determined with respect to domestic sales only. Hence, the Authority concludes that material injury suffered by the domestic industry may not be as a result of the export performance of the domestic industry.

Productivity of the Domestic Industry

92. Productivity of the domestic industry in terms of production per employee has shown decline during POI as compared to preceding year because of the decline in total production during the same period.

93. No other factor, which could have possibly caused injury to the domestic industry, has been brought to the knowledge of Authority.

Conclusion on Causation

94. The Authority notes that while listed known other factors do not show injury to the domestic industry, following parameters show that injury to the domestic industry has been caused by dumped imports:

- a. The landed prices of imports were lower than the selling price of the domestic industry. As a result of price undercutting, the consumers have resorted to higher volume of imports, thus leading to decline in market share of the domestic industry.
- b. Decline in market share has prevented the domestic industry from increasing their production and capacity utilization.
- c. Landed price of imports were undercutting the prices of the domestic industry. The imports from subject countries have caused price underselling in the Indian market. Resultantly, lower import prices appear to have prevented the domestic industry from increasing their prices.
- d. Price depression effect of the imports has directly resulted in deterioration in profitability of the domestic industry and consequently the return on investment and cash profits. Thus, the decline in profits, return on investments and cash profits is apparently due to presence of dumped imports in the market.
- e. Significant deterioration in performance of the domestic industry in the period of investigation is apparently due to presence of dumped imports in the market.

Comments to the disclosure statement
Submissions made by the domestic Industry

95. The Domestic Industry has submitted following comments to the disclosure statement following

- a. Their elaborate submissions on determination of non-injurious price and comparison of the same with landed value have not been considered.
- b. Non-injurious price determined by the Authority requires reconsideration. As various expenses considered for determination of the same have not been correctly taken into account.
- c. The cumene price considered does not appear to include all expenses which the petitioner claimed are associated with procurement of material. Nor any reason has been given for rejecting the claim of the petitioner. They have claimed that all these expenses are in fact associated with procurement of material and must be allowed.
- d. Discounts should not be deducted from the calculations of non-injurious price. as discounts are reduced from net selling price and non injurious price only for the reason that the price net of discount is the price at which the goods have been sold by the company and represents the price which should be compared with imported product.
- e. Commission should be excluded from landed price or alternatively the commission paid by the domestic industry should be added to non injurious price.
- f. The Authority has given individual interim anti-dumping duties for each sales channel. Complete sales channel may not have been reported to the Designated Authority. In any case not, full sales channel have not been brought in the duty table.
- g. They have sought determination of dumping and injury margin collectively or cumulatively for all goods sold by the producer for export to India, regardless of the channel.
- h. Duty be imposed as fixed quantum of duty denominated in US \$.

Examination by the Authority

96. The Authority after having examined the submissions made by the domestic Industry in response to the disclosure, seeks to address the same as follows.

- a.to d. The Authority takes note of these submissions and concludes that NIP has been correctly worked out in line with the consistent practice being followed by the authority in all AD Cases.
- e. This aspect has already been considered and addressed while computing the NEP etc.
- f & g. The Authority follows the imposition of combination duty consistently in all AD Investigations and has followed this principle in the present investigation as well.

Mitsui and Co. Limited, Japan (MBK), Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Limited, Singapore, PTT Phenol company Ltd Thailand

97. They have made following comments to the disclosure statement

- a. They have alleged that DGAD's has ignored Mitsui's injury submission filed with DGAD as well as its Comments to the Preliminary Findings and Written Submission post public hearing, Rejoinder, and Comments to Verification Report. It has been further stated that in these submissions, Mitsui developed a number of arguments on flawed procedure, and provided information important for DGAD's analysis on dumping, injury, and causation. Mitsui would like to request to the DGAD to kindly refer to these submissions before making the final finding in the present investigation.
- b. The basis for calculating the injury margin is critical to this case. However, the disclosure statement provides no such opportunity for the exporter and this inadequate information goes to the route of the exporter's ability to defend itself.
- c. The data as procured from the DGCI&S has not been shared with Mitsui.
- d. It has been alleged that the initiation itself is flawed as the Authority initiated the investigation on 11.8.2009 based upon an investigation period of 6 months and the period was arbitrarily increased to 9 months without following the Rule of Law. There are a number of other allegations related to the flawed procedure of initiation.
- e. Para 37 of the Disclosure Statement states that Mitsui's sales of "Mitsui Chemical Inc. > Mitsui & Co., Limited > Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Limited > ***Trader, USA" link cannot be considered for the individual dumping margin as Vinmar is a US entity and not the final importer into India. However, in the nature of present transactions, Mitsui has considered *** as an importer from India. *** has its own distributing facilities in India. Moreover, *** was merely opening *** through its *** office. It is submitted that this sale should be included as a valid transaction and dumping margin should be duly re-calculated. In the facts of the case the Interested Parties at the time of filing the questionnaire have disclosed the shipments physically made to India through ** *. While the goods have been shipped to India, the transaction has been routed through ** *. In any case, the Hon'ble Designated Authority has the DGCI&S data from which it can verify the shipments made to India and at the price at which it ultimately landed in India. Based on this information, the Hon'ble Designated Authority should consider the same for the purposes of landed value.
- f. Para 53 states that "For the purposes of determination of NEP, the sale proceeds against invoice Nos. *** dated *** and *** dated *** are deemed not to have been realized as during verification they failed to provide individual realization certificates. The copies of documents claiming to be realization certificates in respect of these two shipments were filed subsequent to verification. However the Authority notes that these form a part of unverified record and therefore cannot be considered". As per the DGAD requests, Mitsui has submitted these records (bank statements) along with the verification documents submitted at the time of on-site verification which is part of the Verification documents, and these documents clearly indicate the party and date of clearance and are identical to all the rest of the records they reviewed during the verification process. We reiterate our submissions made to the comments to the verification report filed with the office of the Hon'ble Designated Authority.
- g. In spite DGAD verifying the data filed and conducting on-site verification, the DGAD has self-calculated the dumping margin which is clearly erroneous and inflated. Mitsui clearly submits that they are not dumping the said product to India. Mitsui supports the submissions made by PTT Phenol Co. Limited on start-up cost adjustment and pleads the Authority to calculate the normal value after giving effect to the start-up cost adjustment

in consonance with provisions of Article 2.2.1.1 of the AD Agreement. If the DGAD allow the start-up adjustment on cost as per the law, it would have been abundantly clear that Mitsui are neither dumping the product nor injuring the Applicant.

- h. It is highly irregular and unclear as to how the dumping margin of the 'Mitsui Chemical Inc. > Mitsui & Co., Limited > Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Limited > Indian customer' link has shown a whopping increase. It is incumbent upon the Authority to provide reasonable basis for the calculations.
- i. The Hon'ble Designated Authority has considered providing 22% return on capital employed while calculating the Return on Capital Employed. In this behalf the Hon'ble Designated Authority should consider the judgment passed by the CESTAT in Indian Spinners Association vs. Designated Authority reported in 2004 (170) ELT 144 should consider the same based upon historical profitability and adopt the same. The Hon'ble Supreme Court in Reliance Industries Limited vs Designated Authority 2006 (202) ELT 23 (SC), held that the injury has to be worked out for the "domestic industry as a whole". The selective participation and constitution of the Domestic Industry clearly shows the intention of the Petitioner i.e. HOCL which culminates from the transparency of divulging the true affairs of the affected industry as a whole. The absence of the other producer i.e. Schenectady Herdillia Limited is limited to supporting the Petitioner without providing its data to the Hon'ble Designated Authority in view of its impressive operations is clear indication of the affairs of the Domestic Industry as a whole.
- j. It is also requested that the Hon'ble Designated Authority should re-verify the calculation of the injury margin. Based on the market intelligence, the landed costs of the interested parties is much higher as compared to other cooperating exporter from Thailand. In view of the same, the injury margin, if any, should be lowest for the interested parties and accordingly the anti-dumping duty should be recommended if any.
- k. It is submitted that as per the calculations received from the Authority, the landed value of imports made on behalf of Mitsui Chemical Inc. is extremely high. In fact, the landed value of exports made on behalf of Mitsui Chemicals Inc. is higher than landed value of exports made on behalf of PTT Phenol Co. Limited. It is extremely ambiguous why the injury margin, which is a comparison of landed value and non injurious price of Petitioner, is higher for 'Mitsui Chemical Inc. > Mitsui & Co., Limited > Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Limited > Indian customer' link, despite higher landed value through this link.

Examination by the Authority

98. The Authority has examined the comments as above seeks to address each individual issue raised, as follows.

- a. The Authority has taken into consideration all the submissions made by all the interested parties during the course of investigation and considered and addressed the same adequately before issue of the Disclosure statement. In case any specific issue has not been addressed, the onus is on the interested party to point out the same. However no specific issue has been highlighted which, according to them, the Authority has not addressed before issue of the disclosure statement.
- b. Injury margin is calculated as the difference between the NIP of DI and LP of the Exporter. Calculations for working of LP have been provided to them. Further the

methodology for determination of NIP has elaborately been explained. It has further been clearly explained in the disclosure statement that NIP has been worked out on a monthly basis at par with the LP, NEP and NV for a fair comparison. Therefore these comments are uncalled for.

- c. It is not the practice of the Authority to place DGCI&S data in public domain considering the fact that Transaction by Transaction data available with the Authority contains confidential information with regard to importers and exporters. However, the Authority makes available such data on demand by withholding only the confidential part of the information. Moreover, the details have already been provided in the volume analysis.
- d. In this context the Authority refers to the e-mail exchange with the legal representative of the responding exporter when they were asked to quote the relevant provision of AD Rules which was violated in the instant case. The said legal counsel vide the e-mail response had referred to Rule 6 of Ad Rules. While concluding his arguments the legal representative stated as under:

In terms of the aforesaid Rule, the term "adequate information" relates to the data concerning dumping, injury and the causal link which has been considered sufficiently adequate and accurate based on which the investigation has been initiated for the Period of Investigation. The Period of Investigation is October 08 to June 09, therefore the adequate information to this extent has not been furnished to the interested parties as stated under Rule 6(2) reproduced above.

In light of the same, the Hon'ble Designated Authority should provide the interested parties access to all non-confidential information which formed the basis of the initiation including the additional information for the new extended period of investigation i.e. April to June 09.

In other words (a) the information which forms part of the initiation remains inaccessible to the interested parties; (b) extended data which forms part of the Period of Investigation cannot be kept confidential, therefore the analysis of both dumping and injury remains deficient; (c) the Hon'ble Designated Authority cannot request the interested parties to file the data for the Period of Investigation when the Petitioners themselves have not provided this data which has been considered in the new Period of Investigation as accurate and adequate.

The requisite information was subsequently provided to all the interested parties. Therefore the matter ends there. However for the sake of clarity and transparency, the Authority seeks to bring it to the notice of all concerned that while submitting the petition the DI had sought initiation of investigation based upon the 6 months investigation period. The Authority examined the same and was convinced that *prima facie*, dumping is established, so is the injury to the Domestic Industry as also the causal link between the two. The Authority was however of the view that for final determination, 6 months may be too short a period and prescribed a period of 9 months, by specifying a revised POI, extending the same by another three months. The analysis of revised POI is made in PF document, Disclosure statement as also the FF document being issued now. The Authority re-iterates that there has been no violation of Rule 6, as contended by the interested party above.

- e. The details have been adequately addressed in the Verification report as also in disclosure statement and need no further detailing.
- f. Their submissions on this score have been accepted and suitably addressed in these final findings.
- g. The details of not-allowing any adjustments on startup cost have been addressed in detail in the disclosure statement and need no further detailing.
- h. Calculation sheets of NEP have already been provided to them and therefore the allegation is vague and uncalled for. They are privy to NEP and calculations for the same have been provided to them.
- i. Return on investment has been allowed as per consistent practice followed by the Authority in all cases. There is no selective participation. The Authority fulfilled its obligation to seek details from the supporter who however only sought to support the petition without providing data. Further the Authority has conducted the investigation based upon data provided by the Domestic industry within the scope of AD Rules.
- j. Needs no comments as the Authority need not rely upon market intelligence when the verified data submitted by the responding exporters is available.
- k. They may refer to determination of month to month DM and IM as was requested by them and accepted by the Authority considering huge price variation in inputs on month to month basis during POI and adequately explained in the disclosure statement.

Comments of Mitsui Chemical Inc Japan

99. This producer, who had participated in the investigation by providing data on Cost of production and domestic sale in Japan and had made no direct export sales to India, has made following comments to the disclosure statement.

- a. It is reiterated that the normal value for the producer ought to be determined on the basis of the spot prices but not on the basis of the contract prices.
- b. In the disclosure statement, it has been mentioned that as no response was filed by the trader M/s Haresh Petrochem Singapore Pte Ltd., determination of individual dumping margin for the chain comprising of M/s Mitsui Chemicals Inc (MCI), Mitsui & Co. Ltd., Japan (MBK), Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd., Singapore was not made. It is submitted that the methodology adopted in this case is contrary to the practice followed by the Authority in FDY from Indonesia, Korea, Malaysia and Taiwan and Polypropylene from Oman, Saudi Arabia and Singapore where under the similar circumstances, the individual dumping margin for the cooperative producer-exporter chain was determined even when one of the trader has not submitted any response. The producer also does not find any reason as to why the individual dumping margin for the cooperative producer-exporter chain can be denied in the present case. The producer, therefore, requests the Hon'ble Authority for the determination of individual dumping margin for cooperative producer-exporter chain as mentioned above.
- c. It is submitted that there is no analysis in the disclosure statement with respect to increase in the cost of sales due to increase in fixed cost and low production. There is also no analysis for the analysis of the fact of global meltdown as a cause of injury to the domestic industry. We request the Authority to kindly analyze these factors in the final

findings. There is also no analysis of the fact that the imports from countries already attracting ADD are almost 75% in POI which is more than imports from subject countries. We request the Authority to kindly analyze this factor in the final findings.

- d. There is no analysis of the market share of the other domestic producer as the same has increased over the injury investigation period. It clearly indicates that the decline in the market share of the domestic industry is due to the fact that the same has been taken over by the other domestic producer but not because of the dumped imports.
- e. It is submitted that the volume related figures of the domestic industry and of the supporting producer have been kept confidential whereas the same have been invariably disclosed in various other investigations.
- f. It has been mentioned in the disclosure statement that the landed value for the subject goods has been determined by adding 1% landing charge for determination of Basic Customs Duty and then adding this Basic Customs Duty to the export / CIF prices from the subject countries. It is submitted that while computing the landed value, the Custom Education Cess (CEC) has not been considered whereas CEC is also a part of the Basic Custom Duty and therefore, ought to be included in the landed value.

Examination by the Authority

100. The Authority has examined the comments as above seeks to address each individual issue raised, as follows

- a. Normal value has been determined by taking the actual domestic selling price as indicated in the response, which is consistent with the practice followed by the Authority. Further all the adjustments have been allowed as claimed.
- b. The submissions on this score have been accepted and suitably addressed in this FF document.
- c & d Injury analysis within the requisite parameters as prescribed in AD Rules has been carried out.
- e. The information on production, capacity and capacity utilization has already been disclosed. The sale volumes have been declared in a proper indexed format.
- f. It is confirmed that education cess has been included for landed value calculations

Comments Sumitomo Corporation

101. They have claimed that they were not allowed reasonable time to submit the comments to Disclosure statement. That apart they have sought individual dumping margin and their comments to the Disclosure statement can be summed up as follows

- i. Rule 17(3) requires DGAD to determine an individual dumping margin for every known 'exporter'
- ii. Export price can be the price in a sale to India or in a sale for exportation to India
- iii. Normal value determined for Japan is illegal as domestic sales reported by Sumitomo have been ignored

- iv. Sumitomo who has fully cooperated with DGAD shall not be clubbed together with other 'non-cooperating' exporters
- v. Action of DGAD is not consistent with the past practices of DGAD

Examination by the Authority

102. The Authority takes note of above comments. It is denied that they were not given a reasonable time for providing to the Disclosure statement. Further it is concluded that it is the normal practice of the Authority to consider the export price of a co-operating exporter provided the complete chain is available and all the exporters / traders either respond or provide the data so that final value at which the goods landed in India can be determined. The calculation will start backwards from this landed value for determination of Net Export Price for comparison with Normal value and that of Landed Price with NIP, for determination of Dumping Margin and Injury Margin respectively. The Authority does not force the exporters to deal through agents or traders. It is the Business decision of each company. As already detailed in the disclosure statement, Sumitomo did not export to India directly but through a trader. The trader did not respond, nor did Sumitomo provide the details as to at what price the ultimate trader sold the PUC in India. In fact Sumitomo has also been acting as a trader and not a manufacturer. In such a case where the complete chain is not available, the onus is on the responding interested party to provide details so as to enable the Authority consider the same for individual determination. The submissions of Sumitomo therefore are without basis. As regards illegal Normal value, the subject interested party has used an uncalled for terminology. Further Sumitomo has sold in the domestic market after buying it from producers and the Authority has consistently followed the Rationale of going back to producer to determine the normal value and not to an exporter, so long as he is not stand alone and this rationale has been followed in the present case as well. In the earlier case of Sumitomo, of import of Acetone from Chinese Taipei etc. the Authority was required to determine country wise Normal Value. In the light of Amendment in the Act prescribing Individual Normal Value for all exporters, the same has to be worked out at the producer level as already been explained above, which in the instant case cannot be done as Mitsubishi failed to provide the data. Regarding Landed Price, the same has been calculated after taking into account the education Cess.

Recommendations

103. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspect of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted an investigation into dumping, injury and causal links between dumping and injury to the domestic industry in terms of the Rules laid down and having established positive dumping margin as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of final duty is required to offset dumping and injury pending completion of the investigation. Therefore, the Authority considers it necessary and recommends imposition of final anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject countries in the form and manner described hereunder.

104. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, antidumping duty equal to the amount indicated in Col 8 of the table below to be imposed from the date of imposition of provisional duties, on all imports of subject goods originating in or exported from subject countries.

Duty Table

S.No	Sub Heading Of Tariff item	Description of Goods	Country Of Origin	Country Of Export	Producer	Exporter	Duty Amount	Unit Measure	Currency
1.	2.	3	4	5.	6.	7.	8.	9.	10.
1.	2907.1110 and 2707.9900	PHENOL	Thailand	Thailand	M/s PTT Phenol Company Limited, Thailand	M/s PTT Phenol Company Limited, Thailand / M/s PTT Public Company Ltd.	10.03	MT.	USD
2.	Do	Do	Thailand	Thailand	M/s PTT Phenol Company Limited, Thailand	Mitsui & Co. Ltd., Japan (MBK) OR Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd., Singapore	Nil	MT.	USD
3.	Do	Do	Thailand	Thailand	Any combination other than at Sl. no. 1, and 2 above		172.53	MT	USD
4.	Do	Do	Thailand	Any other than Singapore, USA, South Africa, EU, Korea RP, Japan	Any	Any	172.53	MT.	USD
5.	Do	Do	Any other than Singapore, USA, South Africa, EU, Korea RP, Japan	Thailand	Any	Any	172.53	MT.	USD
6.	Do	Do	Japan	Japan	M/s Mitsui Chemical Inc., Japan (MCI)	Mitsui & Co. Ltd., Japan (MBK) OR Mitsui & Co. (Asia Pacific) Pte. Ltd., Singapore	468.17	MT.	USD

7.	Do	Do	Japan	Japan	Any combination other than at Sl. no. 6 above		547.03	MT	USD
8.	Do	Do	Japan	Any other than Singapore, USA, South Africa, EU, Korea RP, Thailand	Any	Any	547.03	MT.	USD
9.	Do	Do	Any other than Singapore, USA, South Africa, EU, Korea RP, Thailand	Japan	Any	Any	547.03	MT.	USD

105. Subject to the above the provisional findings, notified vide notification dated 3rd February, 2010, are hereby confirmed

Further Procedures

106. An appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

107. The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measure as recommended herein from time to time as per the relevant provisions of the Act and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party as per the time limit stipulated for this purpose.

P. K. CHAUDHERY, Designated Authority